श्रीः॥

बिबाहाबिडम्बन नाटक॥

जिसको
बाबू तोताराम वकील हाइकोर्ट
पश्चिमोत्तरदेश अलीगढ़ ने
बनाया

और
द्वितीय वार संशोधन किया

"भारतबन्धु" यन्त्रालय अलीगढ़ में मुद्रित हुआ

VIVAH VIDUMBAN NATAKA.

BY

BABU TOTA RAM VARMA
VAKIL HIGH COURT N.-W. P.

2ND EDITION, 1000 Copies
Price per copy Re. 1

द्वितीयवार १००० पुस्तक
मूल्य प्रतिपुस्तक १)

विवाह विडंवन नाटक ॥

नाटक के प्रारम्भ में उन संकेतों का अर्थ लिखना अवश्य है जो प्रायः उसमें काम आते हैं इस हेतु कुछ संकेतों के अर्थ नीचे लिखे जाते हैं।

रंग शाला—नाटक खेलने के स्थान को कहते हैं।

नाटकपात्र—उनको कहते हैं जो रंगशाला में आकर खेलकरते हैं।

नेपथ्य—उस स्थान को कहते हैं जहां से नाटक पात्र निकल कर रंग शाला में आते हैं।

अपने आप वा स्वगत—इसके लिखने से यह अभिप्राय है कि नाटक पात्र ने जो कुछ कहा वह किसी की ओर देखकर नहीं कहा तथापि सबने उस कहने को सुना

प्रकट—सब के सामने मुख खोल कर जब नाटक पात्र कुछ कहता है तब यह शब्द लिखा जाता है

अंक—नाटक के कवि कल्पित प्रत्येक खंड को कहते हैं

— यह चिन्ह बात कहते२ रुक जानेका है और बात कहते में पात्र का सकुच वस चुप हो रहना भी इस से सूचित होता है बातके पूर्ण होजाने पर वा दूसरे के रोकदेने पर भी यह चिन्ह आता है।

! यह चिन्ह आश्चर्य—प्रसन्नता—भय—वा सोच आदि मन की बृत्ति का है।

स्थान-वह मन्दिर भवन वा नगर आदि है जिससे खेल सम्बन्ध रखता है जहां पर जो बात वास्तव में हुई थी रंगसाला में खेल के समय उसी प्रकार का स्थान रचकर वही बात दिखाते हैं।

जवनिका-उस परदे का नाम है जो रंग भूमि वा रंगशाला के आगें लगा रहता है।

विवाह विडम्बन नाटक ॥

नाटक पात्र ॥

(स्थान काशीपुर) कन्यापक्ष	(स्थान मथुरा) वर पक्ष
रतनलाल—कन्या का पिता	रामगोपाल—वरका पिता
नारायण, जयदेव } उसके पुत्र	राधावल्लभ—उसका पुत्र
जसवंती—उसकी स्त्री	रामदेयी—उसकी स्त्री
रेवती—उसकी पुत्री	
विद्यासागर—पंडित	काशीनाथ पंडित
चिंतामणि—पुरोहित	सेढमल—पुरोहित
पीतंवर—उसका चचा	पार्वती—पुरोहितानी
सोनपाल—उसका भाई	धनपतिराय—रामपुर का सेठ
सामंता—नाई	नवला—नाई
रमला—टहलनी	कमला—टहलनी

और वहुत से नातेदार स्त्री पुरुष घराती वराती नौकर आदि

श्री

विवाह विडम्वन नाटक ॥

नान्दी

स्त्री पुंसयोः स्यात्सुखदा । सुनापित पुरोधसोः ॥
सोद्वाहलीलाकर्तव्या । दर्शनान्मोददायका ॥
जन्मतही वरनी वरद नापित प्रोहित प्राण ।
सो विवाह लीला करो सकल सभा कल्याण ॥

सूत्रधार–(चारों ओर देखकर) आज हम यह नहीं जानते थे कि इतने महाशय हमारे ऊपर कृपा करेंगे नहीं हम किसी बड़े नाटकका अभिनय करनेका साजसजा रखते परन्तु फिर भी चलो नटीको बुलाकर पूछें कि किसी उत्तम नाटक के अभिनय का प्रयत्न होसक्ता है वा नहीं (दौड़कर नटी को बुलाता है)

नटी (हंसकर) कहो आज क्या रचना रचने का विचार है और दिनसे अधिक दोड़ते क्यों फिरते हो ॥

सूत्र०–इस सुजन समाज की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं है। इनका अमूल्य समय बृथा व्यतीत होरहा है तुम को शीघ्र कुछ प्रारंभ करना चाहिये ॥

नटी—जो आपकी आज्ञा। और इन महाशयों की अनुमति

सूत्र०—देखो हम भली भांति जानते हैं कि इस सभामें जो महाशय विद्यमान हैं उन्हों ने अनेक नवीन और प्राचीन नाटक देखे होंगे इस हेतु ऐसे नाटक का अभिनय करना जिससे हमारा तुम्हारा उपहास न हो

नटी—जीवन प्राण भली भांति विश्वास रक्खो कि आज हम इस सभा के आगे ऐसा खेल कर दिखावेंगे कि हम तुमहीं नहीं वरन हमारा सब देश उपहास से बचैगा और यहां से ये महाशय उठते ही भूल जांय ते हमारा तुम्हारा कुछ दोष नहीं ॥

सूत्र—तुम आप चतुर हो—हमारे कहने की क्या अपेक्षा है परन्तु विलम्ब न करो ॥

नटी—जयदेवी तुम्हारी वहनि अब तक नहीं आई मैं अकेली क्या क्या करूं ॥

सूत्र०—तुम कहो जिसको तुम्हारे संग भेजदूं या मैं चलूं परन्तु सभा के लोग हमारे तुम्हारे दोनों के चले जाने से वेठेर अकुला जावेंगे ॥

नटी—अच्छा मैंही जाती हूं (ठिठक कर याद करती हुई) हें कलदेव सो जावेंगे। तुम जानो तुम्हारा खेल जाने

मैं तो जाती हूं. आजही सगाई भेजनी है—तुमभी आओ तुम्हें मेरी सोगंद ॥

सूत्र—हें हें क्या करती हो२ कहता हुआ नटीके पीछें वाहर जाता है ॥

इति प्रस्तावना ॥

प्रथम अंक ॥

(स्थान काशी पर मकान के आगे)

रतनलाल प्रदेश से अपने घरमें प्रवेश करता है और जसमंती उसके सन्मुख आती है ॥

रतनलाल (हँसकर) कहो अच्छी तरह से हो ॥

जसमंती (सीसनवा कर) भली दिखाई दी—तुंमतो सामन लगते ही आने कहगये थे ॥

रतन०—परदेश जाकर जल्दी लौट आना सुगम नहीं है अनेक धंधे लगजाते हैं—घर बैठे जो कहो सो कहलो ॥

जस० यह तो ठीक है पर तुमारे विना यहां पर घर सूना२ मालूम होता है ॥

रत० परदेश में जीतो हमारा भी नहीं लगता था रात

दिन तुमारी याद आती थी पर कुछ वसकी वात नहीं थी तुमजानों जीवसे प्यारी जीविका है

जस॰ हमारी याद तो तुम्हें क्या आती होगी तुमको तो रुजगार प्यारा है घर के आदमी प्यारे नहीं हैं ऐसे हीं पारसाल चले गये सो आठमहीने में वगदे किसी एक आध दिन की तो हम कहते नहीं नहीं रोज सपने में देखे हो

रतन॰ रुजगार के पीछे घर वार सव है वाहर से कमालाते हैं तव घर वैठकर खाते हैं मन तो यहीं पडारहता है पर करें कैसी

जस॰ तुम्हारे पीछे कुछ दुःख तो हमें है नहीं पर यह रेवती अव तीसरी में पड़गई इसके व्याहकी चिंता तो हमें है ॥

रतन॰ अव हम परदेश से घर आगये हैं जो कहोगी सो करेंगें धीरज वांधो कुछ रेवती वड़ी तो हो नहीं गई है

जस॰ वड़ी कैसे नहीं होगई है। अभी चिन्ता होगी तव वर्ष छः महीने में विध मिलैगी ॥

रत॰ हम पर अभी सम्वाई नहीं है इस साल कुछ रुपेका ठीक ठाक करलें तव तो हम कुछ करें धरेंगे ॥

जस० पैसे लुटाने के लिये सम्वाई है व्याह काज के लिये तुम्हें सम्बाई कहां से आई तुम्हें तो लोग हँसाई की टेव पड़गई है। ऐसें ही जयदेवी के व्याह में सव घर होटो से चोगो भयो। और तुमने सो जब सातवीं विताय दीनी तव व्याह कीनो ॥

रत० रेवती की मा ये सगाई संवन्ध हैं ऐसे ही धीरज से होते हैं हथेली पर सरसों मत जमाओ। घर बाहर के किसो से पूछभी लेने दो ॥

जस० पूछो चाहे मत पूछोमें तो अपनी को फागुन में व्याह करुंगी पूछवेको कोनहै। रंगीके चाचा हैं सो अपने मतलव में हुश्यार हैं अपनी छोरी का सव कहत रहे पांचवी में करि व्याह दूर भये। हमारी वेरको सौ सौ मीनमेप निकालेंगे। छोटे भय्या सो तुम्हारे यह चाहते ही हैं कि हम विरादरी में बात करने लायक न रहैं नगरिया वारी और चंन्देरी बारी ऐसी नहीं है जो उन्हें कुछ करने देंगी ॥

रत० तुम पर ऐसी ही ओछी बातें रहती हैं तुमको घरकों का भरोसा नहीं है तो न सही फिर क्या नातेदार भी कहीं जाते रहे ॥

जस० नातेदार घरसे नगदी देनेको तो आवत नाहें तुम्हें व्याह

करना होय करो न करना होय जानदो मैंने तो यह सोच राखी हैं कि चाहें रांग की कील भी मेरे पास न रहै पर मैं तो व्याह किये विना न मानूंगी ॥

रतं० अच्छा इतना झगड़ा क्यों करती हो कल नाई और पुरोहित को वुलावेंगे तव—

जस० वुलाचुके कहोगे सौ सौ करोगे एक भी नहीं हमारी कही तो आज तक न करी न हम जाने (जसमंती मुख मरोर घरके भीतर जाती है और रतनलाल वाहिर जाता है)

स्थान रतनलाल की पौली ॥

चिन्तामनि पुरोहित और सामन्ता नाई प्रवेश करते हैं

सामन्ता (पुरोहितजी को पालागन करकें)—कहो राजी खुसी हो क्या आज आप को भी लालाने वुलाया है

चिन्तामनि पुरोहित—हां भय्या चिरंजीव रहे एक लड़का मोहि जाकें वुलालाया है ॥

सा० महाराज वुलाये तो आज हमहू हैं। देखो मालूम पड़े क्यों वुलाये हैं मैं तो जानू सगाई के मध्ये कुछ कहें सुनेंगे ॥

चिन्ता०—हांमालूम तो हमें भी यही पड़ती है। पिछले अठवारे की वात है घरमें से गोविन्दा की मा यहां

आई ही रेवती की अम्मा ने रेवती की सगाई के लिये बहुत कही सुनी ही ॥

सा०—हां यह आधी भादों की बातहै । जब तुम्हारी प्रोहि तानी भीतर से टेवालेगई हीं और हम तुम नदीपार लड़का देखने गये हे ।

चिन्ता०—अब कहो कहीं और चलोगे । या जो घर देखि आये हो उन्ही में से एक घरकी ठहरावें ॥

सा०—महाराज हमारे तो चलतेर पांय घिस गये अब तुम जानो तुम्हारो काम जाने ॥

चिन्ता०—अच्छा तो कोन से घरकी कहैं । पहलें आपस में तो सलाह करलो ॥

सा०—प्रोहित जी घरतो चंदौसी का अच्छा है ॥

चिन्ता०—अच्छा सब कुछ है पर हमारे तुम्हारे किस काम का बहुत बड़े घरको मत पचौ नहीं फूटी कोड़ी हाथ न लगैगी । देखो उनने जिनकी तुम कहरहे हो मारे घमंड के रोटी तक आदर से न दीनी । किसी ऐसे कों ढूंढो जिसै व्याह की चाह हो ॥

सा—० आदमी तो मथुरा के अच्छे हैं । देखो वा दिन हमारो तुम्हारो कितनो आदर कीनो । इतनी खीर मेरे आगे परोस दीनी कि में आप से क्या कहूं ॥

चिन्ता०—मुन्ना ऐसोंही से कुछ काम निकलेगा लो तुम जब नाई के हुक्का पीने गये हे । उन्हों ने आप मुझसे कही कि महाराज जो चाहो सो भेट करूं परन्तु जैसे बने तैसे मेरे लड़के की भंवारिश्रां डलवाश्रदो ॥

सा०—महाराज मेंने आपसे कही नाहीं भीतर से नायिन मेरे पास यही खबरि लाश्रीही । वा घरी तो मेंने ऊपर के मनसे नाहीं करदीनी ही परि अब जैसे आपकी सलाह होगी सो करेंगे । करज हमपरहू महाराज है गयो है श्राही व्याहकी ओर दे ा रहे हैं ॥

चिन्ता०—लाला तुम्हारी तो तुम जानो मैं तो यह सोच रक्खी है कि महीना दो महीना जो या सगाई में फिरनो पड़ैगो और सब काम काज वंद रहैगो यह सब याही में से निकारेंगे और नेगमें जो मिलैगो वह तो तुमहू जानते हो और मैंहूं जानूं हूं ॥

सा०—यह तो ठीक है । न तुम्हारे कुछ और खेती न मेरें मोहि यह सकुच सी लगै है कि लड़का रंगको अच्छो नहीं है । और पांथ वाके पंगे हैं आंख हू कछु फिरी भईसी हैं । एसो नहो कि कहीं पीछैं फजीतो होय ॥

चिन्ता०—रंग और रूप देखने घरको तो कोई जायही नहीं है देखने वारे हैं तो हम है नहीं हैं तो हम हैं । चव

राने की कोई बात नहीं है कोई चढ़ी बरात तो लौटा य न देगो या उमर में सैकड़ो सगाई करडालीं अपने मतलब से मतलब कोई पीछें बकाकरो ॥

सां०—प्रोहित जी इसको क्या करेंगे विधिभी अच्छी नहीं मिलती लड़की मंगली है । और लड़का मंगली है नहीं ॥

चिन्ता०—न सही लड़का मंगली मंगली होनेमें कितनी देरलगै है लड़की को जन्म पत्र लिये चलिये आगें मैंने जानी देखतो तेरे पास लड़का लड़की के टूवा की नक़लहै ॥

सा०—(पागमें हाथ डालकर) अरे मैंतो जानू घर रहगई । दौड़कर ले आऊं ॥

(ने पथ्य में)

रेवती का जन्म पत्र देख रखना में लौटकर अभी आता हूं (दोनों कान लगाकर) हमतो जाने रेवती के चाचा बाहर आते हैं । सामन्ता वढ़कर देखतो (सामन्ता झांककर देखता है हां आये आये) ॥

रत०—(आगे आकर) कहो पुरोहितजी अब के कहां२ रहे ॥

चिन्ता०—हमसे आप पूछते हैं कहां रहे अपनी कहिये तीन चार महीने से नित फिर२ जाते हैं आज दर्शन हुए हैं अब के दिसावर में बहुत दिन लगाये ॥

रत०—दिसावर में क्या वहुत दिन लगाये काम काज के कारण मेरा घर आना नहीं हुआ आप जानते हैं पैदा किस पर छोड़ी जाती है ॥

चिन्ता०—हां महाराज सत्य है इसीके पीछें सव कुछ है ॥

रत०—(सामन्ता की ओर देखकर) क्यों भाई रेवती की सगाई की कुछ चिन्ता की हमारें तो घरमें पीछे पड़ रही हैं और देख में तुझसे जव ही कह गयाथा। न तूने कुछ आप फिकिर की न प्रोहितजी से कही ॥

सा०—मेरा दोष तो कुछ है नहीं पुरोहितजी को पूछलो। तुमसे पीछे जमुना पार तक हो आये हैं घर अच्छा मिलता है तो लड़का अच्छा नहीं मिलता और लड़का मिलता है तो घर नहीं मिलता ॥

रत०—तुम धामपुर भी गये थे। हमसे वांसवरेली में किसी ने कहा था कि वहां एक लड़का अच्छा है ॥

साम०—तीनवार तो धामपुर जाचुके हैं अव कहो फिर चले जांय ॥

चिन्ता०—धामपुर वालों का और आपका मेल नहीं है। वहां तो नाम वड़े और दर्शन थोडे। यह वात है ॥

रत०—पुरोहितजी हमभी आपकी कृपा से दिन काटते हैं कुछ करने धरने के योग्य नहीं हैं तुम कोई अच्छे कुलका गरीबसा टटोल लो तो अच्छा ॥

चिन्ता० जिजमान ! तुम ऐसी मत कहो ! अभी गंगा यमुना के बीचमें तुमसा कर्तवीला मैं किसी को नहीं समझता ! परन्तु यह कहो कि मुख पर तारीफ करना आज कल चापलोसी समझी जाती है ॥

साम० महाराज इस देहरी पर तो आया है सो उलटे हाथ जोड करही गया है अब तक तो भगवान् ने अच्छी निवाह दीनी है आगे जो कुछ होगी सो देखी जायगी

चिन्ता० सामन्ता अब तुझको जो कुछ कहना है सो कहले फिर सब अपने२ धंधेमें लगेंगे ! जहांकी ठीक पड़े वहां जाकर सगाई करआवें ॥

साम० (पुरोहितजी की ओर आंख मारकर) पुरोहितजी महाराज हमारी पूछो तो आज दिन जो घर मथुरा वालोंका है वैसा तो मिलना कठिन है ॥

रत० भाई तुम्हीं दोनों सोचलो ! यों तो जूरी बलवान् है परन्तु आज दिन तो घर और बर दोनों देखलो आगे लडकी के भाग्य रहे ॥

चिन्ता० जिजमान और हम तो जानते नहीं जहां हम सगाई करने की कहैं उसे दस भैय्यों का भय्या देखलो रोटी कपड़ा से खुश देखलो गोरा चिट्टा अच्छा पढ़ा लिखा

लड़का देखलो नेपथ्य में (चाचाजी से क्या कहि आऊं) तीनों कान लगाकर सुनते हैं और जयदेव चाचा२ कहता हुआ बाहर आता है ॥

चाचा तुमको अम्मा वुलावै है ॥

रतन० कहदे बातें कर रहे हैं थोडी देरमें आवेंगे । तुझको कुछ कह भेजा हो सो कह दे (लड़का रतनलाल के अंग से लिपटता है और वह उसको गोदमें लेता है ॥

चिन्ता० बेटा कहते क्यों नहीं भूलतो नहीं गये जाउ भूलि गये हो तो भीतर पूछिआओ ॥

जय० यों कहभेजी है कि चाचा जीजी की सगाई करि आओ–टेवा की नकल न हो तो मैं भेजदूं पर आज ही सामन्ता को भेजो ॥

सा० अच्छा कुंवरजी कहदो जांयगे ! वहीं बातें कररहे हैं

जय० चाचा अम्मा ने यह कहदीनी है लडिका के मा होगी तब हम सगाई करेंगे और यों कही है काले कोसों मत दे आना (उठकर भीतर को भागता है)॥

रत० (प्रोहित और नाई की ओर देखकर) भीतर से जो कहावत आई सो तो तुमने सुनलीनी । अब ऐसा मत करना कि पीछे अपनी और हमारी सब की आफत वुलवाओ ॥

चिन्ता०- साम० महाराज आप के कहने की बात है बच्चपन से हमने आपका नोन पानी खाया है। भला कहीं घर में घटियाही होती है। ऐसा घर और बर ढूंढकर आवैं कि दस आदमी कहैं हां कोई घर है ॥

रत० तो तुम जाउमें अभी यहां पन्द्रह बीस दिन हूं—जब तुम लड़का देख आओगे तब सब व्याह की बातें करलेंगे ॥

चिन्ता०—सा०जो आज्ञाजो घर आपने बतलाये हैं हम उन्हें देखकर अभी आते हैं आप सब सगाई का सामान कर रक्खें अब कुछ देर नहीं है। (दोनों जाते हैं) ॥

रत०—(स्वगत] घर बाहर के व्याह२ कर रहे हैं। हमें पूछो तो मरने का अबकाश नहीं। न जाने भगवान अबके कैसे लाज रक्खेंगे चलो दुपहर होने को आया अब तो भोजन करके बैठकको जावैंगे पौली से घर में फिर प्रवेश करता है ॥

जस०—नाई नेगी भेज आये या नहीं। पहले सें सोचते तो अब की साल व्याह भी होजाता ॥

रत०—अब क्यों घबराती हो सब होतो गया। दो चार दिन में लड़िका देखकर नाई पुरोहित आजावैं तब तुम्हें दीखे सो करना ॥

जस० न मालूम तुमने यह कहिदीनी है कि नहीं मैंने लडके से जवही कहला भेजी थी—जिस लडके की मा जीती होगी उससे तो हम व्याह करेंदगे सास मरिगई होगी तो लखपती भी हमैं नहीं चाहिये ॥

रत० सासु स्वसर किसी के सदा नहीं जीते घर और वर अच्छा होना चाहिये ॥

जस० तुम्हारी मैं सब सब मानूंगीपर यह नमांनूगी—मेरीको सास विना फिर वहां कोन है—काकी ताई विना वातही उठाय धरेंगी ॥

रत० हंसकर चलो ये वातें तो सव होगई—अव व्याह की चिन्ता करो—करना है तो रुपे पैसे निकालो अव वातों के व्याह नहीं हैं ॥

जस० मेरे पास क्या रुपये रक्खे हैं मेरे पास रुपये ही होते तो व्याह अव तक रुका रहता कवका होगया होता ॥

रत० तो मेरे पास भी तो अलग खजाना नहीं है कुछ है सो तुमसे छिपा नहीं है परन्तु इसको क्या करें पैदा थक गयी कारजों के मुंह वढ़ गये—चलो भूख लग रही है अव तो भोजन करलें पीछे जो कुछ

होगा सो देखा जावैगा (भोजन करने को बैठता है जबनिका गिरती है) ॥

स्थान मथुरा रामगोपाल की बैठक

[सामन्ता और चिन्तामनि को संग लिये नवला नाई रामगोपाल के पास आता है]

नवल ० रामगोपाल के सन्मुख जाकर और सिर झुकाकर लालाजी लडका देखने नाई और प्रोहित आए हैं छोटेलाला को बुलवाय दो ॥

रामगोपाल (पाग और ढीली धोती संभालता हुआ) कहां से किसके भेजे हुये आये हैं ॥

नवल० अब आपके आगे खडे हैं आप पूछपाछ करलें ।

राम० [हंसकर] नाऊ ठाकुर आओ यहां बैठिजाउ पांडेजी तुमभी यहां आन बैठो कोई कहार बुलाना पांडेजी को तमाखू भरिलावै (दोनों को बिठलाता है और पूछता है) कहो पांडेजी तुम्हारा मकान कहां है ॥

चिन्ता० मकान हमारा काशीपुर है हम काशीपुर वाले

रतनलालजी के भेजे हुए आये हैं हमारे जिजमान को एक लडका चाहिये ॥

राम० कै वर्षका लडका चाहिये टेवा लाये हो तो निकालो

साम० महाराज टेवा तो यह है मेरे पास है—किसी पंडित को वुलाओ वह देखले ॥

चिन्ता०सामंता अभी टेवा रहने दे औरर वातें करलें तव पीछे से टेवा भी दिखालेंगे—आप भीतर से टेवामगावें और लडका को वुलावें ॥

राम० नवला जातो भीतर से राधावल्लभ उठा हो तो वुलायला टेवा भी मांगता लाइयो—पांडेजी तुम्हारे जिजमान कैसे हैं व्याह अच्छा करेंगे ॥

चिन्ता० आपके मुंहलायक तो नहीं है पर व्याह जहां तक वनैगा अच्छा करेंगे—आप कें महाराज कुछ जमींदारी है ॥

राम० जमींदारी कुछ वहुत तो नहीं है पांच सात गांम हैं थोडा वहुत लेनदेन है भगवान रोटी कपडा दिये जाय है ॥

[निपथ्य में] पंडितजी वहुत दिनसे नहीं आये चलो आज सेठजी के होते चलो ॥

राम० [कान लगाकर और वोल पहचान कर] पांडेजी

हमारे प्रोहित सेढ़मल और पंडित काशीनाथ दोनों अकस्मात आगये नाई ठाकुर अव जन्म पत्र निकालो लडकेके जन्म पत्रकी नकल मेरे वकसमें निकल आई॥

[प्रणाम और सत्कार पूर्वक पंडित और प्रोहित बैठकर जन्म पत्र देखने लगे] ॥

काशीनाथ० महाराज अश्वनीके पहलेचरणका जन्महै लडकी का और लालाका जन्म मूल नक्षत्र का है — बिधि तो भली मिलती है लडका लडकी के वर्णका एक दोष आपडा है सो कुछ दोष की वात नहीं है क्योंकि शास्त्र में ऐसा लिखा है—नाडी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तुक्षत्रिया ॥

सांम० पंडितजी नाडी तो नहीं लगती है ॥

काशी० नाडी लगती है कि नाडी एक है ऐसा संजोग सदा थोडाही बनता है—लडका राक्षस गण है लडकी देवता गण है और वर्णका एक दोप है सो हम पहिले कह चुकेहैं ॥

राम० नाऊ ठाकुर हमारे पंडितजी जोतिष में वडे निपुन हैं ॥

चिन्ता०महाराज पंडितजी की चेष्टाही कहैं देती है फिर भी तो इन राजघरन के पंडित हैं ॥

साम० पंडितजी महाराज दोनों टेवाओं के ग्रहभी आपने देख लिये कोई मंगली तो नहीं है ॥

काशी० लडकी तो मंगली है नहीं इसकी मूर्तिमें मंगल पडा है—लड़का की हम पोथी देखकर कहेंगे ॥

साम० महाराज और पंडित तो सव मंगली वताते थे यह तो हमने आज आपही के मुखसे सुनी है ॥

काशी० किसी मूर्खके मुंहसे तुमने लडकी मंगली सुनी होगी (रामगोपाल की ओर देखकर) आज कल के लोग शास्त्र तो पढते नहीं—संसार को वैसे ही लूटते खाते हैं ॥

राम० सुनो नाऊ प्रोहित हमें पंडितजी की वात प्रमाण है—न हमें आजकल या देशमें कोई जोतिष में इतना होशयार दीखै और न हमको सांच आवे ॥

साम० चि० हां महाराज ठीकहै हमतो आपही से बुद्धिमान् पुरुषों से थोडा वहुत सुनकर याद करलेते हैं ॥

राम० विधि तो मिलजायगी—सेढ़मल पुरोहित इनसे यह पूछो व्याह कैसा करेंगें—टीके पर तो हम पांच मोहर लेंगे— और वैसाही और सामान लेंगे—लगन पर इक्यावनमोहर पांचसो एक रुपया एक घोडा और ऊंटका वोता लेंगे—और दो हजार आदिमी से कम वरात न जाएगी वल होय भाई सगाई करो न वल होय मत करो ॥

सा० जो कुछ होयगा सो देंयगे कुछ आपसे लेंगे तो नहीं हाथ जोरिके आपके आगे ठाडे होंगे—रूखी सूखी बनि पडेगी तैसी रोटी देंगे नहीं कूआपर डोल डाल देंगे ऐंच२ कर पानी पीआना और ब्याह करि घर आना—बदन तो हमारे जिजमान ने न आज तलक वदी और न अब वदें ॥

चिन्ता० नहीं महाराज आपके मुह लायक तो हमारे जिजमान हैं नहीं फिर भी ब्याह ऐसा होगा कि आप कहैं कि हां हुआ भगवान् ने आज दिन उनको भी सब कुछ देरक्खा है (सेढमल की ओर देखकर) कहांकी बात कहते हो पुरोहित सेढ़मल बराबर का जोड है ॥

सेढ़मल—क्या डर है हमारी तुम्हारी बातें किसी समय पर होंगीं ॥

साम० हम और पुरोहितजी भांग ठंडाई पी आवैं तब आवेंगे छोटेलाला को भी बुलाय रखना देखभी लैंयगे

काशी० लालाजी हम भी घर होआवैं दुपहर पीछे फिर आवेंगे ॥

राम० बहुत अच्छा परन्तु आना जरूर तुमसे काम है (चारोंजाते हैं)

राम० में जानूं नवल राधावल्लभ को तो ले आया — कहां हैं नाई पुरोहित उनको बुलालो ॥

साम० चिन्ता० लालाजी अब किसी को मत भेजो हम भी आगये और लडका भी हमने देखलिया — हम बहुत राजी हैं ॥

राम० भाई जो कुछ अच्छा बुरा है, तुम्हारे आगे है जब आओ तब की कहि जाउ ॥

साम० (मुसकराता हुआ) मैं जानूं लालाकी एक आंख दूखने आगई है भय्या नवल खोल तो देखें कब से आगई है॥

नवल० अब हालही पट्टी बांधी है बार२ खोलने में हवा लगैगी ॥

राम० दूखने क्या आई है यह आखों का बडा कच्चा है परसों धूप में खेलता रहा—न मानी जभीसे यह आंख दूखउठी है ॥

साम० (चिन्तामनि पांडे के कान में) दूखने नहीं आई मुझे कुछ और खटका है ॥

चिन्ता० बोलै मत, अब गहरे होंगे राम है — आंख में कज निकले ॥

चिन्ता० साम० — नवल छोटेलाला को खेलने दे, हमने देखलीने आगे हमें जाना है लौटकर आवेंगे तब कहते जांयगे आंख आई होगी तो जबतक अच्छी होजायगी ॥

राम० (स्वगत) देखो बना हुआ बंज बिगड़ा जाता है—किसी से आंखका हाल नेगियों ने सुन लिया (प्रकट) नवल पुरोहितजी से पूछो अब कर जांयगे सगाई या पीछैं आवैंगे ।

नवल०(रामगुपाल केकान में) अब तो कुछ कसरि खाउ तब काम बने हम सबनेतोबात बहुत छिपाई पर छिपी न ।

राम० जो तू जाने सो कहदे—हम जानेंगे ब्याहमें और पचास उठगये ।

नवल० पहले सब बातें होचुकी हैं—जबही तो सामन्ता ने हंसकर पूछा था—मुंह तो बहुत फाड़े है पर २५०रुपे मैंने आपके विना कहें कह दिये हैं ।

राम० हैं तो बहुत परन्तु जा इनसे पक्की करदे ।

नव० हां पक्की है—फागुनसुदी दोज को टीको कर जांयगे जो सामन्ता ने मुझसे कही है सो आपसे मैंने कहि दीनी ।

साम० जो हम कहिजांयगे सो तो पत्थर की लीक है, नवल से हमने फागुन में दूजकी कहि दीनी है ।

चिन्ता० क्यों भय्या नवल सब कह सुनदीनी पीछे बखेड़ा न पड़ै अब टीके की रस्म लेकर आधे फागुन आवेंगे—सामन्ता चल दस पांच कोस निकल चलैं ।

राम० नवल ये पांच रुपये राह खर्च के इनको दे दे।

साम० महाराज अब तो हुक्म है–चिन्तामनि और सामन्ता दोनों जाते हैं–जवनिका गिरती है।

स्थान रतनलालका घर ॥

चिन्तामणि और सामन्ता प्रवेश करते हैं।

चिन्ता० महाराज अशीस है, सामन्ता यहां आ तुझे बुलाते हैं (सामन्ता हाथ में लाठी लिये पाग के पेचसे जन्म पत्र निकालता हुआ भीतर आता है)

रत० सामन्ता तुम और पुरोहितजी इस बार कहां२होआये।

साम० राजा साहब आपके पाससे चलकर चंदौसी पहुंचे लडिका तो सुघड मिल्यो परन्तु घर अच्छौ न मिल्यो इस लिये वहां से चलकर वरेली गये वहां को घर तो अच्छौ हो पर लड़का उमरि में वड़ो हो दसवीं वर्ष लगी होगी इसके पीछे आंवले पहुंचे वहां सब खेल बनाऊ पायो परन्तु लड़िका की मा नहीं थी नहीं तो हम जरूर पक्की करि आवते ॥

चिन्ता० सामन्ता गंगापार के दो तीन अच्छे घर तो तैंने छोड़ दिये।

साम० छोड़ दिये समझो चाहै कुछ इस घर लायक उनमें कोन सो हो जिस गांव को तुमने नाम लीनो हो उसमें भूखे प्यासे केसे वे वख्त पर पहुंचे हे सगाई की बात चीत न करते तो रातभर भूखे पैर पीटते तुम्हे भी तो दूध बतासे न मिलते।

रत० अब यह कहो, लड़का देख आये या नहीं।

साम० महाराज, देख आये, आज दिन ऐसो घर ढूंढने पर भी न मिलैगो, आप प्रोहितजी से पूछलें।

चिन्ता० धर्मावतार लड़िकी के बड़े भागि ऐसो घर और वर विना भाग्य कहां मिलै मथुरा में रामगोपाल नाम एक बड़े रईस हैं उनकी कहा आप से बड़ाई करें, भगवान् ने आज दिन उनको सब कुछ देरक्खा है गांव है, बाग है, दुकान हैं, खत्ती हैं, मकान हैं, और कैसे साधारण स्वभाव कि मैं आपसे कहा कहूं लड़का उनका देखो तो जैसे राजाकोसो कुंवर, बडीर आखें और गोल मुह उसका कैसा सुन्दर मालूम होता है।

साम० देखो प्रोहितजी अभीसे वह लड़का कैसो चतुर है छै सात वर्षकी तो उमरि है और अपने घरको सब हिसाब किताब लिख पढ़ लेतो है, और सबसे बड़ी अच्छी यह बात है कि देखने में बहुत सुघड़ है।

रत० सामन्ता विधि मिलवायली है कुछ फरक तो नहीं है।

साम० प्रोहितजी के आगे पांच चार पंडितो ने विधि मिलाय देखी है वहुत अच्छी मिलती है, नाड़ी गन और वरन के दो चार दोष हैं सो कुछ चिन्ता की वात नहीं है छत्तीस विधि में से कोई मिलती है, कोई नहीं भी मिलती।

चिन्ता० सामन्ता व्याह की वातें भी कहदे, लडका वाले ने अभी से वडी तय्यारी पकडी है, वहुत सी चीजें तो हमारे आगे ही खरीद डालीं हमको यह वात मालूम होती है कि व्याह धूमधाम का होगा।

रत० प्रोहितजी परमेश्वर ने की तो व्याह हमभी दिलखोल कर करेंगे। हमारे यहां एक लडकी है, कन्या का भी भाग्य है।

चिन्ता० महाराज हम क्या जानते ही नहीं हैं आपके आगे रामगोपाल कितने हैं।

साम० प्रोहितजी तुम तो सोगये थे जव हमने लालाजी की वडायी वहां के नाऊ के आगें की तव सव नाऊ और नायिन चुपके होगये, काऊ पै जवाव तक न वन्यो ॥

रत॰ लाओ प्रोहितजी टेवा लडका लडकी के हमें देजाउ पंडितजी आजांय तव टीके का महूर्त निकलवा लेंगे, तुम कल होजाना घरमें भी सलाह करलें, रेवती की मा पीछैं कहैगी कि मुझसे किसीने पूछीभी न, सामन्ता तू अभी वैठारह चाची से सव हाल कह कर जाना।

चिन्ता॰ अच्छा महाराज तो कल आऊंगा (यह कह कर बाहर जाता है) और जसवंती घर से निकलकर आंगन में आती है।

रत॰ सामन्ता, ले ये आगयीं इनके आगे कह सुनाय जो तूने मुझसे कही है, पीछैं कहेंगी, हम किसी ने पूछे तक न, अवकान लगाकर सुनलो।

जस॰ सुनना तुम्हारा ही ठीक है, मेरा सुनना न सुनना वरावर है मेरे कहने से न सगाई हुई जाय न रुकी जाय, इस्से मेरे सिर न पडो, तुम जानो तुम्हारी सगाई जानें।

रत॰ हम तो इससे कहते हैं, कि पीछै कोई वात की ऊंच नीच निकल आई तो हमें घरमें भी न रहने दोगी, और वैसे तो न तुम देखि आओ न मैं देख आऊं नाई प्रोहित जाने उनको ईमान जाने सामन्ता ये

तो हमारे तेरे सिरडालने को फिरैहैं तू सब हाल कह दे पीछे इनकी इच्छा होय सगाई करैं, नहीं ये जाने इनको काम जाने ।

साम॰ आप कहते तो सच्ची हैं चाचीजू सुन न लेउ व्याह काज विना अपने घरकी सलाहके न करनो चाहिये, अवके हम तुम्हारी रेवती के लिये ऐसा घर देखि आये हैं कि तुम कहो कि कोई घर है ।

जस॰ देख आये होंगे, कुछ कर्तव देखेंगे तव तो हम कहेंगे— कहीं वही कहावत न होय, नाम वडे और दर्शन थोडे ।

रत॰ अव तुमही तो कर्तवीली हो देखेंगे रेवती के व्याह में क्यार करोगी ।

जस॰ हम क्या करने लायक हैं करोगे तुम करोगे पर इतनी में तुमसे कहेदेती हूं रेवती की सगाई में भाग-मान घर करूंगी चाहे कुछ होजाय ।

साम॰ चाचीजू मथुरा वारे वडे भागमान हैं आज कल गंगा जमुना के भीतर उनकी वरावर दूसरा तो कोई है नहीं हजारों रुपैांका व्यौहार करते हैं, और सबसे वडी वात तो यह है कि लडका वहुत सुंदर है, आंख, नाक, कान, कहीं से नहीं उतरो—देखोगी

तव कहोगी बडीर आंखें हैं गोरोरंग है, हिन्दी फारसी अंगरेजी पढ़ता है, घर तो चाहैं बहुत मिलजाते परन्तु एसो सुन्दर लडका न मिलतो, अब सोच विचार छोड दो व्याह की तय्यारी करो, मुझे हुक्म दो मैं जांउ, कल दुपहर रोटी खाकर चले हैं सो वरावर चले ही आये हैं, भूखके मारे जी घवराय रहा है, चाचीजू रोटी होगई होय तो चाररोटीतो हमें देदो (जसमंती रोटी देती है सामन्ता, लेकर जाता है)

रत० सगाईर पुकारती थीं, अब जमा पूंजी निकालो।

जस० भली वातें बनाय जानों हो, लहंगा लूगरा ओढिकर तुम घरमें बैठौ व्याह की हमने जानी।

रत० चलो हंसी तो होचुकी अब अपने घरमें सलाह करिलें जैसा करना होय वैसा ही ढंग डालें।

जस० इतनी वातती तुम मेरी सुनलीजियो रेवती को व्याह तुम्हें करनो है तो सीधें करो नहीं रहने दो,दो चार व्याह ने को नहीं हैं अकेली डार है, चाहैं घर केनु पूंछो चाहै वाहर केनु पूछौ, रेवती को व्याह तो अच्छौ ही होगो और तुम्हीं को करनो पडेगो नहीं मुझै तो ये घरकी ही न वोलने देंगी वाहर की तो पीछे कहैंगीं।

रत॰तुम्हें वाहर से लाना पडे तव जानों तुम्हारे जाने तो रुपये रूखों पर से वरसते हैं, तीन वर्षमें कोई पैसाकी वचत हुई है, यह कहो कि नाजने सव धोमने धोदिये नहीं तो पते न लगते ।

जस॰तुमतो सदा ऐसी ही कहते रहे, हमने तो एक दिन न सुनी कि आज कुछ पैदा भई हमतो पहलें हीं जाने हैं कि तुमने न हमारी कही कीनी न अव करो गे हम वकें सो क्यों वकें ।

रत॰ अभी से क्यों हायर करती हो, जो वनि पडैगा सो सव करेंगे रेवती तुम्हें प्यारी है सो हमें नहीं प्यारी, कल टेवा दिखलाय लें तव सलाह करेंगे, और कुनवा के लोगों को भी पूछेंगे, सव की सलाह पडे गी सो करेंगे ।

जस॰मैं न तुम्हारी मानू न कुनवा वालों की मानू, यह व्याह तो अपने मनको सो करूंगी ।

रत॰ जैसो दीखै वैसो करलीजियो अवतो मैं वाहर जाता हूं पंडितजी टीकेका महूर्त निकाल दें तव वैठ कर सव सलाह करलेंगे अच्छा जाता हूं (रतनलाल वाहर गया जसवंती ने घरमें प्रवेश किया)

स्थान रतनलाल का चौक ॥

रतनलाल और उसके कुटम्बी लोगों का प्रवेश ।

रत० (अपने एक बृद्ध चाचा पीतम्बर की ओर देखकर) चाचा रेवती की सगाई मथुरा के रामगोपाल के यहां होती है, आपकी क्या सलाह है ।

पीत० सलाह हमारी काहे की है लाला, अब हमारी उमरि और है, अपने भाई सोनपाल को पूछो, लडकी के नाना मामाको पूछो जो कुछ हमारी समझ में आवैगी सो हमभी कहदेंगे ।

रत० पूछने को तो सबसे पूछलेंगे परन्तु वडे वड़ो का पूछना ठीक है ।

पीत० हमें पूछोगे तो हमतो तुम्हारे भलेही की कहैंगे ॥

रत० पहले तो यह बताओ कि मथुरा सगाई करें या न करें रामगोपाल आदमी कैसे हैं ।

पीत० लाला रामगोपाल कों तो हमने अभीतक देखा नहीं, हां उनके वडे बडों को हम जानते हैं वडे बावा

उनके बद्रीनाथ, तिनके केदारनाथ भये, केदारनाथ के रामगोपाल हैं, एक व्याह में बद्रीनाथ हमने देखे हे, रामगोपाल की फूफी को व्याह हो, वरात में हम गये हे, आदमी सब अच्छे हैं व्याह अच्छा करेंगे परन्तु कुल बुरो है।

रत० कुल कैसाही हो आदमी तो अच्छे हैं।

सोनपाल० अभी से हम क्यों कहैं, रामगोपाल कों हम बहुत दिन से जाने हैं रमनपुर व्याहने गये थे देश की भीड टाललेगये अपनी धूल की और वेटीवाले की धूलकी नौवढ़ा है हमको तो वहांकी सगाई सुहाती नहीं है।

रत० अव तो भाई तुम सब वैठे हो, छ चाचा हैं तुमहो, जो कहो सो करूं नाऊ प्रोहित भेजे थे, महूर्त टीके का धरि आये हैं।

पीत० लाला, महूर्त धरि आये हैं तो अव और सलाह न होगी सगाई संवन्ध खेल नहीं है, हाल ही कुछ और हालही कुछ अदल वदल करो तो हमको मत पूछो तुम जानो तुम्हारो काम जानें।

सोन० (रतनलाल की ओर देखकर) जो वडे भाई कहते हैं सो करो हम तो उसी दिन कहैंगे अभी-

पीत॰ तुमतो लडका ठाकुर हो, लाला टीके की तयारी करो, इन वातों से काम नहीं चलें हैं ।

सोन॰ टीकेकी तैयारी तो करोगे ही परन्तु हमारे कहने से यह दिखलायलो, कि लडका की आंख में कज तो नहीं है, मैंने सुनी है, हमारी चंद्रकला की नंद, लडका की ननसार में व्याही है, वह कहती रहीथी इस लिये कोई घरकों में से जाकर देखआवे तब ठीक लगे ।

पीत॰ लाला देखने भालने की चाल हमारी विरादरी में नहीं है ये कमीनिहाई चालें हैं नाई प्रोहित टीका लेकर जांय वह फिर देखि आवें ।

रत॰ अच्छा उनसे कहदेंगे, परन्तु यह तो वताओ टीके में क्या भेजें ।

पीत॰ भय्या गृहस्थी हो ऐसा करो जो निभ जाय हमारी समझ में तो एक रुपिया और एक नारियल वहुत है, हमारी गोरा वहनि के व्याह में तुम्हारी चतुरो फूफी के व्याह में हमारी वडी दादी के आगे से यही हमारे वावा देते रहे यही अब तक हम देते आये अब तुम्हें दीखे सो तुम दो ।

सोन॰ एक थान और एक रुपिया भेजो, थान की आज कल चाल चलगई है।

रत॰ मेरी समझ में तो पांचसे कम न भेजने चाहियें, नाई पुरोहित बड़ी लम्बी चौडी बातें मारि आये हैं इतने से कम भेजने में प्रतिष्ठा नहीं है

पीत॰ समय और है, नहीं पांच कुछ बहुत नहीं हैं, अन्त निबहिजाय, ऐसा होना चाहिये, इतने ही इतने से लंक लगैगा।

रत॰ सब भगवान लाज रक्खेंगे किये बिनाभी तो नहीं बने है अब भेज देताहूं आगे जैसी सलाह होगी सो करेंगे।

(नेपथ्य में) नरायन के चाचा

रत॰ [मुखफेर कर] रमलिया क्यों आई है,

रम॰ नरायन की मा तुम्हें बुलावें हैं,

रत॰ चलआते हैं बातें कर रहे हैं।

रम॰ मोय निकसवाओ तो तेसो कहो नहीं अबही चलो।

रत॰ अच्छा ले चल तू काहेको मानेगी।

(पीतम्बर–सोनपाल की ओर देखते हुए) तो यही सलाह पक्की रही में भीतर हो आऊं,

पीत॰ सोन॰ हमभी अब जाते हैं रातको जो कुछ होगी सो और सलाह करलेंगे (दोनों जाते हैं)

रत० क्यों बुलायाथा, अभी तो यहां से मैं तुम्हें पूछकर गयाही था,

जस० तुम्हें यह सुधि है, परसों रेवती के टीके को महूर्त है, कपडा लत्ता कुछ आखिर लेउगे या न लेउगे,

रत० सौ दोसौ थान तो लेनेंही नहीं हैं. कल्लि एक पांच गज टूक मगाय नारियल और एक रुपिया दे एक ओर होंगे,

जस० बातें मतिबनाओ बातें—ऐसी दस बीस व्याहवे कों होतीं तब कहते,

रत० अब तुम्हारी मानूं या भय्या और चाचा की मानूं सबों की यही सलाह है पुन्य और प्रतिष्ठा इसमें दोनों हैं,

जस० होगी पुन्न और प्रतिष्ठा' चाचा और भय्या की का हिये माथे की जाती रहीं हैं जो ऐसीर सलाह देते हैं उनके होंगी बहुत सी व्याह ने कों—मेरे तो अकेली रेवती है—अपनीर लडिकी के व्याह में ये ज्ञान निकालते तब हम जानते—तुम उनकी मानो तो माना करो मैंने तुमसे पहले हीं कहि दी है चाहै या कान सुनों चाहें वा कान सुनों, रेवती को व्याह तो जैसे वनैगी तैसे अच्छा ही करूंगी ।

रम॰ नरायन के चाचा ऐसी कहा, वहूजी की वात तो मानिवै करो और की मानों न मानों।

रत॰ अच्छा जाने दो पांच रुपिया और एक थान भेजदूंगे अव आगे सम्बाई नहीं है।

जस॰ ये वातें तो होलीनी—पांच महुर २१ रुपिया और पांच थान एक घोडा एक ऊंट भेजो नहीं सव हंसेंगे अपनी ओर देखो लडका वाले की ओर देखो, आगे ही नहना कातलीजो, पहले ही मुहरा पर क्यों गिरे पडते हो।

रत॰ ये वातें तो सव रहने दो अव जो कुछ देना होगा सो देंगे लड़का लड़िकी के भाग हैं।

रम॰ नरायन के भाई खूव छाती खोलकर व्याह करो व्याह के लिये कंगाल मति वने जाउ सव भगवान् भली करेंगे।

रत॰ कहने में कुछ नहीं लगै जव करो तव मालूम पड़ै तुझे रोटी मिली जाती हैं इससे वातें आतीं हैं।

जस॰ चलो न जाने उससे कहो जाओ कपडा लेआओ चिकन के थान मलमल के अच्छे थान लाना मैं जव तक और चीजें संभाल लूं परि हां यह तो कहना भूल गयी—एक थार मिठाई भरनेके लिये और चाहिये

नहीं किये का नाम न होगा भूल गये का नाम होगा

रम० अव सब याद करलो फिर वखत पर कहती फिरो।

जस० इनको तो अभी आजाने दे—अभी देख—सौर बात पलटेंगे मैं आज कल और देख लूं तव कहूंगी।

रत० चौक पुरा रखना—मैं पंडितजी को बुलाने आदमी भेजता हूं और वाहर जाकर वाजार से कपडा मंगाता हूं।

स्थान रतनलाल का आंगन

टीके का सामान सब सजा हुआ रक्खा है चारों ओर आदमी आकर वैठते जाते हैं

रत० अरे सामन्ता—देख तो हरप्रसाद आये कोई बुलाने भेजा है चाचा को बुलाओ भय्या सोनपाल आगये कमलनयन को बुलाने कौन गया है।

साम० महाराज सब आरहे हैं पंडितजी पूजन करावें—जब तक सब आये—देखो ये आपने याद करे हैं सो तो आय गये—बूढ़े वावा रहे सो मैं दोडके लाऊं हूं (वाहर जाता है)

रत० (पंडित विद्यासागरजी से) महाराज पूजन कराओ—

पिरोहितानी भीतर कहो गीत होंय (स्त्रियां गीत गाती हैं)

विद्या सागर० ॐ गंगणपतये नमः शुक्लांवरधरं विष्णुंशंख चक्रचतुर्भुजं प्रसन्न वदनंध्यायेत सर्वविघ्नोपशांतये-सामन्ता एक हल्दी की गांठ लेआ—सर्वे ग्रहाशांति कराभवन्तु—लाला कलाओ आयो होय तो मगाइयो।

चिन्ता० पंडितजी कलश को पूजन कराओ—गणेश को पूजन करो यहां हमारी दक्षिणा होगी।

विद्या० [रतनलाल से] गणेशके पूजन को टका लाओ—एकदंतंमहावीर्य्यंनमोफरसपाणये सिद्धंतिसर्व्वकार्य्यां नितुमप्रसादागणेश्वरः ताम्बूलं समर्पयामी दक्षणा समर्पयामी विश्वेदेवा दाक्षिणा समर्पयामि एक टका और लाओ।

साम० पंडितजी महाराज वैसान्दुर को एक टका और लेलीजियो।

रत० (मनमें) पंडितजी को लेतेर पेट नहीं भरै है एक रुपिया के पैसा तो दाक्षिना में लेचुके (प्रकट) महाराज अब पूजन तो होगया संकल्प कराओ।

विद्या० प्रोहितजी आगें आओ—कपडा और सब सामान उठाय के लडिकी की गोदमें रक्खो।

रत० (अपने लडके नारायण को बुलाकर) जा अम्मा पर से ५ रुपे ले आउ—नारियल रह गया है वह भी लेआ ।

चिन्ता० महाराज थान बडे अव्वल हैं—कामदानी कों थान यह कितने कों लीनो हो ।

साम० लाडेका नारियल लायो है याहि सम्हारि कपडा को मोल तोल पछि करियो ।

पीत० लाला क्या भेजते हो ।

सोन० बडे भाई, दो थान मलमल के हैं—दो कामदानी के हैं एक चिकन का है—ग्यारह रुपिया और १ मुहर है और ५ रुपे खर्चके हैं ।

पीत० तुम भाई अब नयेर भये हो—जो भेजो सो थोडो— हमारी तो न चलै न कहैं ।

हरि० यह तो सम्झायी की बात है—जो वनिपडै सो अच्छा लडिकी के भागि हैं यामें वावा नांही मतिकरो ।

रत० हमारीसलाह तो पांच रुपये की थी परि वनतेर वनगयी सो ठीक । किसी लडका लडकी के भाग ही ऐसे होते है या रेवती के दृष्टांन में हम कुछभी नहीं करने को थे । होतेर पांच सौ खर्च पडे ।

साम० महाराज आपको सौ दिल होंनो कठिन है ।

कमला (अपने पास के दो चार आदमियों से) टीका

तो अच्छा दोना (दो एक और पुरुष एक दूसरे के कान में) यह हम कहे देते हैं जैसा टीका दिया है वैसा व्याह न वन पड़ैगा—इसके हिसाव से आठ दस हजार व्याह में लगावैं तब ठीक लगे।

साम० (पंडितजी से) महाराज जल्दी करो हमें पहुंचनो है आजही को महूर्त पहुंचाको है।

विद्या० वस सव होगया विश्वेदेवन को पूजन अभी एक वार और होयगो—दो तीन पैसा हाथमें लेलो।

साम० लड़की को उठाकर भीतर लेजा—छींक पात जल्दी कर प्रोहितजी यह सव सम्हार कर वांधलो (यह कह कर पंडितजी उठते हैं सव उठते हैं)

रत० (जसवंती से) लो अब तो राजी हो तुम्हारे कहने से भी पांच और वढ़ाय दिये।

जस० (मगन होकर) मेरी रेवती के भागि हैं नहीं तुम तो देते सो देते।

रम० रानी अव ये वातें मति करो—वे वात ही दोष लगाओ तो तैसी कहो

रत० अच्छा अव तुम सव चीज सम्हारो मैं वाहर जाकर नाई प्रोहित को भेज दूं फिर देर होगी यह कह कर वाहर जाता है।

थान मथुरा रामगोपाल का घर

रामदेई कमला तू कहां चली गई थी—गोबर मट्टी ले आती तो आंगन लिप जाता नेगी आते होंगे—दुपहर भीतर का महूर्त है।

कम० धीरज धरो गोबर और माटी सब आयजायँगी ये नाई वारी नेग कू तो यों आय ठाडे होंगे कछु काम काज हू करैंगे या नहीं।

नव० (चुपके से आकर) क्यों वीर नाऊ वारीनु की कहा बुराई कररही है हमने तो वीर काऊ काम की नाहीं करी नाहैं यों तू दोष देय तो देले।

राम० नवल तू इसे बकने दे यह बता अभी नेगी आये हैं या नहीं।

नव० चाची जू आते ही होंगे—नाऊ प्रोहित यह कहगये हैं कि हम एक दिन पहले आय रहैंगे पर न जाने क्यों न आये।

कम० (अपने आप) अब ही दिन तलक नाहैं निकस्यो नेगीनु की भीड़ पड़ गयी (प्रकट) डलिया फलिया होय तो लाओ कमीन तो आमने हे सो आय चुके लैवे देवे को नाऊ धीमर हैं काम करवे को कमला है

नव० तू सगुन साथ मुंह तो फुलावै मति हम अपना सब करिलैंगे तू न लीपैगी पोतेगी तो कुछ काम थोडा ही पडा रहैगा ।

राम० (कमला से) तू सदा कामकी दुखिया रही, खाने को ढाईसेर चाहिये काम काज बाहर के करजांय ।

कम० तुम रानी काहेको रिस होत्यो, मैंने तो नाई बारिनु सों कही है एक आंगन की कहा चली चार आंगन लीपदेंऊ बहूजी भगवान ऐसी घडी लावै– बड़े भाग समझो लाला के व्याह में काम न होयगो तो कब हो गो ।

नव० कुछ काम काज होय सो कह दीजियो फिर में आये गयेनु की सिष्टाचारी में लगजाऊंगो हरिबला की मा यहां रहैगी या कमला कूं कुआ में जानदेउ वह सब काम कर लेगी (यह कहकर बाहर जाता है)

राम० कमला तू आंगन लीप पोतकर ठीक करसैं तब तक घरकी सार सभार करलूं ।

कम० (लीपती हुई) राधावल्लभ के चाचा से बुलाय कें कह देउ बेटा को टीको आवैगो अब दिल खोलकें खर्च करें रोज़२ व्याह नाहें होत [नेपथ्य में) राधावल्लभ की मा कहां गई ।

कम॰ [गोवर मिट्टीके हाथों से भीतर दोडकर जाती है]
बहूजी राधावल्लभ के चाचा आवत हैं मेरे जान नेगी
आयगये [रामदेई वाहर आती है]

रामगोपाल का प्रवेश

राम॰ सांझ तो होचुकी नेगी आये न कोई आये तुमने हमारे
पीछे पड़कर सौ दोसौ रुपिया लगवा दीने—हम सव
वखेड़े लगन पर करने कहते थे भला नाच तमाशे
की हमारी क्या अटकी थी कुनवे वाले व्यौहारी
और रंडी भांड सव वैठे हैं न कहीं नाई है न ब्राह्मण
है जो आये हैं तिनकी खाने पीने की फिकर करें
देते हैं जव नेगी आवेंगे तव देखी जायगी।

रामदे॰ न जाने कैसे न आये कहि तो एक दिन आगे की
गये हे राह देखते२ यह खन तो होगया मैंतो जानू
रेल न मिली।

कम॰ चलत चलावत देर होगई होगी और रानी ठौर हू
दूर है अव ही पहररात गये तक तो पेंड़ो है।

राम॰ समय चुकाय कर आये तो किस कामके देखने
दिखाने के सव धंधे हैं यों टीके की रसम तो जव
आवेंगे तव ही होजायगी

रामदे॰ कहो तो तरकारी तयार करारक्खूं और सामान जब आजांयगे तब करलेंगे ।
राम॰ कोई आया न गया तबतक तुम व्यंजन बनाय लेउ एक तो हमारे सौ दो सौ में पानी दिलाय दीनो— अब रहा सहा और सत्यानाश करो व्याह वारे तो (नेपथ्य में) लालाजी भीतर खबर कर देउ नेगी आय गये ।
राम॰ अरे कोन है नवल ।
हरिवला वे नहीं हैं बावा मैंहूं हरिवला—बाबा नेगी आयगये
राम॰ अच्छा लेमें चलता हूं तू उन्हें ठहराय दे—अपने बापसे कहि तमाखू पहुंचाय दे—और लेतू हुक्का भरिला कमला तू नायन को बुलायला चौक लगवाय कर झट पट बुलाये दिलवाय दो राधावल्लभ की अम्मा तुम कड़ा ही चढ़वाओ देर न होय—मैं जाताहूं लाला का गहना लाला को पहिनाय दो देखो सब ठीक कर रक्खियो मैं आता हूं ।
रामदे॰ चलो अगाये पिछाये आये तो सही—हमें तो अब भरोसो टूट चुक्यो हो—कमला नाइन के बुलाने को तो किसी और को भेजदे तू राधावल्लभ के कपड़ा निकाल ले और ले ताला खोलकर कोठार में से सब सामान लेआ ।

कम० बहूजी तुम कहती जाउ नायन तो जब आवेगी तब देखी जायगी—एक चूल्हे पर मैं तरकारी चढ़ाये देती हूं तुम प्रोहितानी से कह देउ पूरी करिलेय (नेपथ्य में) ये तो तुम्हारे काम होते रहेंगे (कान लगाकर) रानी राधावल्लभके चाचा फिर आये हैं।

राम० चौक पुरवाय दो जल्दी जिससे वह काम होजाय यह तो होता ही रहेगा।

रामदे० पुरवाय कोन पर देंऊ कमला काम काज में लग रही है नायन अभी आई नहीं।

राम० कमलासे मैं तो जब ही नायन बुलाने को कहगया था हरिवला जातो अभी तेरी मा क्यों नहीं आई हमारे नाउओं का सा अन्धेर हमने कहीं देखा नहीं।

कम० लालाजी तुम कहोगे तब मानेंगे हमारी कही तो उन्हें बुरी लगे है।

राम० नाउन को नेगका हमारे यहांसे एक पैसा न मिलेगा—अब तक न चौक पूरा गया न बुलाये लगे—नवल तू जबसे कहां गया था।

नवल० नेगी नहीं आये हे तब तक बताओ तुमारे पास आये गये की खातिर में हो—फिर नेगी ठहराये तब से बुलाये दीये हैं अब सब लोग आय गये हैं—इन्हें

बैठारि आऊं और जाने हरिवला की मा कब तक आवे चौक भी पूर जाऊं।

राम० भय्या जो करनो है सो जल्दी करो आधीरात हो चुकी नेगी भूखे प्यासे जुदे होंगे।

नवल० आप यहां सार सभार करें मैं नेगीनु वुलाय लाऊं। सब लोग बैठे हुये हैं और नेगी आते हैं (वहुत से मनुष्य एक मुख होकर) नाऊ प्रोहित कहां देर लगाई पेंड़ो देखतर यह खन है गयो।

साम० महाराज वहां से चलत चलावत देर हेगई जाड़ेके दिन आप जाने हैं कितने होत हैं दौड़े ही आये हैं हम ने एक दिन आगे की कही ही सो कुछ सलाह न ठहरी।

चिन्ता० महाराज ठौर दूरि है हम अपने जाने चले ही आये हैं।

काशीनाथ पंडित नवला लला को पटा पर विठला दे (नवला विठलाता है और पंडित जी स्वस्त्ति वाचन पढ़ते हैं)

मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरुडध्वजं मंगलं पुण्डरीकाक्षं मंगलायतनो हरी।

चिन्ता० महाराज पण्डितजी पूजन कराओ कलश

से कलाओ बांधो अक्षत छोड़ो ।

काशी० (चांवल लोगों के हाथ में देकर)इन्द्रो देवता अग्नि देवता बृहस्पति देवता यहां हमारी दुहरी दक्षिणा चाहिये ॥ गणेश को पूजन फिर करो, एक टका हाथ में लेउ ॐगणपतयेनमः षोडशमात्रकाभ्यांनमः यहां पूजन को एक टका और चाहिये ।

राम० अब काम होने दो महाराज जितने टके तुम कहोगे सो देंगे नवला नेगियों से कहदे आगे वढ़ आवें पूजन तो हो गया ।

साम० प्रोहितजी आगे आओ, यह लेउ थान और नारियल बतासे थारमें धरिलेउ पानको बीरा में पीछेसे देदुंगा आप लड़िका के हाथ पर सब सामान धरदें ।

चिन्ता० (अंटी में से रुपे और असरफी निकालते हुए) यह तो दो थान मलमल के हैं ए दो कामदानी के हैं और चिकनका यह पाचवां थान है एक मोहर है और ग्यारह रुपे हैं—पांच रुपे खर्चके हैं ।

राम० (सब की ओर देखकर) आपने देखा ५थान हैं ११ रुपे और एक मुहर है पांच खर्च के हैं

साम० इसी में महाराज नोछावर भीतर बाहर की है ।

सब मनुष्य एक मुख होकर अच्छा टीका दिया हमने आपसे पहले ही कही थी—कि यह ब्याह अच्छा होगा ।

नवला० यह तो आपने ठीक कही पर हमारे जिजमान को कुछ और जादा उमेदगारी ही ।

(आपस में दो चार एक कोने में बैठे हुए) अजी जैसा जानते थे वैसा तो आया नहीं परन्तु यह कहलो कि लड़के के देखने सेतो यह भी बहुत है—किसी दो आंख वालेका भी इतना नहीं आता ।

सामं० (व्यंजना से) लालाजी अभी कुमरजी की आंख अच्छी नहीं हुई ।

राम० बीच में अच्छी होगई थी अब फिर आगई है हल्दी और लोध की लुपड़ी बांधी है नवला छींक पात लाला को तू भीतर लेजा ।

काशी० (हंसकर) हां भाई मंगलं भगवानविश्नु मंगलं गरुडध्वजं मंगलं पुंडरी काक्षं मंगलायतनो हरिः (घरकी ओर देखकर) अरी तुम चुप बैठी हो कि आरतो गाओ हो

(स्त्रियां आरता गाती हैं) बुंदी बुंदि यन वरसे गो मेह झमका रेनु मादर बाजेगो—(आरते का रुपया थाली में से

हाथ में लेकर नवल लड़के को उसकी माके पास भीतर लेजाता है)

कमला०रानी यहां आओ—लेउ लला कहा लाये हैं—घवराई जातीं थीं अवतो राजी हो—बहना सब जनी रामर लैलेउ—लाला रामर करें हैं और सब असीस देउ

रामदे०—(जल्दी में हंसती गिरती पडती हुई) लाला यहां ला देखें तेरी सासने क्या भेजा है—ये तो थान दो मलमल के हैं और ये काऊ और के हैं एक थान जाली का है कपडा तो अच्छा है—एक मुहर को कहा दीनों और खर्च के सात चाहियें थे सो पांच ही भेजे हैं।

कमला—तुम पै विदुलाइवो बहुत आवे है पूछो तो काऊ के ऐसो भारी टीको आयो है।

बहुतसी स्त्री०—रानी टीको तो बहुत अच्छो आयो है यों तुम कहो तो कहिवै करो—या वस्ती में तो आज तलक इतनो भारी टीको आयोना है।

रामदे० एजी मैंतो वैसेही कहू हूं सब अच्छा है और योंतो हमारी जयदेवी के व्याह में जो टीको गयो हो वामें इससे चौगुने मोल को कपडा हो।

कमला॰ भेजवे की कुछ मेंड नांहे—यह तो अपनीरसम्हाई है और हमतो जाने हैं रानी तिहारे वडे भाग हैं ।

रामदे॰ कमलाये सव वातें तो होगई—वतासे वांटने वालों को वुलायला इन सवको पहले देजाय फिरि वाहर वांटा करें ।

कमला॰ वुलाऊ हूं—जल्दी तो करो मन पांच छै झोरीवारे वाहर वांट रहे हैं—वांट चुकेंगे तव वुलाऊंगी तव तक भीतर के माट मेंसें तुमही देदो—ऐसी येभी जीजाती हैं तो ।

राम॰ चैनसुख अव वाहिर रहने दो यहां और वांटरहे हैं भीतर वतासे दे दो—कमला तू आंगन झारिदे—नेगी खाकर डेरा को जांय देर वहुत होगई है और यहां गारी गावनहारी रह जांउ और भीर दूर करो ।

कमला॰ सव सामान तय्यार है—तुम वुलाओ—मैं आनन्दी की मा के घरते मजीरा ले आऊं ।

राम॰ तवसे तू क्या कर रही ही अव मजीरा लावैगी चल भीतर वैठ नेगी आय गये ।

नवला॰ लालाजी नेगी आवैं हैं छरी छापरिनु सों कहि देउ भीतर है जांय ।

राम॰ किसोरी लाल को वुलाओ और हरसुख और रामद्याल

को बुलायलो नेगीनु जिमाय जांय।

नवल० लालाजी मैं पहले ही से बुलाय लायो हूं।

राम० अच्छा भय्या नेगिनु विठालो और भीतर से सामान लाओ और इनसे कहो–परस परसाय जाय तब गाया करें (नेगी बैठते हैं पूरी दही बूरे से थाल भरर कर उनके आगे रखते जाते हैं)

राम०(नाई प्रोहित से) नाऊ प्रोहित करो हरे हरे–पूरी ठंडी होगई–हमने यह जान कर कि सबेरे आजावेंगे रसोई तयार कराय रक्खी ही।

साम० महाराज कहा डर है ऐसी ठंढी नाहैं–हमें भूखऊ अब लगी है (जल्दीर दुहरी पूरी तोडता हुआ) महा राज आप बडे आदिमी हैं आप के–

चिन्ता० सामन्ता भूख नहीं है क्या? कुछ बेमन कैसें खाय रहे हो (परसने वाले की ओर देखकर) बूरा यहां परसना और भीतर से नरम पूरी नीचे से निकाल कें लाओ।

राम० कैसी पूरी परसते हो–पांडेजी की उमर और है–नरम नरम पूरी परसो–सामन्ता के आगे दही परसो और बूरा खूब परसो–

साम० महाराज आप राजा हो कभी काऊ बातकी नाहैं–

और यों तो लोग घी और बूरो काऊर जातिमें खवा में हैं जासे नेगिनु को मन खट्टो न होय आपने तो बूरे के मारे आट दिये—अब तो कचोरी और मगाय देउ बूरो भीतर से माति मगाओ यहां होय तो परोस देउ।

राम॰ लाओ भाई पूरी और कचोरी परसो—मुरब्बा लाओ (नेगिनु से) अब के नाऊ प्रोहित हमारें आम कम हुये थे नहीं मुरब्बा हमारे मन दो मन विना पड़ें नहीं रहता।

साम॰ महाराज वस अब जल मगाओ—और हम वड़े सवेरे जांयगे—हमारी विदा कर राखिये।

राम॰ अच्छा अब जाकर आराम करो (नेगी जाते हैं)

---

२ अंक।

स्थान रतनलाल की बैठक।

विद्यासागर पंडित और सामन्ता का प्रवेश।

साम॰ लालाजी मैं पंडितजी को लिवाय लायो हूं व्याह सुझवाय लेऊ लड़का के वापने यह कहि दीनी है

कि व्याह हम ज्याई साल करैंगे दूसरी साल हमारे लडिकी को व्याह होगो ।

रत॰ अच्छा महाराज पंडितजी देखो कब बनता है अब चाचाजी भी बडे बूढ़े बैठे हुये हैं जैसी कुछ सलाह पडे सो करें ।

पंत॰ लाला व्याह तो तुम्हें करनो ही है—जैसा ही इस वर्ष वैसाही अगले वर्ष—लडके वालें ही की कही रहने दो—और आज ईश्वर को तुम्हारे ऊपर हाथ है भय्या जो वन जाय सो अच्छा ही है । ४

विद्या॰ महाराज आप सत्य कहते हैं आदमी समय को हाथसे न जाने दे शास्त्र का भी यही कथन है—दाना दिक और शुभ कर्म करने में विलंब न करना चाहिये ।

रत॰ अच्छा आप सब कहते हैं तो मैंभी आप के कहने से बाहर नहीं हूं मुझे तो एक वार करना—जैसा ही अब तैसाही दूसरी साल—महाराज पंडितजी निकालिये पत्रा ।

विद्या॰ (पत्रा देखकर और अंगुलियों पर राशि गिनकर) लालाजी विवाह तो इस वर्ष बनता है परन्तु आषाढ़ से इस ओर नहीं बनता कारण क्या कि माघ और

फागुन में तो शुक्रका अस्त है उनमें हो नहीं सक्ता ऐसा कहा है"अस्ते गते भार्गवे—चैत्र आविवाहिक मास है वैसाख में पूजा का बनता है और कन्या जेठी है जेठमें हो नहीं सक्ता लालाजी शुद्ध साहा तो आषाढ़ शुदी ९ नवमी का है ।

रत० पंडितजी महाराज आषाढ़ में तो मेह बरसेंगे विवाह कैसें बनि पडैगा ।

विद्या० लाला कुछ शास्त्र किसी के आधीन नहीं है जो शुभ लग्न है वह हमने बतलाय दी आगें जो तुम उचित समझो सो करो ।

पीत० रतनलाल पंडितजी ने जो आसाढ़ की शुद्ध लग्न बताई है वही रहने दो इसमें कुछ मत कहो ।

रत० कहता कुछ नहीं हूं दो तीन बखेडे है एक तो वरषा का भय हैं दूसरे आषाढ के महीने में तरकारी कम मिलती है और तीसरे हमने यह भी सुनी है कि उसी साहे पर लडिकी की ननसार में एक ब्याह है—परन्तु अच्छा जो सब की यही सलाह है तो कल सामन्ता को भेज देंगे ।

साम० हां राजा साहब भेजो तो जल्दी भेजियो फिर मेरे एक जिजमान के ब्याह है एक भातले जानो है जैसे बनें तैसें कालि परसों तक भेज देउ ।

रत० (पंडितजी से) तो महाराज यही निश्चय रहा।

विद्या० हमारे निकट यही ठीक है दश दोष रहित यह लग्न है जो हमने तुमको बताई है क्रान्ति साम्य आदि दोष हैं सो कुछ चिन्ता नहीं–लड़के को सूर्य्य चौथे हैं यह कैसी उत्तम बात है–इतमें लड़की को बृहस्पति ११ वीं–उस दिन दग्धा तिथि है परन्तु चन्द्रमा ८ वें अच्छे हैं निदान सब प्रकार उत्तम है हम इतना और किसी के यहां कब सोधते हैं तुम ज्ञाता हो बुद्धिमान् हो हमारे धनवान् जिजमान हो तव तुम को ये सब बात बताई हैं।

रत० सामन्ता पंडितजी महाराज इस साहेको बहुत शुभ बताते हैं तू कल्ल ही जा और ब्याह की पक्की करि आ हमें भी करना ही है।

विद्या० अब लालाजी मुझे आज्ञा है मैं जाता हूं आशीर्वाद–चल सामन्ता तूभी चल उसकायस्थ जिजमान के होते चलें।

[दोनों जाते हैं।]

स्थान रतनलालका आंगन।

रतनलाल सामन्ता और पंडित जी का प्रवेश।

रत० जा भाई सामन्ता हमारे सब व्योहारी और कुटम्ब वालों को बुलायला लगुन लिखी जाती है और भीतर कहदे कि गामनहारीनु बुलामें तवतक पंडित जी पूजन कराते हैं।

साम० लालजी मैंनें आपके विना कहे बुलाये देदीने सब आते हैं मैं फिर जाता हूं चौक पूरि जाऊं (द्वार की ओर देखता हुआ) लेउ चाचाजी तो आइऊगये ये केशवकुमार भी आये—ऐसैं ही सब आते जाते हैं—लारे मोहना पानी—हाथ धोइकें और होय आऊं [बाहर जाता है]

विद्या० (सामन्ता से) कलश और वैसान्दुर तो तू यहां देता जा और कलाओ मंगाले रोरी पान ये आगये।

रत० हम मंगवायें देते हैं देर होगी उसको जाने दो—मोहना की मा—कोई नाइन भीतर है कि नहीं कलश और वैसान्दुर लेआ।

रुकमा नाइन—[अपने लडके मोहना से] मोहना रेवती के चाचा को भीतर भेजदे वहू जी बुला मे हैं।

रत० अच्छा सुनि लीनी आवें हैं लडकी को भेजो जब तक पूजन होय (उठकर घर के भीतर प्रवेश करता हुआ) क्यों जी इतनो कलाओ आयो हो सो कहां

डाल दीनो या घर का कुछ ठीक है—फिर तुम कहोगी इनको रिस बडी है बताओ अब कहां से आवे ।

जस॰ बताय वे कूं मैंने खाय तो लीनो नाहैं—कल्लि सांझ तलक या मटुका में हो हम न जाने कलायेको को चोर आगयो सब धरें ढकें ओर तऊ हमारो नाम न निहोरो होगो यहां ही—मुझे तो मिटगयो मिले नाहैं ।

रत॰ बात कही तो रिस होगई—तुमसें न पूछें तो और किससे पूछें चलो जानेदो मंगाय लेंगे मत ढूंढो सम्हार कर रकखा करो—यह हम जानते हैं तुम्हें याद बड़ी रहती है—न तुमारी धरी चीज खोवै किसी और जीच वस्त में मिलगया होगा । २

विद्या॰ लालाजी कलाओ मिलगयो रहने दो चले आओ घरमें चिल्ल पुकार मत करो नाइन पत्तनु में दवा कर धर गई ही ।

जस॰ देखिरी मोहन की मा बगल में छोरा नगर में ढंढोरा कलाओ पंडित लिये बैठे हैं मुझ पर लाल तत्ते हो रहे हैं ।

रत॰ चलो रहने दो तुम क्या भूलोही ना हो—मैं जाता हूं—परन्तु यह बात तुम से कहना भूल गया सब की यह सलाह है कि ४१ से आगे लगुन में मत भेजो ।

जस॰ सोचलो यही आगे यही पीछे है दस पांच तो हैं नहीं टीके में इतने भेजचुके हो अब क्यों गिरते हो—लोग हंसाई करावनी है तो तैसी कहो।

रत॰ यह तो ठीक है परन्तु आज कल के वखत तो तुम देखती हो रोजगार चलता नहीं जहां देखो तहां खर्च ही खर्च दीख पड़ता है—तुम कहोगी सो लगादेंगे परन्तु फिर पास की पूंजी जाती रहैगी।

जस॰ पूंजी जाय चाहै कुछ जाय व्याह तो हम अच्छा करेंगे—तुम तो कहते हो—कल्लि ही वात कहने लायक न रहैंगे यहां वहां के सब नाम धरेंगे।

रत॰ नाम धरने को देखें या अपने घरको देखें परन्तु खैर तुम्हारी यही राज़ी है तो घर में होगा घरसे लगावेंगे नहीं होगा वाहर से ठग लावेंगे अब जाकर लगुन तो चला दूं फिर देखी जायगी (वाहर जाता है)

विद्या॰ लालाजी पूजन तो होचुका अब जो कुछ संकल्प इस निमित्त है सो करना चाहिये

रत॰ सामन्ता आगे वढिआ तेने वड़ी देर लगाई कहां चला गया था।

साम॰ राजा साहब आपुने वुलाये देने को भेजोहो सो सवनु वुलाय लायो और भीतर से जो सामान लामनो

हो सो लाकर धर लीनो अब आप हुक्म करें ।

विद्या॰ हुक्म क्या करें जो वस्तु भेजने की है—उनको एकत्र करि के संकल्प कराओ विलम्ब करने में कहा लाभ है श्री फल और पुंगीफल यह ले पांच हल्दी की गाठें लेले थोरो सो कलाओ लेले लगुन लिखी हुई है इसे में जब तक कलाए से बांधता हूं ।

रत॰ सामान्ता सब सामान एक डला में रखकर लेआ और दिखा कर रखताजा बनात का एक थान बड़ी सन्दूक में है उसे निकल वाले ।

साम॰ महाराज वह तो मैं पाहिले ही ले आया यह कैसा है ।

रत॰ यह बनात है तू इतना भी नहीं जाने है कमखाव के थान को बनात बतावै है ।

साम॰ महाराज आपु के यहां अनेकर कपडा देखने में आये हैं किसर का नाम याद रक्खूं महाराज गरीब आदिमी याही सूं बनात कहैं हैं ।

रत॰ कहते होंगे बनात तू कामदानी का और मखमल का दूसरा थान उठाले ।

चिन्ता॰ महाराज दैनों ही हैं तो एक कमखाव को थान और दे दो ।

साम॰ पांड़ेजी घबराउ मती देखते जाउ अब ही बहुतेरे सामान धरे हैं ।

रत० (चाचा के कानमें) रुपिया कितने धरि दें।

पीत० [कानमें] मेरी सलाह में एक मुहर और ५१ रुपे धर दो परन्तु अभी मोहर को नाम मति लो (प्रकट) पुरोहित ये ५१ रुपे लड़की के हाथ पर रख कर संकल्प कराओ।

साम० बाबाजू तुम कहोगे होगी तो सोई परि पहिले ही मुहरापै बात हलुकी है जायगी।

(सब लोग एक मुख होकर) सच्ची तो है ऐसे धनी मुहर न देंगे तो और क्या कोई कंगाल देगा हमारी समझमें तो पांच मुहर और १०१ रुपये से कम न भेजना चाहिये।

रत० भाई कहते तो ठीक हो गृहस्थी में इतना भी बन पड़े सो बहुत है आज कल समय अच्छा नहीं है।

चिन्ता० महाराज भीतर सें अब भी यह कहलाय भेजी है कि पांच मुहर और १०१ रुपये से कम लगुन न जायगी पचास२ चालीस२ के कारज क्या करेंगे इससे न करें तो अच्छा।

रत० अच्छा अब भाई घर बाहर सें सब की यही सलाह है तो इतने ही देंगे गिनले भाई सामन्ता—ये पांच मोहर हैंओर ये १०१ रुपे हैं।

सामं० महाराज और तो मैं कछु जानूं नाहूं समधी को चैतन्य घर है जायगो—सबरे घर की आंखें खुल जायँगी।

विद्या० ले सामन्ता—संकल्प को १।) रुपिया तौ लेकें यहां रखदे और सब सामान जल्दी बांधले।

सामं० महाराज सब बंध गयाआप लड़िकी को भीतर भिजवादें—नहीं लो मैं ही लड़िकी को भीतर पहुचाये देता हूं तुम सब बांध के ठीक करो।

चिन्ता० जिजमान बरात की और कहदेउ जितनी कहो तितनी कह आवें।

रत० दो सौ से आगे मति कहियो आमैंगे तो पांच सौ यह हम जाने हैं।

चिन्ता० जैसी आज्ञा (दोनों बाहर जाते हैं)

स्थान रामगोपाल का घर।

राम० नवला नाई बुलाये देआ नेगी आगये हैं और रंधीरा से कह दे रंडी तय्यार होजायँ।

नवला० महाराज बुलाये देने को हरिपला की मा गई है मैंने तो जब से महमान जहां के तहां ठहराये हैं रंडिन्नु के डेरा में दिया धरवाय दीनो है नौवत्त वारे पहले घर में ठहराय दीने हैं।

राम० अच्छा तो पुरोहित जी से कह आंगन में सब तयारी

करावें और चौक पुरवाय के पंडित जी को बुलावें

नवला० बहुत अच्छा मैं जाता हूं थोड़े तमाखू को हुक्म हेजाय महमानों के संग जो आदमी हैं वे तमाखू मांग रहे हैं (तमाखू लेकर जाता है)

राम० (घर भीतर जाता हुआ) अरे अभी किसी ने चौक में दिया नहीं रक्खा कहां गयी कमला अभी न परदा टांगे न चौक लगाया सब के सब हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं यह खबर ही ना है कि पहर भर रात जाचुकी है।

कमला० अजी दीया जोर रही हूं तब तें तरी तरकारी में ही लगी रही नहीं तो अबतक परदा फरदा सब बंधजाते नायनि है तो तुमने ऐसी सैली दे राखी है कि एक पल भर यहां नाहैं ठहरे।

राम० नायन पीछे आजायगी अब तो घर में कहदे कि चौक की तयारी करें और गामनहारी बुलालें ये पंडित और पुरोहित भी आगये पुरोहित पंडित जी के पास बैठकर सब तयारी कराओ मैं जब तक बाहर होआऊं।

नवला०अब आप न जांय सब लोग आगये नेगी भी आये गा-मन हारीन्ह से कहौ गीत गामें।

(स्त्रियां गीत गातीं हैं) जहां भूमियां से दीवान् तहां कार्य की संका इत्यादि ।

काशी०—नवल कलश लाओ और लडके को बुलाओ (लडका पट्टा पर वैठता है और पंडित जी पूजन कराते हैं ॐगंगणपतयेनमः शुक्लांवरधरं विश्नुंशंख-चक्र चतुर्भुजं प्रसन्नवदनंध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये अथ गंगणपतयेनमः सूर्य्यायनमःचन्द्रायनमः राहवे-नमः केतवेनमः अर्घपाद्यं समर्पयामि आचमनं नैवे-द्यंमुखवासताम्वूल पुंगीफल सुदाक्षिणांसमर्पयामि ।

नवला० पैसा लेकर लाला के पास रखदे पूजन के लिये अभी वहुत चाहियें ।

नवला० (नेगियों के सन्मुख) लेउ पूजन है गयो लगुन लालाजी के हाथ पर धरो वतासे गोद में भरि देउ और पान को वीडा खवाय के टीको कर देउ ।

काशी० नवला—छींक पात लाला को भीतर लेजा—और लगुन के रुपिया सम्हार ले ।

नवला० सम्हार लीने—पांच मुहर हैं और १०१रुपिया हैं ९ खर्चे के हैं और यह कपडा है—(सव को दिखाता है)

नगर निवासी०लगुन भली आयी हम तो १०१ जानते थे—

और नगर निवासी० भली क्या आयी हम सुन रहे हे कि

लड़की वारो बडो धनी है कुछ न आवती तो दूनी तो आवती न घोडी न ऊंट का बोता ।

एक वृद्ध०अरे भाई नेगिनु के आगे ऐसी वातें मत करो वैसेंही किसी को मन विगाडो—नहीं भैय्या नवला नेगिनु समझाय दे—भली लगुन आयी—और सवनु भलो मान्यो ।

राम० भलो मानवे कों तो आप जाने हें इतने आये तो—और वढती आते तो—रुपिया किसी के रक्खा नहीं रहता—इस समय की शोभा है इतनी वात जरूर है कि सामान जो हमने सोच्यो हो उसमें कछु कमी करनी पडैगी ।

काशी० नवला तू लाला को भीतर लेजा और भीतर से मुंह जुठर वायके लेआ ।

नवला० (लाला को गोद में लेकर) लेउजी लाला पैसें रुपया और कपडा सम्हार लो और लगुन वाहर भेज दीजो लाला के संग ।

कमला०लाला इतै आओ वहूजी की गोद में धरि देउं जो सासुने भेजो है ।

रामदे० लल्ला यहां आ पहिले वुआ को दिखादे ।

पार्वती पुरोहितानी—अये वहूजी तुम भली हो लाला को

माथो देवतानु की ओर हलाय देउ तब लगुन गोद में लीजियो ।

सामं० नवल यहां आओ यह भीतर की नोछावर रह गयी यह दे आओ [दो रुपे देता है]

नवला० [परदा में से उझक कर] देर मति करो लला पैसें और सब सामान लैलेउ लगुन बाहिर भेजदेउ

रामदे० (प्रसन्न मुख) मुहर गिनकर एक हाथ में रखती है और बतासे गोद में रखती है और थान खिसक कर नीचे गिरते हैं—नवल की बहू ये थान सम्हारिये पिरोहितानी तुम बतासे भरिलेउ लला मैंने तो सब चीज देख लीनी अब अपनी बडी मा चाची और भाभी को और दिखाओ ।

स्त्रियां—(आपस में) लगुन आयी तो सही रानी या घर के लिये फिर हूं कम है याते दूनी तो या छोटी बहू के समध्याने ते आयी ही तुम का गोपालके व्याह में हति नाहीं ।

रामदे०—अपनेर भागि हैं या बात को कुछ अचंभो नाहें सब बात भागि सें मिलती है—नहीं पार साल सरोंठ की सगाई फेर दीनी और यह पहिले से बदानि बदै हो सोऊ मंजूर न करी ।

एक बुढ़िया—[रामदेयी से] बहू ये बातें कहिवे की नाहैं तेरें आज कहा नाहैं और दस बीस आवत तो तू भागिमान है जाती जो ऐसे भागि सम्हार रही है भगवान् करें तेरे या कुवर की उमरि बड़ी होय और बहुत बातें तो हमपै आवाति नाहैं ।

नवला० लाला के साथ लगुन भेजदो देर होती है ।

रामदे० नवला की बहू वा कमोरी में से चारि बतासे निकाल ले और गिलास में पानी लेआ—लाला को मुंह जल्दी जुठरवाय दे और नवलसे कहदे ठाडे रहो लाला को संग लेते जाओ ।

नवला० ललाजी छींक पात जल्दी बाहिर आयजाउ और सब सरदारनु को रामर करो (लड़का नीची नार करके रामर करता है और लगुन पंडितजी को देता है)

काशी० (लगुन खोलकर) जननी जन्म सौख्यानां वर्द्धिनी कुल सम्पदा पदवी पूर्व पुण्यानां लिख्यते लग्न पत्रिका अथ शुभ सम्वत्सरे-ऽस्मिन् श्री नृपाति विक्रमा दित्य राज्ये सम्वत् १९३८ शाके तत्र मासे माघ मासे महाराज पूर्णमासी को विवाह शुभ है— चतुर्दशी को मंडप छावने की विधि होगी पंचमी

शनिवासरे नोंग मांगल दिन शुभं लालाजी पंचमी को तेल पयो जायगो और जागरन होगो छटि रविवार को तेल चढ़ेगो और वाही दिन घूरे की पूजा होगी तेल शुभ सात वर वरनीं चिरंजीव शुभ मस्तु

नवला॰ पंडित ज़ी तेल वहुत निकले ।

काशी॰ भय्या पंडितजी क्या करें शास्त्र को ऐसोही लेख है ।

नगर निवासी—(आपस में) अच्छो भयो सात तेल निकल आये नहीं झगामें सें देह की कारोंछ चमकती—लाला कोंन से गोरे हैं अव हलदी से ऐब ढकि जायगो—चलो वतासे ले लेकर अपने घर चलो पंडितजी तो दक्षिणां लेकर उठेंगे हमें तुमे कछु आसरो थोड़ोही है लेउ मंगाओ वतासे

राम॰ पुरोहितजी वतासे लाओ और पहलें नेगिनु को देउ—

पुरो॰ महाराज जो हुक्म (वतासे वांटते हैं) (नेगिनु से) पांड़े जी पिछोरा निकासो और नाई ठाकुर तुम भी अंगोछा सम्हारो (नाई प्रोहितदोनो को अंधां धुंध वतासे देता है नेगी जाते हैं) ।

राम॰ वाहिर के द्वार पर खडे होजाउ और सवको देते जाओ (प्रोहित द्वार पर जाता है लोग पीछे दोड़ते हैं और आंगन खाली होता है)

काशी० महाराज–हमारे–गुरद्वारे के वतासे रहे और आंचारज दक्षिणा रही ।

नवला० महाराज पट्टा को टका मेरो रह्यो और चौक पुराई रही ।

राम० (परदा मतिखोलियो) और गायनहारी न जांय हम अभी नेगिनु खाने के लिये बुलावें हैं ठौर साफ कराओ तक हुक्का पी आवें वाहिर जाता है ।

स्थान रामगोपाल की वैठक ।

रामगोपाल नवला प्रोहित और स्ती के दस वीस मनुष्य वैठे हैं ।

राम० नवला तू नेगिनु वुलायला और प्रोहितजी से कह दिखारे सिरोपाव और एक थाली में रोली और चावल लेते आवें ।

नवला० महाराज नेगी आमें जव तक नाच ठाड़ो करावनो चाहिये नेगी कहा जानेंगे कि हम कहूं लगुन ले गये थे [वाहिर जाता है]

राम० प्रोहितजी एक वडी परात और लेते आना और

जीतमल से दो थेली निकल वा कर किसी पे उठ-
वाते लाना।

नवला॰ (भीतर आकर दूरसे) महाराज नेगी आये प्रोहित
जी को जल्दी बुलवाओ और नहीं आप इन्हें वैठावें-
में जल्दी जाकर लिवा लाऊं।

राम॰ नाऊ ठाकुर—कहो तुम्हारे लालाने बरात की क्या
कहदीनी है।

साम॰ महाराज—हमारे लाला की तो हाथ जोर कर यह
कहन है कि हम गरीव आदमी हैं जैसे बने तैसे
निवाह लो।

राम॰ यह तो ठीक है परन्तु कोई बात निश्चय कर दीनी
है या नहीं।

चिन्ता॰ महाराज—निश्चय की यह सुन लेउ कि आप ठहरे
वडे आदिमी हमारे लाला या लायक कहां हैं जो
आप की झरझेलें—बरात की हम कहा कहें हमारी
तो यह कहनि है कि हम को निवाह लेउ—हम पै
जादा सम्बाई नहीं हैं।

नवला॰ प्रोहितजी तुम जानो हो हमारे लाला को कितनो
व्योहार है—और आज घडी सब हुकम में हैं।

साम॰ महाराज यह तो लेउ चिट्ठी और यही मोखादी
कहि दीनी हैं सौ आदमी तें आगे न लावें।

राम० नाऊ ठाकुर और२ हम सब बात मानेंगे परन्तु यह न होगी भला हम कोन से नाहीं करेंगे—हमारो दूर२ के रईस और भले मानस सब से व्योहार है नाते दार हमारे इतने हैं कि उनके संगके सौ दोसौ तो टहलुआ जुर जांयगे या लल्ला के व्याह में जाने को भोगाम के ठाकुर नवेंनी के राजा साहब—हरताल गंजके तहसीलदार—थाने के चीफ सबने कह रक्खो है नाऊ ठाकुर बरात हमारे बूते कम न हो सकेगी आदमी हजार से ऊचे ही ऊँचे आमेंगे और सो भी जब इतने होंगे कि हम आपस के सिवाय और लोगों को छोड आवेंगे।

नवल०महाराज आप कहें एक हजार—में आप को वा दिन गिनवाय दुंगो—एक२ सरदार आपके ऐसे आवेंगे कि जिनके साथ सौ सौ आदमी की भीर होगी।

साम० हमारी तो इतनी ही कहन है सौ की जगह आप दो सौ ले आवें—हजार दो हजार के लाये में हमारी पति भंग होगी और आप तो वडे आदमी ठहरे।

राम० पांडेजी तुम सुनिलो—तुम कहोगे तसें निवाह लेंगे परन्तु बरात कम लेजाने में न हमारी शोभा न तुमारी।

नगर निवासी—नाऊ ठाकुर हमारे इनको बड़ो व्यौहार है कहां तक कम करेंगे नाहीं करत करत हजारों आदिमी इकट्ठे होंगे—या बीच में कौन ऐसो है जाके ये नाहें जात और जो इनके नाहें आवें।

साम॰ महाराज हमारी मानों तो बरात थोड़ी लाइयो आगे आप मालिक हैं—हमारे जिजमान की जो कहनि ही सो कह चले।

राम॰ हम भी तुमसे कह चुके हैं—कहो लड़का और नाई भेजदें—हमें बुलाओगे और बरात बुलाओगे तो हजार से कम किसी तरह मत समझियो।

चिन्ता॰ महाराज आपको अख्त्यार है अपनी और अपने हितू की लाज-एक समझियो—इतनी अरज तो हमारी है।

राम॰ नवला परात इतमें ला और सिरोपाय और कड़े डला में से निकालता जा।

प्रोहित॰ महाराज—ये दो थैली आपने मंगाई थीं—इन्हें परात में लौटें देता हूं।

राम॰ अच्छा नेगियों से कहो अपनी विदा उठायलें और यह सिरोपाव पहनादो कड़े सोने के इनके हाथमें डालदो।

सामं० महाराज सिरोपा तो पहिन चुके और हमारे जिजमान को जहां तक हुक्म हो बिदा भी ले चुके परि हमारी वह याद रही या नहीं।

राम० हां हमें याद है हम व्याह में तुमें खुश करके आमेंगे (सामन्ती कडे पहन कर सलाम करता है और दिखारे बांधकर चलता है)।

स्थान रामगोपाल का घर

रामगोपाल और रामदेवी का प्रवेश।

राम० लगुन बारे तो कल बिदा हो गये—अब यह बताओ कि कितनो घी तुलिआयो है और गेंहूं पीसने को निकाले हैं या नहीं।

रामदे० अभी तक न मैंने तुमारो घी देख्यो न गेंहू निकल आये मैं तो ऐतवार के दिन भात मांगने जाऊंगी घी तो पीछे देखियो आज कपडा मगाय दो।

राम० घर्दी को बन्दोबिस्त कर जाउ भात मांगवे की हम नाहीं थोडी करें हैं—क्योंकि दिन थोडे रह गये।

रामदे० तुम करो धरो मैं तो ऐतवार के दिन जाऊंगी

भातई विचारे फिर चार दिन में कहा२ करलेंगे कपड़ा मंगावनो होय मंगाय देउ नहीं सीधें नाहीं कर देउ ।

राम० ब्याह के दिन कछु रहे नहीं और भात के बहाने तुम्हें मायके जाने की सूझी है खैर तुम कपड़ा बताओ क्या चाहिये हम जैसी कुछ होगी भुगतेंगे ।

रामदे० कपड़ा बताने की क्या बात है सब बनैगा मेरे पास तो धुवरोट तक के लिये नहीं है राज कुवरि और हरदेई दोनों छोरी जांयगीं छोटे लालाकी बहू जान कहैहै पल्ले घर वारी कहें हैं हम जांयगी—इतमें कमला अटकी है कि में देखि आऊं—इन सबके लिये कपड़ा चाहिये ।

राम० इतमें ब्याह को खर्च इतमें तुमने कपड़ा की अटकाई अब धरऊ कपड़ा से काम करि आओ—खर्च की ओर देखो ।

रामदे० ब्याह के बहाने से कपड़ा बन भी जांयगे—वैसे नाहिं तुम बनवामने बैठे—अब सब बात में खर्च होगो तौ का हमारे ही लिये उडि जायगो—जिन्हें इतनी नाहें सूझै—ब्याह में सब तरह के आदमी इकट्ठे होंगे—हम ये पुराने चीथरा पहने फिरैंगे ।

राम० अच्छा रिस काहे को होती हो मंगाये देते हैं तुम

मानोंगी थोडी ही पर यह वताओ कपडा ही कपडा लोगी या अभी कुछ और झगडा हमारे पीछे लगाओगी ।

रामदे० हमें न तुम्हारो कपडा चाहिये न कुछ और चाहिये हम तो अपने इन्हीं कपडनु से भात मांग आवेंगे यह तो हम पहले ही से जाने हैं—कि हमारी कही न आज तक भई न अब होय ।

राम० कुछ वात भी कहोगी या वैसे ही ठनगन करोगी लेव कितनो कपडा चाहिये अभी मंगवायें देते हैं ।

रामदे० एक कपडा पै क्या है—तुम पहुंची वनवाय देन कहते थे सो वन वाय दीनी पिछले चैत के वीछिया सुनार के यहां पडे हैं अब तक दस वार वनते—राज कुंवरि हरदेई की नाकमें वारी तक नाहें—छोरा के कडे अब तक वनते हैं अब कही तो व्याह की भीर वताय दीनी अपने लिये व्याह कहां जायगो—आखर तो वन वाओगे हमें भात मांगने के लिये भेजो तो सब कपडा वनवाय दो और हलकी भारी चीज ठुक वाय दो या हाल से तो व्याह हम पै होय नाहे ।

राम० अच्छा तुम कहोगी सो करेंगे अब यह वताओ—भात मांगवे में कितने दिन लगाओगी—जब तक तुम

लौटकर न आओगी कोई काम न होगा और मेरी सलाह में बहुत भीड साथ न बांधले जातीं तो अच्छा होता।

राम॰ तुम कैसी कहि देते हो—जो हमें संग लेले गई हैं उन्हें हम न लेजांयगे तो कितनो बुरो मानेंगीं—तुम तो भले रहोगे हमें तो बोलनऊं न देंगी।

राम॰ तुम जानो—हमारे जान सब नगर संग लेजाउ हम तो आज रुपे की फिकर में रामपुर जाते हैं।

—

स्थान रामपुर धनपतिराय सेठ की कोठी।

—

राम॰ (मन में) देर होगयी है—सेठजी से जाने भेंट होगी या न होगी आज ठहरना पडा तो एक दिन और हाथ से गया—ब्याह के थोडे दिन रहगये—बिना रुपे के कुछ होता नहीं कोई आदिमी मिले तो उससे पूछे—यह कोई खाट पर लेटा हुआ दीख पडता है (प्रकट) क्यों भाई सेठजी हैं।

नौकर॰ हैं—कहांसे आये हो

राम॰ बतादेंगे तुम सेठजी से खबर कर दो—(नौकर भीतर जाता है)

नौकर० सेठजी एक आदिमी आपको पूछे है।

धनपति० कुछ लेने देने को आया है या वैसे ही मेरो मत्था पचाने को आया है—अच्छा बुलाले—(नौकर बाहर जाकर रामगुपाल को संग लाता है)

राम० सेठजी राम२ आपने मुझे पहचाना।

धन० म्हारी पहचान में तो कोई ना आये।

राम० मेरा नाम रामगोपाल है—मेरा घर मथुरा में है।

धन० आप को आमन कैसे भयो—कुछ आढ़त में माल भेजनो है—हुंडी परचो वेचनो है।

राम० जा काम के लिये आये हैं सो आप सुन लेंगे—जब तक आप इनसे बातें करलें (और आदिमियों की ओर ध्यान दिलाता है)

धन० बातें करलीं—आप अपनो मतलब कहैं।

राम० अब के सेठजी—जबर का मुकाबिला आन पड़ा है—आपको मालूम है पहले हमारे शादी संबन्ध हुए बराबर वालों में हुए-दूसरे उन दिनों में हाथ चलता था पुरिखा बहुत कुछ छोड़ मरे है—जिमींदारी की आमदनी बहुत ही कुछ लेन देन और माल अत्ता का काम जारी था इस लिये जितनो खर्च आय पड़यो मालूम न भयो — अब वे बातें दूर गयीं — और

गृहस्ती में काम सब करने पडते हैं राधावल्लभ की सगाई-काशीपुर के रईस के यहां हुई है — हम ने बहुत चाही कि कोई बराबरि का मिल जाय परन्तु जूरी बलवान।

धन॰ व्याह कब है — भाई सोच समझ के चलियो — समय की ओर देखकर — अब यहां कैसे आये सो तो कहो।

राम॰ कहैं क्या कुछ रुपे की मदद करो तब कामचले।

धन॰ आज कल रुपे का दर्शन भी नहीं है — अब कहीं से काम चलाय लो फिर देखो जायगी।

राम॰ कहीं से काम चल जाता तो आपके पास क्यों आते यह तो काम करनो ही पडैगो।

धन॰ काम करनो पडैगो तो भाई व्योहार की बात है व्याज अधन्नी रुपिया से कम न होगी — छमाही पर व्याज लेंगे — नहीं व्याज पर व्याज लगैगी — और जायदाद ओड़ करदेनी पडैगी — लिखतम लिखकर रजिस्टरी करादो — रुपिया थोड़ो बहुत जहां तहां से करदेंगे।

राम॰ सेठजी व्याज जादा कड़ी मांगो हो — परन्तु विना लिये काम नहीं चले ५००० हजारकी लिखतम करालो।

धन॰ ईश्वरदयाल गुमाश्ते के पास जाकर लिखत पढ़त कर दो और रुपे लेलो।

राम० (श्योघाल के पास जाकर) सेठ जी ने लिखतम लिखाने की कही है—यह कागज मौजूद है लिखा लो।

श्योघाल० कही होगी साहव—हमारो कागज विना खत्यो पड्यो है—तीन वर्ष के लेखे आज तांई नहीं उतरे—वहुत से आसामिन के नाम तलक याद नाहैं—अव अंदाज वांधकर लिखने पड़ेंगे—दो चार महीना तो हमें फुरसति है नहीं—फिर जो सेठजी और आप कहोगे सो सव करेंगे।

राम० हमारे व्याह के तो पंद्रह दिन भी नहीं रहे हमें दो चार महीना कव संवाई है—या जल्दी के मारे कितनी कड़ी व्याज दीनी है यह खवर है।

श्योघा०दीनी होगी—हमें यातें क्या मतलव सेठजी कों गों होयगी तो आप लिखाय पढ़ाय लेंगें।

एक ब्राह्मण० [रामगुपालके कान में] जल्दी है तो लालाजी कुछ कसर खाउ—मुनीमजी की विना राजी किये काम न वनेगो आप डेढ अन्नी रुपिया दें—तामें हम और मुनीमजी समझ लेंगे—नहीं अभी सौ वखेड़े लगेंगे रुपिया नहीं है—कसरि देउ—हुंडामन देउ थैली खुलाई देउ इससे यह कैसी कि डेढ अन्नी रुपया देकर आज सव काम ठीक होजाय।

ब्राह्मण० अभी लो—(मुनीमजी के कान में कुछ कह कर) तो मैं लिखने वाले को वुलाये लाता हूं—आप कागज समेटें और रुपे निकालें।

इयोद्याल० (जल्दी कागज वंदकर के रुपे गिनवाता है और इधर कागज लिखाजाता है) रुपे सम्हालो कागज पीछे लिख जायगा।

राम० (रुपे गिनकर) ये तो वहुत कम हैं मुनीमजी

इयोद्या० वहुत कम कैसे हैं—पचास रुपे खर्च कागज और रजिस्टरी के दोगे या न दोगे रुपे साढे चार सैकवे भये अभी मिश्रजी ने तुम से कही—और रुपया सैकड़ा थैली खुलाई हमारें लगै है—सो सव देश जाने है तुमारे संग कोई नई वात हो तो वता दो—हमारें लालाजी छिपा चोरी का व्यौहार ही नहीं है।

राम० अव हम कुछ न कहेंगे आप ही मुनासिव ना मुनासिव सोच लें—हमारो आपको यह पहलो ही व्योहार है हमें आप इतने से भी कम देंगे तो रजिस्टरी कराय जांयगे।

इयोद्या० कम क्यों दें आप को और दो ज्यादा यह ब्राह्मण रुपे लेकर आपके संग जायगो आप रजिस्टरी करा कर रुपे लेते जावें।

राम॰ वहुत अच्छा भेज दीजिये (ब्राह्मण समेत वाहर जाता है)

स्थान मथुरा रामगोपाल का घर।

राम॰ नवला नाई को तो वुलाओ—नौते कहांर दे आया।

सेढमल प्रोहित॰ नवला आवै है जव तक ये अंगरेजी वाजे वाले बैठे हैं—पैकनु वारो मोजूद है—आतिशवा जी के नमूना आये हैं—इनको जो कछु करनो होय सो करलेउ।

राम॰ इन सवन ते पूछो क्यार लेंगे।

सेढम॰ अंगरेजी वाजे वाले तो २२ रुपया रोज और खुराक मागें हैं—पैकनु वारे कहें हैं कि हम १२ रुपिया रोज और खुराक से कम न लेंगे।

राम॰ अजी प्रोहितजी हम तुम से ठहरावत न वनैगी लाला जुगलकिशोर को लाओ—ये उनके हाथ आवेंगे (प्रोहित वाहर जाकर जुगलकिशोर को संग लाता है और दो चार तमाशे वाले और संग आते हैं)

जुगलकिशोर॰ (रामगोपाल से) भाई साहव जो हुक्म हो सो करूं—परन्तु साहा जवर है—दूसरे आप को नाम

वर घर है देखो जहां तक बनैगी—तहां तक कम पर राजी करूंगा।

राम० तो तुम और प्रोहितजी ठहराओ जब तक मैं घरमें देख आऊं आटा पिस गया या नहीं—(उठकर भीतर जाता है)

राम० कमला यह चून कैसे बिखरो परो है—बताय तो सही कितनो पिसगयो।

कमला० बहूजी जानें—मैंने तो पच्चीस मन गेहूं एक दिन निकाले हैं और आठ मन एक दिन निकाले हैं १६ मन बाहर से पिस कर आयो है—अब यहां ठौर ही नहीं है और ही बहुत से झगड़े हैं—चून तो लाला जी बाहर पिस वाओ—यहां नेहले टेहले ही इतने हों गे—कि घड़ी भर को सोफतो न होगो।

राम० खांड़ जो चंदोसी से मगाई ही वह कहां रक्खी है देख पूछ तो बहुत है कि और मगालें।

कमला० (सेठानी के पास जाकर और लौटकर) लालाजी आमें हैं लली लहंगा पर हग रही है सो धोय रही हैं।

राम० तो अच्छा मैं तब तक और काम कर आऊं सब चीज जो मंगानी हो पूछ रखिये—(बाहर जाताहै)

जगल० हमने बड़ी घोट घाट से ये लोग यों पक्के किये

हैं कि अठारह रुपिया रोज तो अंगरेजी बाजे वारे लेंगे—और ८ रुपिया रोजदेशी बाजे वारे और १० रुपिया रोज पैकनु वारे के ठहरे—नौबत निशान वारे के २०) एक मूंद ठहर गये—अब तीन काम आप के करने के रहे—एक तो रंडी—दूसरे भांड़ और तीसरी आतिश बाजी ।

राम॰ मैं तुम सें और ज्यादा कहा चतुर हूं—जैसे मुनासिब समझो करलो ।

जुगल॰ साहब बात यह है—जहां आप की बरात जायगी वह चौखट बडी है वहां के लिये सामान सब बढ़िया चाहिये—नहीं दामके दाम खर्च होंगे और हंसी होगी सो न्यारी ।

राम॰ तो अच्छा भाई—गोविन्दलाल को और बुलाय भेजो—और समझ सोच कर जो सलाह ठहरे सो करें—(प्रोहित गोविन्दलाल को संग लेकर प्रवेश करता है)

जुगल॰ (गोविन्दलाल से) भाई साहब ने हमें तुम्हें या लियें बुलायो है कि व्याह की तयारी जो कुछ करनी हो जल्द होजाय—दिन थोडे रह गये हैं पहले तो यह कहो तायफे कितने लैचलेंगे ।

गोविन्द॰ हमारी सलाह में पांच से कम न होने चाहियें सोऊ कैसे बडे२ सन्नाम—यह खुशी को दिन बडे भाग्य से मिले है—अभी हम हरनाम पुर के नौतहारमें गये हे—महाराज यह देखो कि लड़के वालेने ठाठ लगाय दीने—ऐसे२ सात सुघड़ तायफे कि जिनकी तारीफ नहीं हैसके—और अनेक नाच रंग और तमाशे कि वैसे अब तक देखने में नहीं आये—हमारी यह वरात जायगी याके दूर२ तक शोरहैं—देशके लोग तमाशे के लिये आवेंगे—आगें भाई तुम जानो।

जुगल॰ हमारी भी यही सलाह है—व्याह शादी में लोभ करने से तो काम नहीं चलता—हम लालाजी से कह चुके हैं कि पांच तायफे सें कम में वात हलकी हो जायगी।

राम॰ हमें तो जो तुम सब कहो सो मंजूर है—हम जानेंगे सौ दोसौ रुपे ज्यादा लग गये—अब यह सब काम तुम दोनों की सुपुर्द हैं जहां अच्छा नामी तायफा सुनो—पांच छै जो तुम जानों सो कर लेउ—और आतिशवाजी वाला मौजूद है उसे साई देदो।

जुगल॰ यह तो कहो कितने की आतिशवाजी ले चलोगे मेरी समझ में और खर्च में चाहे कमी होय परि

आतिशवाजी ऐसी जाय कि जाकी धूम फैल जाय।

गोविन्द॰ आतिशवाजी हुई-रोशनी हुई-बरात में ये ही तो शोभा की दो चीज हैं-विना इनके आस पासके लोग यह भी नहीं जानते कि कोई वरात आई या नहीं आई-यह वड़े घर की वरात है इसे दुनिया देखने आवैगी-हमारी बात मानों तो हजार बारह सौ रुपे से कम की आतिशवाजी आप न ले चलें।

जुगल॰ हमारी समझ में यह आवे है कि दिल्ली आगरे से आतिशवाजी वनाने वाले बुलवालें-और यहां घर पर तयार करालें।

राम॰ दिन थोड़े रह गये हैं बन न पावैगी-हमें तुमें और वहुत से काम देखने हैं-ये लोग जो आतिशवाजी का ठेका लेने आये हैं-इनसे ही कह दो ये बनादेंगे-मेरी समझ में ये तीन ठेकेदार हैं-इनको चार२ सौ की साई देदो-और होगी सो पीछे देखी जायगी।

जुगल॰ गोविन्द॰ (हरिवला-नसरत मियां और गुलाव को बुलाकर) यह तो लो साई-और चार चार सौ की-ऐसी अच्छी आतिशवाजी बना दो-कि वरात की धूम मच जाय-और चार२ सौ की जगह पानसौ छः सौ की भी होगी तो हम सब दिलवाय देंगे-परि

देखो धूंआ न देय—(अजी भला कहूं ऐसी बात होय है—(यह कह कर हरिवला आदि जाते हैं)

राम॰ (जुगल॰ गोविन्द॰से) तुम रोटी खाय आओ—दुपहर होचुका सांझ की छाक और बहुतसी सलाह करनी हैं—और न्हाकर दो रोटी मैं भी खायलूं—(बाहर जाता है)

स्थान रामगोपाल का कोठार।

राम गोपाल—बुलाकी दास मुनीम—नवला नाई—सेढमल प्रोहित व्याह का सामान देख रहे हैं

राम॰ मुनीमजी खांड के सब बोरा आगये ये तो कुछ थोडे से दीखें हैं—और खांड के लिये दिसावर को लिखी थी सो समाचार आगये।

बुलाखी॰ खांड के चारसौ पैंतीस बोरा तो ये हैं—और चंदोसी से जो ६१ बोरा आये वे अभी रेल पर पडे हैं। रेल वाले ने डिमारिज लगाय दीनो है गाडी गेंहू भरकर अभी नहीं आई वैसे गेंहू बहुत हैं आटा भी पचास सौ मन पिसचुका है घी भी आज ताय कर और तुलवाय कर कुप्पों में भरवाय दीनों किराने की चीजें सब आगयीं—कुछ रही हैं सो आ-जांयगी कल से कड़ाही चढ़नी चाहिये—फिर जल्दी

में खर्च जादा होगो—और माल अच्छो न बनेगो और एक वात कान में और सुनलो—वा दिन जो रुपे आपने भेजे हे वह सब उठ चुके—रुपे कहींसे और मंगवाओ ।

राम० मुनीमजी रुपे का पता नहीं—रामपुर वाले से वडी कहन सुनन से पांच चार हजार रुपे लाये हैं—और कोई दीखै नहीं है क्या करें—दो एक से पुछवायी ही सो गहने पर देने कहैं हैं ।

वुलाखी० कुछ घवरानेकी वाततो हैनहीं—उगाही और माल में अपनो रुपिया वहुत है और कोई सुरत न होय तो गहने की फिकर करदो—रुपे देदेंगे छुटालेंगे—दस पांच चीज जो यहां ऊपर हैं उनको आजमें लेजाऊं-गो—और कहीं से न कहीं से काम बनाय लाऊंगो और जो एक आध रोज की देर हुई तो जहां से जो चीज चाहियैगी लेआवेंगे—पीछे रुपे देदेंगे । व्याह काज में ऐसा सब किसी के होता है ।

नवला० लालाजी—तीन चार चीजें जो वे आपने मंगाई हीं—उनके दाम उधार करि आये हैं—आप भूले न—जमां खर्च करलें ।

सेठ्म० घवराय क्यों है भागे तो जायहीं नाहैं—हम काहे

से ही दो चार चीज लाये ही नहिं—जिजमान के नाम से हजार रुपे की चीज लाय डारें और छः महीना तक कोई तगादे को न झांके।

राम० मुनीमजी सब लिखते जाना पीछे भूल न पड़ै—और एक बात मैं और तुमसे पूछूं हूं कि नोते जहां जहां भेजने थे सब पहुंच गये या नहीं।

बुलाखी० पहुंचने न पहुंचने का हाल तो ये आपके नाई प्रोहित जानते होंगे सो दो सो चिट्ठी जो डांक में जाने को थीं वह भेज दीनी—दो सौ तीन सौ लिख कर इन सब के हवाले कर दीनी—कुछ फाल सुपारी इन्होंने बांटी होंगी—और जो बिरादरी की रसम है वह सो आपके आगे बांट दीनी।

राम० नोतहारी लोगों को यह लिख भेजी है कि नहीं कि अच्छे साज सामान से और तड़क भड़क से आवें और मांडवे से एक दिन पहले यहां आजावें—मुनी मजी तुम जानो हो—हमारे व्योहारी सब बड़े मुने के आदमी हैं—हमारी बरात कुछ बनिया बाटुओं की सी थोड़ी ही होगी इस बरातमें बड़ी सरदारी इकट्ठी होगी—हमारो कितनो ही खर्च क्यों न पड

जाय जैसे वेटीवारे ने वडे बोल वोले हैं वैसो ही नीचो दिखाय के हम मानेंगे ।

नवला० सेठ्मल महाराज आपके झेल झेलने लायक कहां है इतनी हम जाने हैं कि घर वहभी वड़ो है परि यह वात ही और है—हम आप के विना कहैं जहां गये हैं कहि आये हैं कि या वरात को वड़ी तयारी से करना ।

राम० मुनीमजी कल कडाही चढ्वा दो और जो लोग आवें उनकी खातर दारी का बंदोवस्त करो—डेरा शमियानों की मरम्मत करालो—और जो सामान वरात को चाहिये घर से या बाहर से इकट्ठा करलो मैं कल दिल्ली हो आऊं—चढ़ाये का सामान लेना है—दो हजार की फिकर आज कर दो—और जो कुछ होगा सो पीछें पहुंच जायगा ।

स्थान रामगोपाल का आंगन ।

रामगोपाल—कमला—और रामदेयी ।

रामदे०—मैंने सुनी है कि तुम कल दिल्ली जाओगे— ये पांच चार जड़ाऊ गहने हैं इनमें कुछ विगड़ विगडाय

गये हैं सो वन वातें लाना—और वडी वहू के लिये नौनगा लेते आइयो और हमारे करनफूल जडने के लिये दो धर्ष से धरे हैं।

राम॰ व्याह के काम पर से फुरसति मिल गयी तो सब कर लावेंगे—चढ़ायेके लिये हजारों रुपिया चाहिये आज कल तुमारे थोथे झगडे कोन पर हो सकें हैं।

रामदे॰ हमारे तो थोथे झगडे हैं—देखनो दिखानो तो व्याह शादी में ही होता है फिर तुमारी पचलरी हमारे कोन काम की इतनो व्याह में खर्च करोगे कुछ हमारे लिये भी है या नहीं।

राम॰ सब तुमारे लिये ही है—अव चढ़ावा अच्छा न जायगा तो कोन की वात हेठी होगी-पहले हमने कही थी कि थोडे से में जुगत भुगत करलें सो मानी न।

रामदे॰ हमारे लिये तो कुछ सोच करो मत तुम पै सम्वाई होय वनवालाना नहीं फिर देखी जायगी परन्तु वहू की और लल्ली की दो चार चीजें जरूर वनवाय लाना और हमारे लिये एक वनारसी दुपट्टा लेते आना।

राम॰ अपना कुछ न कुछ झगडा सो जरूर लगावेंगी चलो जो कुंछ वन पडेगा सो करते लावेंगे—भीतर की सिन्दूक में से हरप्रसाद की धरोहरि के जो एक

हजार रुपे हैं वह निकाल दो व्याह वाद देखी जायगी।

रामदे० रुपे तो निकालें देती हूं परि अभी तुम ने न गोंदा बुलाने को कोई भेजा न नवलो बुलाई — न सुखिया बी बी के यहां कोई भेजा एक अनारदेई के यहां से तो जरूर खवर आई है कि वे परसों उधर से ही गाड़ी कर के आजांयगी — इतमें राधावल्लभ की बूआ बुरो मानेंगी तुमारी माई बड़ी बूढ़ी हैं उन्हें बुलाय लेउ — और मैंने वहुत दिन से अपनी दोनों छोटी बहनि चतुरो और गंगो से राधावल्लभ के व्याह में बुलाने की कहि रक्खी है — और किसी को चाहैं बुलाओ चाहैं मति बुलाओ इन दोनो को हम जरूर बुलावेंगे।

राम० आज मैं सब जगह सवारी भेजने का वन्दोवस्त किये देता हूं — जहां तक वनेगी इन सब को बुलावेंगे यह हमारे पिछली छोर को व्याह है — और वैसे पूछो तो वाहिर की जितनी आमेंगी उतनो ही वखेडो वढ़ैगो लो मैं दिल्ली जाऊंगा।

— —

स्थान कृष्णगढ़

— —

रामभजन — नन्दलाल — और कुंज कुमरि का प्रवेश ॥

— —

रामभजन॰ मथुरा के व्याह के दिन थोडे रह गये और भात की कुछ भी फ़िकिर नहीं हुई — थोडासा कपडा जो हमने उस दिन मंगाय कै सिलने को डाल दिया वही तो आया और अभी तक कुछ भी नहीं हुआ।

कुंजकु॰ हमने तो पहिले ही कही ही कि कुछ न होय तो चोलिनु के लिये कपडा मंगवाय दियाजाय — अव और कपडा तो तय्यार होंवी जांयगे छोटे कपडा तो नहीं सिल सकैंगे।

नन्द॰ (राम भजन की ओर देखकर) इन्हें सब काम की देर में सूझे है — जो कुछ न वनि आयो तो वैसे हंसी हुई।

रामभ॰ तुम सव कहो सो ठीक — यह भात ऐसा तो है ही नहीं कि दस वीसवें काम चलजाय — याके लिये चाहिये कम से कम हजार वारह सौ रुपे — जहां तहां से रुपे इकट्ठे कर पाये हैं — विना रुपे के वातों से थोडा ही काम वनै है।

कुंज॰ आज ही सव कपडा मंगाय देउ जो घर के सीने का होय सोतो घर सींलें — और दरजी वुलायकेदेदेउ।

रामभ० पहले यह सलाह तो करलो—क्या क्या तयारी करनी चाहिये।

कुंज० चार पांच जोडे तो सौ सो डेढ डेढ सौ रुपै की लागत के बनवाओ और एक इतने से भी दूने तिगने मोल को होनों चाहिये—ग्यारह जोडा कुछ कम लागत के और कुनवा की लुगाईनु के लिये होने चाहियें—२१ जोडा खर्च के गिनलो—और मर्दों के लिये जो कुछ तुमें बनवाने हों सो बनवालो कम से कम ११ गहने होने चाहिये—दरवाजे पर देने का सामान कडे कलसा घोडा और जोडा होना चाहिये।

रामभ० तुम ने तो देशको राग गायो—इतने सामान के लिये तो घर वार वेचने से भी पूरा न पडैगा हजार दो हजार तो हम जहां तहां से लेकर लगा सकें हैं सब घर वार तो हम पर वेचा नहीं जाता।

कुंज० तुम कैसी कह देते हो—पहलो भात है—लली के मनको सौ भात न गयो तो वह वहुत बुरो मानेंगी और इतमें तुमारी बात जुदी हेठी होगी।

रामभं० यह तो हम जाने हैं—पर तब बात हेठी न होगी जब करजदार खेंचे२ फिरेंगे—अब या एक ही साल

में कितने कारज करने पडे हैं खवर है तुमारे नाती को दृष्टांत कीनों — छोटी वीवी को गोनो याही साल में करनों पड्यो — एक पछ दीनों और छोटे मोटे खर्च तो अनेक करने पडे — तुम से या भातकी पूछी सो अनगिनती जोडा गिनाय दिये।

कुंज० मैंने कुछ जादा गिनाय दिये हैं — यह भी तो नहीं होसके दोके लिये होय और दोके लिये न होय एक वढिया जोडा तो लली के लिये चाहिये ही रहे पांच वडे जोडा सो एक लली की सासु के लिये एक चच्चियासासु के लिये एक फफुआसासुके लिये और दो वाकी नंदके लिये एक सारसौलिवाली मूलो दुसरी नगरिया वाली हरिको — ग्यारह जोडा कुनवा की और लुगाइन के लिये कुछ वहुत नहीं है और कमीन कारू सवी आशा करें हैं उनके लिये इक्कीस जोडे भी न ले जाउगे तो क्या ले जाउगे।

रामभ० (नन्दलाल की ओर देखकर) इनकी लंवी चौडी वातें तो सुनलीनी — अव लाला तुम कहो मरदाने जोडा कितने लेचलें।

नंदलाल० घरर के जितने आदमी हैं उनके लिये एकर जोडा ले चलो और नातेदारों के लिये भी २१ जोडा

चाहियें — ग्यारह तो मानिही लेजांयगे — इसके सिवाय ८१ दुपट्टा मरदाने और इतने ही जनाने ले चलो और आठ दस खासा के थान धरले चलो ।

रामभ० लाला रुपिया वहुत लगेगा ।

नंद० वहुत लगे चाहे थोडा लगै काम तो सवी करने पड़ेंगे

रामभ० तो अच्छा कल दिल्ली को चलो — वहां से कपडा लत्ता जो कुछ लेना होय लेआवें ।

० अये दिल्ली तो जाउगेही किनारी और गोटा तो हमारे लिये लेते आइयो — और छोटे लल्ला के लिये एक टोपी अच्छीसी — और या लली के लिये छपेमा उढ़नियां ।

रामभ० देखो याद वनी रही तो लेते आवेंगे ।

स्थान सोनपुर ॥

मंगल प्रसाद — दीनानाथ चन्दनलाल — और रमुआ हरिकेसानाई ॥

मंगलप्रसाद० हरिकेसा दीनानाथ की सुसरारि व्याह है न्योंतहार कर नो होगो ।

हरिकेसा० लालाजी मैं तय्यार हूं — आप तय्यारी करें ।

मंगल० तय्यारी कररहे हैं — कपडा तो लडिकों के हमने न्योंताय दीने सवारी रथ और मझोली हैं सो उनकी

बन रही है—हुक्का की लटक और बनवानी है सो तू आगरे जाय तो बनवाता लाइयो—दीना को दो एक दिना उवटनो और करदे ।

हरिके० लालाजी साहब कुछ कपडा की मेहरि हेजाय मैं आपको टहलुआ वे लिखाकत गयो तो—आपई की नीचे कूं नजर आवेगी ।

चंदनलाल० चाचाजी वा दिन एक थान खासे का आया था उसमेंसे आठ गज कपडा रक्खा है हरिकेसा को कहो तो देदें—इतने में उसका सब काम चल जायगा—और मेरी पगडी पुरानी रक्खी है उसे देदो—दीनानाथ के लिये दो जोडी कपडा बढ़िया बनवादो वहां सब तरह के आदमी आवेंगे ।

मंगल० लाला यह तो पूछ देखो कि पारसाल जो दोजोडे कपडे बनवाये थे—वह रक्खे हैं या नहीं—और क्या २ कपडा और चाहिये सो पूछ देखो ।

दीनानाथ० मेरे पास तो अव कपडा हैं नहीं—दोनों जोडा जबही फट गये ।

मंगल० कपडा तो भाई बहुत बने हे सिंदूक में देखो पर पूछो ।

दीना० एक अंगरखा तो गंगाजी के मेले में खोगया दो

पुराने जोडा एक पोटली में बंधे हे सो सिकंदराबाद के नोतहारमें जाते रहे—कुछ कपडा वा दिन बंदर लेगया अब नोतहार लायक कपडा तो मेरे पास हैं नहीं।

मंगला॰ बनवाने की देर नहीं होती है कि फाडे तोडे फेंक दिये हम क्या कभी लडिका ही नहीं हुए—हम ऐसा करते तो हमारा एक दिन निर्वाह न होता।

चंदन॰ लड़िके ऐसे ही होते हैं—आप के आगें खाय पहर न लेंगे तो फिर कौनसो दखत आवैगो।

मंगल॰ खाने पहन ने के लिये क्या मैं मने कहू हूं परन्तु हे बात यही कि कपड़ा को तुम इज्जत राखोगे तो कपड़ा तुमारी रक्खेगा—यह कुटेव जानो कि बनवाने की देर न हुई—फाड़ तोड़ कर फेंक दिया।

चंदन॰ अब तो हुई सो हुई आगें से हम हुशियारी रक्खेंगे।

रखुआ॰ भाई दादा के संगमें भी जाऊंगो—चमकनी टोपी मंगवादो।

मंगल॰ छोटे लड़के नहीं जाते हैं—कल चंदन इसे टोपी मंगादेना—और कपड़ा सवारी सब दुरुस्त करा रक्खो धोबी से ताकीद करदो—एक दिन पहलें कपडा

देजाय—और नौकर चाकर जो लेजाने होंय उनसे आजही कहदो वे सव कपडा लत्ता की दुरुस्ती करलें और रस्ता के लिये कुछ पूरी और नौकर चाकरों के लिये चाहें पुरामटे करा लीजियो—और यह रमुआ न माने तो याके लिये थोडे से वजार से मोतीचूर के लड्डू घर लेजाना—और हमें आज मेरठ जाना है—हम आवें या न आवें तुम एक दिन पहले पहुंचियो और खूब सावधानी से रहियो लाडि के वालों का संग है चीज की हुशियारी रक्खियो (वाहर जाता है)।

द्वितीय अंक समाप्त।

तृतीय अंक।

स्थान मथुरा रामगोपाल का घर।
रामदेयी—कमला—और वहुत सी स्त्रियां
व्याह के काम धंधे में लगी हुई हैं

रामदे०कमला—आंगन तो पीछें लीपिये—पहिलें प्रोहि

तानी के पास जा — और जल्दी बुलायला — चढ़ावे के कपड़ा देखलें — हमारे कोई सिलै है कोई बिना सिलें जाय है — (कमला बाहर जाकर प्रोहितानी को संग लिये फिर आती है)

प्रोहितानी० — वहू कहा कह त्यौ।

रामदे० कमला ने तुमसे कही न होगी — ये सब चढ़ावे के कपड़ा देखेंगी — और यह वतायदेउ कि कोन कपड़ा सिलैगो कोन न सिलैगो।

प्रोहिता० तुमका जानती नाओ — इतने व्याह गोने करचुकीं हौ — सो यह नाहें मालुम कि कोन सो कपड़ा सिलैगो

रामदे० प्रोहितानी — ऐसी कहिदेत्थें — तुम देखन हारी हौ पहलें हमारे घर दो व्याह भये तब राधावल्लभ की दादी जीवतीं — उनके पीछें आगरे वारी के आगे दो व्याह भये — हमने तौ अवतक ये झगड़े करे न हम जाने।

एक और स्त्री० कपड़ों की सिंदूक खोलो प्रोहितानी सब वताय देंगीं।

रामदे० (सिंदूक खोलकर) देखो यह तो चांद तारे की चादरि है — दो तरह की अतलस दामन के लिये है सुर्ख जरी दुपट्टा के लिये है — कुछ वाफता है कुछ

दरियाई है—दो तीन तरह के ये और चमकने कपड़ा हैं—इनको जाने क्या नाम है।

प्रोहिता॰ चढ़ावे बहुत गये होंगे परि जो अब को है—ऐसो एक हू न गयो होगो।

रामदे॰ राधावल्लभ के चाचा से मैंने चलतेर यह कहि दीनी ही कि चढ़ावा ऐसा सुन्दर आवै—कि वहां की लुगाई देख के अचंभे रहजांय—दिल्ली में हमारी बडी बहानि को घर है—जमुना जीजी ने सबरी दिल्ली में से ढूंढर के मगवाय दीनो है।

प्रोहिता॰ वडे घर इनही बातनु के लिये तो देखे जात हैं गरीब विचारे पै कुछ नाहें वनि पडै—सौति समधि-निने सात जनमऊं ऐसे कपडा न देखे होंगे—धनी पुरवारी तुम हूं देखलेउ।

धनीपुरवारी॰ देखलीने—अतलस तनिक अच्छी और होती हमारें गोमती के व्याह में जो चढ़ावा आया था—उसे तुम देखतीं तब कहतीं—अतलस पै नजर नाहीं ठहराय—हमारें वहां यही चलन है कि व्याह में चाहें थोडो लगावें परि चढ़ावे की सब चीज अच्छी लैजांय ऐसी छोटी किनारी हमारे कोई लेजाय तो लुगाई नचाय मारें।

प्रोहिता० वीवी तुम अपनी मत कहो तुम राज घर व्याही हो-यहां तो कोई इन चीजनु जानेऊं नाहें-देखवे की को कहै ।

रामदे० चलो अच्छे हैं-हम गरीवनु के लिये यही वहुत है प्रोहितानी तुम और कमला सव संभारर कर बांध देउ और सिंदूक वंद कर देउ ।

कमला० आज यही लिये वैठी रहेगी-तीसरो पहर तो होने को आयो-न आंगन लिप्यो न भट्टी वनी-रात कूं तेल पयो जायगो-कल ताई है-ये निधरक वैठी वातनु में लगरही हैं हमारे जीय कू फिर आफत मचै गी-प्रोहितानी को और काऊ को कछू न विगडैगो।

रामदे० ठनगन तो करै मति-कपडा संभार ने है कि नाहि-अभी सैंतिवारो दिन है-लीपिवे के लिये हरनमा की वहू को और वुलायले-जव तक प्रोहितानी और छोटी वीवी कपडा सम्हारेंगी नायन से कह दे दिनमें ही वुलाये दे आवे और मैं तव तक रोटी पानी के धंधे से निवट जांउं ।

प्रोहिता० आज पहले तो कोल्हू पुजैगो-कडाही तो तव न चढैगी ।

नायन० वहूजी वुलाये सव लग गये या महुल्ला वारी तो

ये आय हू गई-और सब आवति जातें-कहो तो इन्हें बडे दल्लान में विठाऊं।

रामदे॰ अच्छा वहां ही ठीक है वहां जाजिम पहले से विछी है-(स्त्रियां दालान में बैठती हैं और गाती हैं)।

नायन॰ वहां चलके तो देखो-चोक फोक तो कछू पूरो न तव तक प्रोहितानी ने कराहिया चढ़ाय दीनी धरमपाल की मा अब सव्या गयी है-भला ऐसी हूकहूं सुनी हैं।

तीन चार और स्त्रियां॰ व्याह काज हमारे हूं भये हैं विना चोक के कारिहिया चढ़ावत हमनु कोइ नाहें देख्यो अबे-या घर अंध धुंद ही जादा है।

रामदे॰ प्रोहितानी-जो वात न जानों सो पूछि क्यों न लेउ थोडी देर में मैं आऊं हूं तव तक और वंद रक्खो-धनेशी की मा आती होंगी उन्हें वहुत खवरि है।

नायन॰ वहूजी वुलाये कहां२ दे आऊं-पछांहे महल्ला में तो मैं घर से आई ही तब देती आई ही।

रामदे॰ अरी तू क्या जाने ही नाहें वार२ क्यों पूछे है तेल चढ़ने में देर होगी-राधावल्लभ भूका होगा-तू जल्दी जा (नायन वाहर जाकर थोडी देर वाद आती है)।

तो दे आयी-चौकी परि गयो-मैं ललाको

९८

प्रोहि॰ उवटनों कर रही हूं पानी गरम हैचुक्यो—अभी न्हवायें देती हूं हल्दो पिसी पिसाई रक्खी है —हथलगिनु बुलाओ—चौक पे नाज डारो—और धीमर से कहो कलस भर देय।

रामदे॰ प्रोहिता॰ ये हथोना और सुहार सिकि गये वतासे या बूरो और निकाल लेउ।

कमर॰ रामदे॰ आओरी—सब निकालि आओ—लालाकी भाभी काजर लगाथी को रुपया लेउ तो जल्दी आयजाऊ (सब जुर मिलकर तेल चढ़ाती हैं—काजल और डिठोना लगाती हैं—और गीत गाये जाते हैं)।

नायन धीमरि॰ लाओ बहूजी हमारो नेग लाओ—इन बहू बेटिनु देहु—आज हमारो मांगिवो है।

रामदे॰ प्रोहिता॰ मांग्यो करियो—छींक पात लला को भीतर ले चलो और गंगा समनख भट्ठी के पास बैठारो—और चाहिये तो क़टार या चाकू—पर कछु न होय तो लोहे की तारी हाथमें देदेउ—रीते हाथ न चाहिये—और न अब बाहिर जान देउ।

रा॰ ...नी॰ प्रोहितानी बूढी होनमरी हो—लाला को नैंक

प्राहिता॰ आज पहले नो जुठार देउ।

... न चढेगी। रानी में भूल गयी।

नायन॰ बहूजी बुलाये सब ल...

रामदे॰ रोटी पानी तुमहूं सब खाय लेउ सांझ तो होई चुकी घूरो पुजवाय कें तब घर जाइयो ।

एक परोसिन॰ जिजी में फिर आयजाऊंगी—अबही उनन रोटी नाहें खाई—दुकान पर से आज अबेरे आये हैं मैं तुरत लौट आऊंगी ।

नायनि॰ बहूजी कहो तो घर रोटी मेंहू दे आऊं नेनाके काका सांझ की जोर गयेजनु कूं जान कहत हैं ।

रामदे॰ प्रोहितानी इन्हें जान देउ—तुम ये पूरी बची हैं सो खाय लेउ और रातजगे में रात हम तुम कोई सोये नहीं हैं सो थोड़ी देर सोयलेंय—घूरो तो दीया जुरें पुजैगो ।

प्रोहिता॰ अच्छा सोय रहो—एक अंगोछा लला की आंख बांधिबे के लिये चहियेगो और टूटो सूप और लोहे की कील चाहियैगी घर होय तो होय न होय मंगाय राखो ।

रामदे॰ अच्छा अब तो सोय लेउ जो कुछ होगी सो देखो जायगी ।

स्थान रामगोपाल का आंगन ।

बहुत से स्त्री और पुरुष ।

नवला॰ केसोंड़े में कितनी देर है मंजिल बड़ी कड़ी है—जो यहां देर भई तो राति में बरात पहुंचेगी।

जुगल॰ देर तो कुछ नहीं है कडेरा अभी मौर लेकर नहीं लौट्यो—ये चीजें पहले मगायलयी जातीं—जब तक बुलाओ दरजी को—बागो पहरावै।

चैनसुख दरजी॰ लाला जी मैं हाजर हूं—पांच मुहर और पचीस रुपया इनाम के मिलें—बालक पन से लल्ला जी की टहल में हाजर रह्यो हूं।

राम॰ अच्छा पांच रुपये और पांच टका पैसा देदेउ—(रुपये लोग देते हैं कपड़ा छीनते जाते हैं दरजी झगडता है)।

चैन॰ अजी भला इन चौखटिन पर सदां असरफी पाई हैं—लालाजी असीस को टका तो और मिल जाय।

राम॰मौर वारे ने बडी देर करी—नवला कोई आदमी इसे लेने भेजा है या आज यहां ही दुपहर होगा।

नवला॰ (इधर उधर देखकर) लाला यह आयो (मौरवालेसें) तू कैसो आदमी है—कहां कल सांझही आमन की कहि गयो हो कहां आज दुपहर तक पैंडो दिखायो यहां ला मौर—(मौर लेकर दुलहा के सिर पर बांधता है।

कुंदे कडेरा॰ अरे मोहि नेग तो लैलेन दे—भला यह कछू बात है।

नवला० लेतु रहिये—कारज होनदे—सूत पूरिबे के लिये हथलगुन बुलाओ कहां हैं। (हथलगू आती हैं)

राम० यहां तो सब काम होचुका—बाहिर चलो देखें बरात की गाडी और छकडा सब रवाने होगये या नहीं।

(कुछ मर्द बाहर जाते हैं भीतर की स्त्रियां निकल कर आंगन में आती हैं)

नायनि० आओ लली रामकुमरि—दो सरवा लै आओ—लला उन्हें लात से फोरते भये जांयगे—और तुम आयकें द्वार रोको अपनो नेग लेउ—और लला की अम्मा निकरोसी की नौछावरि हमें देउ।

रामकुमरि० (द्वार रोकती हुई) भय्या पांच मुहर द्वार रुकाई की देजाउ तब व्याहिबे के लिये जाइयो—(दुलहा एक महुर देकर आगे बढ़ता है)।

नायनि० अये तुम कैसी हो—दुलहा कहीं पायन चले हैं गोद लेलैंने दो—द्वार पर पहिलें गधा पुजैगो—गधा की पीठि पर लला बिठारे जांयगे।

एक स्त्री० इनके गधा पुजे है!—कुत्ता बकरा तो हमनु और बिरादरी में हू सुने हैं—गधा की पूजा यहां ही देखी है।

नायिन० यहां का अनोखी ही बात है—काऊ के व्याह

में गयी हो या नहीं—काऊ कें गधा काऊ के कुत्ता काऊ के वकरा पुजत नाहें तो व्याह योंही है जात हैं

धीमरि॰ पहले कूआ झकाय लेउ तव और कुछ करियो लल्ला की अम्मा नेंक कूआ में पांव लटकायकें वैठि जाउ (कूआ में दुलहा की मा पैर लटकाती है) लला अपनी अम्मासे कहो कि कूआ में मति गिरो तुमारे लिये वहू लावेंगे (दुलहा यही कहता है धीमरि झगड कर अपना नेग लेती है दुलहा विनायगी के लिये जाता है स्त्रीयां पीछे गाती जाती हैं वाजे वजते जाते हैं।

स्थान काशीपुर रतनलाल का घर।

सामन्ता नाई—चिन्तामणि प्रोहित।

नोंतहारी—पार परोसी लोग।

रतन॰ देखो तो इमरती होचुकीं या कुछ देर है—प्रोहित जी तुम तरकारी वनवाओ—तीन चार आदमी वैठ कर आलू नुकाओ और दही रायता यह सव या कोठे में रक्खो।

साम॰ लाला जी जनमासे की तजवीज कहां रही—वरात वडी भारी आवैगी—दिन२ में आज यह तजवीज होजानी चाहिये।

रतन० — जनवासो — नंदराम के बाग में होगा दस पंद्रह डेरा तनि गये—बिछोना पहुंच गये—घोडा और गाडी छाया में खडे होजांयगे —आदमियों के लिये तम्बू हैहीं।

साम० जनवासे की जगह आपने अच्छी सोची—मेरी भी वहांही की सलाह ही।

रतन० एक डेरा हमने वहां वरात के लिये जुदा खडा करया है वहां दाना घास रातिब—घडा दीवट मेख और सब सामान पहले सें इकट्ठा करादिया है—और दस आदमी जुदे याही काम पर भेज दिये हैं तू मसालें ठीक कर रक्खियो।

चिंता० मैंतो अब पारस में जाऊंगो—तरकारी पै कोई दूसरो आदमी भेजो—तुम उपासे हो—यहां कारखाने में बैठ जाउ —दो २ चार २ आदमी भेज दो सो रोटी खाय आवें — और काम के लिये तयार होजांय।

रतन० अच्छा—मैं बैठा हुं—तुम पारस में जाउ—देखो भाई सांझ होन आई अभी २५ मन की पूरी न हो पायीं न कचौरी भयीं—बरात आने पर सब लोग तमाशे में लग जांयगे—हम और काम में फंस जांयगे—भाई जल्दी करो।

एक वालक० (दोडता हुआ) बाजे बजत आवें हैं।

रतन॰ कहीं वरात ही तो नहीं है—कोई जाकर देखो तो (आदिमी बाहर जाकर आता है और आकर कहता है कि है तो साव वरात ही)।

रतन॰ सामन्ता से कहो नोतहारियों पर खवर कर देय आगौनी के लिये अच्छी तरह लडके वाले सवारियां तयार कराय कर चले जांय—और यहां जव तक एक कड़ाही पर कचौरी सिकैं दूसरी पर पापर और दालमोठ तलवाय लो—और जनमासे पर दस वीस आदमी और पहुंच जाउ जहां के तहां सवको ठहराय दाना घास रातिव सव वांट दो।

दो चार आदिमी॰ वरात आई घोडा और पालकी यह आय पहुंचे वड़ी भारी वरात है—कोई दस वीस तो हाथी हैं—घोड़नु की टुकरी वड़े वीच में हैं—रथ से रथ और मझोली से मझोली फस रही है—कोस भर सें तो वखेर होती आई है—छूछी अठन्नी रुपया दुअन्नी चौअन्नी पैसा फेंकते भये चले आये हैं—देखो न वह अगले हाथी पै दुतरफा थैली लगी भई हैं—और एक मोटो सो आदिमी चारों लँग मुठी मार तो आवै है—यहां दरवाजें पर आय कर महुर और रुपया की वखेर होगी।

रतन० रामलाल तुम जायकर रोक दो — समधी से हाथ जोड़ कर कहो कि दस्तूर होगया अव आगे वखेर का कुछ काम नहीं — (वहुत अच्छा कहकर रामलाल बाहर जाता है और सामन्ता प्रवेश करता है)।

सामंता० महाराज बड़ी जवर वरात है हाथिनु की रथनु की सुमार नाहिं तीन हजार आदमी से कम न होगो और वड़ी ऊजरी बरात है।

रतन० ऊजरी तो है परि इतने आदमी किसने बुलाये हैं तुमसे लगुनके दिन चलते२ कहदीनी ही कि बिरादरी और नातेदार के सिवाय और भीड न जोड लावें परन्तु तुम लोगों पर कहां जाय तव न—देखो तो यह वरात है दल के दल उठे चले आये हैं।

साम० महाराज बेटा वारे को व्यौहार वडो है इतनेऊ पर उनकी यह कहन है कि हम आधे से जादा व्योहारिनु छोड़ आये हैं॥

स्त्रियां० (छत पर बैठी गाती हैं और वरात देखती जाती हैं उंगली उठा२कर वातें करती जाती हैं) साजन आये ऊजरे बैठे हैं करकु विछाय—इत्यादि—समधी वह रह्यो पिछले रथ में दुलहा की पालकी के पीछे वरात वडी सुन्दर है — इतनी वडी यहां तो और आई नाहैं —

वखेर होती आवे है—अये किसुनी लीजो—मुहर और रुपया—हरिको हटियो—यह एक तुमारे नीचे है (वहुतसी रुपे ढूंढने को इधर उधर दौडती हैं)।

कुछ और स्त्रियां॰ चलोरी नीचे चलो वरात तो निकल चुकी थोडो सो काम रहिगयो है ठलुआ होंय तिन्हें ठाडी रहने दो

चिंता॰ (रतनलालसे) सरवत भिजवाओ वरात तंबुन में पहुंच गई डेरा दुरुस्ता होचुके—घोडा थान लग गये—वहली रथ अपने २ करीना से लोग लगाय चुके—तीस इन्तीस हाथी हैं तीनसौ घोडा घोडी हैं—चालीस पंतालीस रथ हैं—सवासौ गाडी हैं अडतीस छकडा हैं—हजार वा रहसौ लाला भाई हैं और अंदाज़ से दो ढाई हजार की भीर और है हां १० या पन्द्रह ऊंट हैं।

रत॰ अव है सो सही—कडाही दो और चढवाय दो—पचास मन की पूरी और उतर आवें और दो गाडी गंज को भेजो—घी और तरकारी और लेआवें और रातव के लिये कुछ और सामान लावें—और सामन्ता से कहो सरवत के लिये धीमर बुलावें

रामलाल॰ घास और दानों कुछतौ वट गयो अव वरात वारे झगडा करें हैं—छोटी २ घुडियां हैं और दानों छैर सेर मांगें हैं।

रतन० भाई मांगें हैं सो देउ।

गुलाब० सुनों साव ऊंटनु वारे बड़ा बखेड़ा मचाय रहे हैं मोंठ का भुस मांगें हैं-और चने का दाना और रातव-सेर २ भर घी और काली मिरच मांगें हैं-और तो सब है-मोठ का भुस कहां से आवै।

रतन० भाई जैसे बने तैसे राजी करो-बारोंठी के लिये देर हुई जाती है।

हरि प्रसाद० दाना तो बट गया-दो चार गाड़ीवान मिस्सा भुस मांगें हैं-सो कहीं से न कहीं से तलाश करेंगे। रातिव के लिये यह फर्द बेटा वारे के यहां से मिली है इसमें सेर भर घी सेर भर खांड़ सेर भर आटा। आध पाव काली मिर्च घोड़ा पीछे लिखी हैं-आठ मन घी खांड़ और आटा और चाहिये-दो सेर घी रथ वाले मांगें हैं और पाव २ भर हल्दी फिटिकिरी मांगें हैं-और जोड़ी पर तीन २ सेर आटा-हाथी-वान मन भर मैदा दो२ सेर हल्दी सांभर फिटकरी और चार बोतल शराब और दो एक चीज और मांगें हैं याद भूल गयी।

रत० भाई शराब तो हमारे बूतें पैदा है नहीं-न हम शराब देंय-हां रुपे दो रुपे नकद सब फीलवानों को

दे दो अपने आप जो चाहियें सो खरीद लें—और बाकी सामान गाडी भरवाय कर लेजाउ—जब तक मैं यहां दरवाजे की तयारी कराता हूं—उनसे कहो कि बरोनियां भेजें दरवाजे को देर होती है ।

— —

स्थान जनवांसा ॥

— —

सामन्ता—और दो चार घराती और बराती ।

सामन्ता॰ राजा साहब—बरोनिया भेजो और बारोठी की तय्यारी करो—बाजे बारेनु से कहदेउ तय्यार होंय ।

बराती॰ अभी डेरा भयो न दुरस्ता भयो—बारोठी के लियें बुलाने आय गये—मखें तक आयीही नहीं हैं अभी बहुत से बराती घोडा पकडें खड़े हैं दाने घास का फजीता जुदा पड रहा है ।

दूसराबराती॰ अरे कहीं दीया दीवटि है—अंधेरे में कपडा को ठीक न काहू चीज को ठीक—बरातें तो बहुत करी हीं परि ऐसी अंध धुंध हमने कहीं नहीं देखी ।

तीसरा बराती॰ नाई ठाकुर घडा किस के पास हैं—लडका वाले रस्ता चले आये हैं प्यास के मारे चिल्ला रहे हैं अरे घडा फडा नहीं है तो कुआ ही बताय कहां है

कैसी वेइन्तज़ामी है—किसी वात की सल नहीं ।

चौथावराती॰ कहां हैं लाला—दो घंटे हमें खडे२ होगये न मेख आवैं न दिया आवैं न वैठने के लिये जगह न चीज रखने के लियें जगह—हमने ऐसी वरात छोडी—या लियें हमें लाये हैं—ऐसे नालायक से पाला पड़ा है वरात तो और जगह भी हम गये हैं पर ऐसा अंधेर कहीं भी देखा नहीं गया ॥

रामगोपाल॰ सामन्ता अभी वारौठी तो तू रहने दे—जो चीजें यहां दरकार हैं वे जल्द भिजवाय जव तक दाना रातिव हम वट वायदें ।

नवल॰ दानो रातिव सव वट चुको दस पांच आदिमी झगडो कर रहे हैं उन्हें आप समझाय दें—उनमें जहांगीरावाद वारे ठाकुर वडे जोर पै हैं—ओर दो तीन रथवान मनाये नहीं मानें ।

रामगोपाल॰ अच्छा भाई जो कहें सो यहां से दिलाय दो हमारे संग में सव रसद मौजूद है—हमने केशवदेव से जभी कही ही कि अपने मेल के आदिमी लेचलो अव पराये दरवाजे पर झकर करनी पडी कि नहीं ।

समन्ता॰ महाराज अव देर मत करो—वारौठी के लियें

तय्यार होजाउ आखर लगन न सधी तो कुछ काम की बात न भई ।

रामगोपाल० सामन्ता खबर कर हम अभी आये—बाजे वारे—तय्यार होजाउ—पैक सजगये या नहीं तायफे तयार कराओ और लल्ला के मुहर बांधो—सामन्ता जा जल्दी जा (सामन्ता जाता है)

— —

स्थान रतनलाल का दरवाजा ॥

— —

मरदों की नीचे और स्त्रियों की ऊपर भीर लगी हुई है और स्त्रियां गाती हैं—साजन आये ऊजरे इत्यादि और वरात के लोग सज बज कर दरवाजे पर आते हैं ॥

पंडित विद्या० लालाजी कहां हैं—बुलाओ—और प्रोहित से कहो सामान लावें—सामन्ता पूजन की थारी यहां ला—शुक्लां वरधरं विश्नुं कहकर पंडित पूजन कराते हैं—और टकार करके अंगोछा भरते जाते हैं ।

सामन्ता० यहां चौक पुराई को नेग हमारो चाहिये ।

पंडित विद्या० अच्छा पूजन है जानदे ।

मनसुख भाट॰ राजतु के राजा महाराजा यह बड़ी चौखटि है—बडे आनन्द मंगल है रहे हैं—औसर को चूके ताहि ऊके महान है—हमारे आशीर्वाद को टका पंडितजी—और गहरी दक्षना मिलै—नरर सुरन होइ—नारि पति अतान घरर महाराज की जय रहै।

चिन्ता॰ यह सामान हैं—मोती—छाप—कलसा कवाय तोडा—और—२१ महुर और ५५१ रुपे—घोड़ा और ऊंट वाहिर ठाडे हैं पंडितजी हमारी दक्षिणा यहां समझि के मिले—ये राजा हैं और राम घर व्याहन आये हैं।

पंडित विद्या॰ (वरात के पंडित से) पाठकजी—आदमी बुलाओ यह सम्हार लेय और लाला के हाथसे हमारी दक्षिणा को संकल्प कराओ—और छींक पात ललाजी को चौक पर से हटाय कर पनिस में वैठाय दो।

सामं॰ पंडितजी लला अभी भीतर जांयगे भेजो मत—मेरे संग अपने नाई की गोद में भेजदो।

पंडित विद्या॰ ललाजी की एक आंख पर पट्टी कैसे वांध रक्खी है—आंखें दुखन आयगयी हैं क्या?

नवला॰ लला भांमरितु के पछिं भीतर जांयगे—हमारें पहले नाहें जांय।

केजरे कुछ घरात के सब अच्छे हे जांयगे—न हे जांयगे तो हमारे आपु के कहाबस की—उन भकुअनु से कोने कही ही कि तुम यहां जायमरियो—अब भामरिनु की तय्यारी करो—अंब से जल्दी मचावेंगे तब लगन सधपावैगी

रतन॰ अच्छा सामन्ता तू जा — येहां सब तय्यारी होचुकी है (सामन्ता जाकर फिर आता है)

साम॰ महाराज कुमर कलेऊ अभी नहीं पहुंचो और समधी बडे रिस होत हैं कि दो चार गाडी पीछें आई तिन के लिये अभी तक दाना चारा कुछ भी नहीं पहुंचायो—अब भामरिनु के लिये तब आवेंगे जब सब चीज पहुंच जायगी ।

चिन्ता॰ इनसे क्या कहै है—कोठार में से तुलवाय लेजा और एक भोलुआ में बूरो मेरे लिये लेतोआ—प्यास लगरही है ।

साम॰ अच्छा जो हुकम—आये—बाजे बजत आमें हैं बरात तो यह आय पहुंची—विना निहोरे भूख भामरिनु के लिये ले आई है—नहीं अभी बडे मनामने करवाय ते पंडित है जगाओ आंगन में बिछोना कराओ मैं आगे चलिके पूछूं हूं (बाहर जाकर फिर आता है)—अजी

वरोनिया भूल गये हे—सो लाये हैं—आमारिनु के लिये तो अभी लडका जगाओ है—खर्च वरदारी एक और डेरा में जाय सोये हैं सो उठाये हैं।

रतन॰ अच्छा या झगडे से ही पहले फुरसति पाओ और पंडितजी से पूछो कितनी देर है।

सामं॰ पंडितजी कहे हैं एक लगन जो अच्छी ही सो तो निकसि गयी—आधी के दस घडी उपरान्त कर्क लग्न आवेगी अब दो घडी रही जानो—एक लगन तब है।

रतन॰ अच्छा भाई जल्दी बुलाओ—और इसमें प्रीति की तयारी कराओ — तू फिरजा (जाकर फिर आता है)

सामं॰ लालाजी अबके मैंने ऐसी सुनाई सब के दम बन्द करि दीने आखिर उठते ही बनी—अब चलो भीतर परदा कराओ आमरिनु के लिये—ये आये—(नाई प्रोहित भाट ब्राह्मण घरात . वरात के सलाही—खर्च वरदारी—बेटा—बेटी वाले—भातई मान दोनों ओर के पंडित मंडप के नीचें आंगन में आकर बैठते हैं, लडका पश्चिम दिशा में खडा है और घरमें स्त्रियां गीत गाती हैं)

विद्या॰ सामन्ता पूजन की थालीला पूजन करावें — लला जी आचमन कीजिये — उं गंगणपतिगुंगवा मंहे—

प्रियनात्वा प्रियपाति ग्वंगवा महे — थोडी — रोरी और ला — होम के लिये समध कहां रक्खी हैं—कलश गणेश को प्रोहितजी और आगे हटाय देउ — ॐ षोडशमात्र का भ्यांनमः यहां सोलह टका पूजन के जुदे चाहियें—पंचओंकारेभ्योनमः पांच टका और लाओ नवग्रहनु को पूजन कीजिये — अक्षतं समर्पयामिनमः मुखवास ताम्बूलं समर्पयामिनमः धूपं दीपं दर्शयामि नमः ष्णु को पूजन करो — शुक्लाम्बरधरो — इत्यादि (इसी प्रकार एक२ देवता के दस२ पूजन कराय दोनों ओर के पंडित पैसोंसे लोटा भरते जाते हैं)

साम॰ पंडित और हू की खबर राखो ।

विद्या॰ वखत पर सव की खवर लैलोनी जायगी जल्दी मत करो—अभी हमें अपनो पूजन कराय लेन देउ अथवाराह्या उपानहा उप मुंचते अग्नौहवै देवा (यह मंत्र पढ पढकर) लला इस पट्टा पर वैठ जाउ (दुलहा वैठता है) अरे सामंता कलावा ला में पवित्री वनाकरं झटपट भामरि डलवाऊं ।

सामन्ता॰ पंडितजी कलावा पूजन की थाली में रक्खा है ।

विद्या॰ मिल गया भाई पत्ते के नीचें दव गया था—अथ वरं वृणीतेयल वंर्द्धवी देवा पवित्री देवता भ्योनमः

दक्षिणां समर्पयामि (रतनलाल) से लीजिये और यह कहिये यन्मयाभाषितं पूर्वं कन्या मनसि कर्मणि इदमर्घं मंगलैर्माल्यै रच्छिद्र करणायच वाचासु वचनं कृत्वा अहमेव प्रतिग्रही देवद्विज प्रसादेन वाच वाचासु मेवच—अर्थात् जो हमने अपने मन में सगाई के समय कहा था कि यह कन्या इस लड़के को देनी वह हमारा वचन देवता और द्विजों के प्रसाद से पूरा हुआ (महाराज सवा रुपया वाचा पढ़ाइ हमारी दक्षिणा दो)

रत० पंडितजी महाराज सवा रुपया तो व्याह पढ़ाई मिला करता है ।

विद्या० महाराज जहां सवा रुपय्या मिलता है वहां हम इस विध विधान से व्याह की वेदी काहे को रचते हैं और ये वेद के मंत्र अर्थ सहित कब पढ़ते हैं ।

रत० लीजिये महाराज (प्रसन्न होकर) देता है ।

विद्या० महाराज पांचों अंगुलीयों पर रोरी चावल लगाकर लड़के का मुकट चर्चो (रतनलाल चर्चते हैं) और पंडितजी ययंतवर्द्धनंवर्षचरंतंपरिपस्तुपरोचंतेरोचनादिभिः (यह मंत्र पढ़ते हैं और इसी प्रकार विष्टर—पाद्य विष्टर—अर्घ—आचमन और मधुपर्क का पृथक२

पूजन कराकर टकोंकी झोली दोनों ओर के पंडित भरते हैं और गोडों के नीचे दवाते जाते हैं कुछ लोटे में डालते जाते हैं) यहां गौका संकल्प करो।

रत०(एक मोहर हाथ में लेकर) बोलो महाराज संकल्प।

विद्या० अद्येत्यादि—अमुक मासे अमुक पक्षे शुभ तिथौ अमुक वासरे इमांगो मौल्य भूत सुवर्णमयीं दक्षिणां अमुक गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्य महंसंप्रददे।

रत० महाराज आपने सारीरात अपने पैसे वटोरने में ही विताय दी—न भामरि पड़ी और न होम हुआ।

विद्या० अभी महाराज हमने कितने पैसे वटोरे हैं अभी तो दो हिस्से विवाह वाकी है।

रतन० पंडितजी मैं तो हंसता हूं विधि से कार्य्य कराओ।

विद्या०सामन्ता समध और वैसांदर ला—और एक पत्थर और सूप और कुशा और वरोनियां यहां लाकर रख दे और लड़की को शीघ्रला (सामन्ता लडकी लाता है—समध वैसांदर सब सामान देता है और अपने चार टके मांगता है)

रतन० यहां विवाह के समय ब्राह्मणों की दाक्षिणा में नाऊ का क्या काम।

विद्या० महाराज यहां चार टके नाऊ के सयथ वेसांदर के सव जगह होते हैं।

रतन० (हंसकर) पंडितजी दोनों मिलतो नहीं गये (चार टके देता है)

वरांत का भातई० महाराज लगन तो वीत गई—भामरितु के लिये देर होगयी।

विद्या० हां देर तो है गयी परन्तु ऐसो कह्यो है कि दो घडी आगे पीछें तक वही लगन वर्ते है—कुछ चिन्ता की वात नहीं है (झटपटवेदी पर अग्नि स्थापन करके और अग्नि का पूजन करा कर) पूजन के पांच टका खेडा पतको यहां देने चाहियें।

रतन० (हंसकर) खेडापति भी व्याह में आन घुसे (पांच टके देता है)।

विद्या० (कुशंडी और ब्रह्माका वरण करके) चौरासी टके महाराज कुशंडी की दक्षिणा दो [रामगोपाल हंसकर देतेहैं और दोनों पंडित अपनेर लोटे में डालते हैं]

रतन० राम० [परस्पर] इन दोनों पंडितों का जैसा काम वना है ऐसा और किसी का नहीं।

विद्या० पुरोहितजी शाखोचार पढ़ो और पहिले लडके का पुरोहित पढ़ेगा।

सेढ़म० [सुपारी चावल लेकर] यंब्रह्मवदांतविदोवदंति परं प्रधानं पुरुषंतथान्ये विश्वोद्गतेतकारणमीश्वरंवा तस्मै नमोविघ्नविनाशनाय श्रीमान् साहन पति साहजी मनीराम प्रपौत्राय श्रीमान साहन पति साहजी गणेशीलाल पौत्राय श्रीमान् साहन पति साहजी रामगुपाल पुत्राय अगस्तं प्रवराय [चुप होकर सुपारी चावल रामगोपाल को देता है ।

स्त्रियां० खाख पढ़ा भाई खाख पढ़ा—अपनी माका भात पढ़ा (गाती हैं)

सेढ़म० महाराज इन स्त्रियोंने ऐसा रौला मचाया कि दक्षिणा भी रहगयी—शाखा की दक्षिणा पांच रुपये दो ।

रामगोपाल० महाराज १।) सवा रुपये का दस्तूर है सो लीजिये [सवा रुपया देता है]

चिन्ता० [सुपारी चावल हाथ में लेकर] गंगा गोमति गोपति गणपति गोविंद गोवर्द्धनो गीता गोमय गोरजा गिरिसुता गंगादिनद्यादयः गायत्री गरुडो गदाधर गया गंभीर गोदावरी गंधर्वा ग्रहगोप गोकुलगणाःकुर्वंतुनो मंगलम्—श्रीमान् साहनपति साहजी हरनंदमल प्रपौत्री श्रीमान् साहनपति साहजी हरकरण पौत्री श्रीमान् साहनपति साहजी रतनलाल पुत्री लाडी वेटीचिरंजीवि मंगलंभवतु ।

स्त्रियां॰ वेद पढ़ा भाई वेद पढा पोथी पुस्तक सभी पढ़ा (गाती हैं)

चिन्ता॰ पांच रुपे शाखा की दक्षिणा दो (रतन लाल—सवा रुपया देता है)

विद्या॰ महाराज लोई में जो द्रव्य रखना होय सो रक्खो घर के स्त्री पुरुष आकर लड़की के हाथ पीरे करके संकल्प करो (रतनलाल आदि लोई लेते हैं और हाथ पीरे करते हैं) और विद्यासागर संकल्प पढ़ते हैं) ओं तत्सदद्य ब्राह्मणोऽहि अमुकगोत्ररतनलाल नामो हंइमां रेवती नाम कन्यां यथा शक्त्यालंकृतां अमुक गोत्रायराधावल्लभ नाम्ने वरायतुभ्यमहं संप्रददे कोदात् कस्मायादात् ।

रतन॰ पंडितजी हमें पांत जिमानी है जल्दी करो ।

विद्या॰ पाचों पट्टियों के घीसे स्वाहे देकर—(रामगोपाल से) महाराज भामरि ही शेष रही हैं पूजन होचुका होम होचुका कुशंडी होचुकी—अब होमकी दक्षिणा हमारी देकर लडका लडकी को खडे करो भामरि डल वावें ।

रामगो॰ पंडितजी हमारी तो थैली खाली होगई पर आप की दक्षिणा पूरी न हुई हम तो १० दस रुपये के

टकों में विवाह करके अलग होजाया करें हैं ।

विद्या॰ महाराज ऐसे विधि विधान आपने काहेको देखे होंगे ।

रामगो॰ पंडितजी ठीक कहो क्या दक्षिणा चाहिये ।

विद्या॰ पांचों पट्टियों के पांच रुपये देदो—(एक रुपया देकर हाथ जोडता है—और पंडित जी दक्षिणा लेकर और लड़का लड़की को उठवा कर भामरि डलवाते हैं और कुमारी भ्राता यह पढ़ते जाते हैं और स्त्रियां भामरों के गीत गाती जाती हैं)

एक बाबाजी॰ पंडित जी हमारे सुमेर की पूजा के पांच टके दिलवादो ।

विद्या॰ महाराज इसे पांच टके सुमेर पूजन के देदो (रामगोपाल देते हैं)

रत॰ पंडित जी अब तो सब काम होचुका इनसे कहो उठें और लडका लड़की को भीतर भेजो ।

विद्या॰ महाराज अभी सप्तपदी वाकी है—और वामांग करना वाकी है और दोनों ओर के पंडितों की कर्म कर्त्ता की दक्षिणा वाकी है ।

रामगो॰ अच्छा पंडितजी जो वाकी है सो सब करो जल्दी करो ।

विद्या० सात जगह चावलों की ढेरी करके और एक मिपे द्रूऊर्जे त्रीणिरायष्पोपाय चत्वारि मायोभवाय पंच पशुभ्यः षडऋतुभ्यः सखे सप्तपदीभव (यह पढ़ कर पंडितजी वधू वर से वचन कहलाते हैं)

प्रथम वधू ७ वचन ॥

छोटे वडे यज्ञ करो तो मुझसे पूछकर करो तो मैं वामांगआऊं १
कार्तिक माघ वैशाप आदि का स्नान व्रत उद्यापन करो तो मुझसे पूछकर करो तो मैं वामांगआऊं २
युवा और वृद्ध अवस्था में मेरा पालन करो तो मैं वामांगआऊं ३
थोडे या वहुत द्रव्य का लेना देना धरना ढकना मुझसे पूछकर करो तो मैं वामांगआऊं ४
अजा गौ भैंस आदि पशुओं का वेचना खरीदना आदि मुझसे पूछकर करो तो मैं वामांगआऊं ५
छहू ऋतुके वस्त्र भूषण आदि वनाओ तो मैं वामांगआऊं ६
सात सखियों में वैठीहोउं और मुझसे कुछ अपराध

वनजाय तो उस समय मेरा मानभंग न करो तो मैं
वामांगआऊं ७ वर कहता है दिये

(फिर वरसे ५ वचन)

बगीचे में अकेली न जाना १
कोइ मद्यपिये चढ़ाआता हो तो उसके सन्मुख न
जाना २
विना बुलाये पिताके भी घर न जाना ३
अपनी सहेलियां में बैठकर जो वे हंसे तो हंसना
अकेली न हंसना ४
अपने को दुख होने परभी हमारी आज्ञा भंग न
करना ५

विद्या० महाराज सात पांच बारह मासे सोने की दक्षिणा
दीजिये (रामगोपाल भौंह चढ़ाकर बारह पैसे देताहै)
विद्या० सामन्ता लड़की को वाम अंग की ओर बिठाय
दे सामन्ता बिठाता है)
काशी० पं० पंडितजी अपने जिजमान से हमारी दक्षिणा
दिलवाओ और आधे पैसे हमारे बांटदो।
विद्या० [आंख मार कर] अभी ठहरो [रामगोपाल से]
महाराज कर्म कर्ता की दक्षिणाओं का संकल्प दोनों

ओर से होना चाहिये [रतनलाल दो रुपया हाथमें लेकर संकल्प करके काशीनाथ पंडित को देता है और रामगोपाल चार रुपे संकल्प कर के विद्या-सागर पंडित को देता है और ५५१) भूरसी के संकल्प करके ब्राह्मणों को बांटता है लड़का लड़की भीतर जाते हैं)

रामगो॰ तो यह ब्राह्मणों के लिये संकल्प और कराय दो-शहर भरमें जितनी देहली हों-उनके लिये पांचर वर्त्तन और पांच ही पांच रुपे-यह थैली मोजूद है और जिस किसी को दिलाना होय सो बताते जाउ हरि प्रसाद जल्दी देकर निवटो बहुत दिन चाढ़ि आया।

रतन॰ (और उसके सलाही मिलकर)-यहां पर हमारे ये हक्कदार हैं-जो चाहो सो दे दो-परन्तु इतनी हमारी अर्ज है हमारे मुहकी तरफ देखके दीजिये आप तो बड़े आदमी हैं-गुरू-खरापात गंगा पिरोहित-मथुरा वासी-पुष्करजी के पंडा-पिरोहि-तानी-रसोईदार-नाई-बढ़ही-माली-लुहार-मनिहार दरजी-बारी चमार भंगी-कुम्हार यही सब हक्कदार हैं-और जो कोई रहिगया होगा-तो मालूम होगी इन्हें आप देकर जल्दी जनवासे को जांय और इतनी

हमारी हाथ जोड के अरज और है—अब पांति के लिये आपदेर न करें—कलरात रातव और दाने घास के झगड़े में पांत रह गयी—सो हमारी आंखें ऊपर को नहीं होतीं।

बराती॰ सब खाय पीय चुके हैं अब तो न्हाय धोय के देखी जायगी।

एक टेढ़े बांके बराती॰ तुम घर२ के पांति परोसा जो चाहो सो खाउ बराती तो कोई आवै गा नहीं—बागमें अंगा करेंगे और खायंगे—कलसे सब नेहले टेहले होरहे हैं किसी ने खाने की भी पूछी है—पच्चीस तीस कोसकी लोग मंजल करकें आये। चना तक चबानेको न मिले—कोई बेशरम बराती होगा सो आवैगा—लाला जी व्याह था सो होगया—अपने२ घर को चलो।

घराती॰ आप को ऐसी अतिराजी न चाहिये—हमारी अंपति हैजायगी—हमारी तुमारी लाज एक है—हमारो कसूर माफ करो—और न्हाय धोय करि रूखी सूखी साग सातू जो कुछ है सो भोग लगाओ।

एक बराती॰ जो लगावै सो जाने—हमारो तो प्रयाग में मुकद्दमा है हम तो अभी रेल पर जाते हैं—तुम जानों तुमारे समधी जाने।

(वड़े निहोरे से वरात पांत के लियें आती है ।
और भूखके मारे पत्तल तक चाटें जाती है)

रतन० वरात तो खाचुकी वरात वाले सव एक संग विठाल दो—और आलूकी तरकारी निवटि गयी है सो कोठे में से दो मन आलू निकाल कर छोंक लो और वडाहर की तय्यारी करो हलवाई वुलाओ—पानी भरवाओ वडाहर की पांति अच्छी वनें जिससे यह काग्रली दूर होजाय ।

स्थान रतनलाल की हवेली ।

जसवन्ती और वहुतसी स्त्रियां ॥
और छोटे२ लड़का लडकी ॥

जसवंती० रमला सव रोटी पानी खाचुकीं होंतो कह दे चढावा देखिलें फिर इसमें से कुछ चीज निकल जायगी ।

रमला० सव आवें हैं जव तक प्रोहितानी से कहो डिव्वा खोलें—जमुना और गोमती में आज लडाई हैपडी है ।

जसवं० तोहि मालूम है क्यों लडाई होपडी है ।

रमला० कछू वात होयतो वताऊं—सव की नाक पै रिस धरी है—तामें ये तिहारी जमुना तो परमेश्वर को

लोक हैं--गोमती को लरिका बूरेके लिये रोवतो--मैंने एक खमडा में ते झारिके दे दीनों--याई वातपै आओ तो फिर जाउ काएको--अये हमारी छोरी सांझ रूखी पूरी खाति रही तव काऊ की छाती न उदरी कि एक डेली गुडकी तो धरदें--औरनु के लिये वूरो हालत कांपत आय जातु है--ऐसेंही सवेरे ते गारी दयो करी अव अनुआ करिके वैठी हैं--औरनु मैं वुलाय लाऊंगी उनके नौरें तो ललकरा खायवे जाति नाहूं।

जस॰ इन जमुना को वुरो स्वभाव है--नेंकर वात पर लड़ाई रोपि देतें--प्रोहितानी तुम झाबो खोलो--हारि झखमारि के सव आप आजायगीं--मैं कोनर की खुशामद करूं तुम देखनहारी हो यहां काऊ वातकी दुजायगी है इन्हें सबनु वुलाय कें हम तो ऐसे नाकै आये हैं कि--हमारो भगवान जाने है कोई फरंकिकें छत्त पर जाय वैठे हैं--कोई लडिकावारेनु पै [illegible]स उतारे है किसी के रोटी के लिये रोज मनामने करने परें हैं हमें तो अपनी रामकुमारि और जेदेवी को स्वभाव अच्छो लगै है काऊने रहत तलक नाहें जानी।

प्रोहितानी॰ वहूजी यह डिव्वा गहने को है--अये यह तो

बहुत भारी है–समधिन ने एक आध ईंट तो नाहे धरि दीनी ।

नायिनि॰ प्रोहितानी सगुन साथ कहा बको हो–सूधे देखो जो ।

रामकुमरि॰ चाची यह चादरि तो छोटी है–दुपटी बनती तब ठीक होती–लालच के मारे डेढ पटी बनाई है ।

जयदेयी॰ अये दुपट्टा याहूते गयो है–जामें चटक तलक नाहैं तामें तो बडे आदिमी हैं ऊंची दुकान फीको पकवान ।

रमला॰ यह बहूजी कहा कपडा है–में तो जानूं कीम-खाब है ।

कोकिला॰ चलि बैठ–जानें न पहचानें–देखी बहना–दुपट्टा पै क्रिनारी पुरानी धरि दीनी है–गोटा सब पुरानो है

नवली॰ जिजी तुमनु बडी लखाई मारी–मं तो यह देख रही हूं गहनो सब मगेंनू है–एक आध चीज नई है ।

गुलाबो॰ अये रानी सब चीज में चोजई चोज है चार देखो तो योंही रह जाउ सेर२ आध२ सेर मेवा है–महदी कलाये को नाम तक नाहैं–कछू वहां की लुगाई सिल बिल्ली मालूम परें हैं–(परदा करादो भीतर उठ

चलो बरात के आदमी आवें है—सब भीतर जाती हैं)

—

स्थान काशी पुर ॥

—

कभी जनवासा कभी रतनलाल का घर

रतन॰ पांत का सामान तयार होचुका—दिन थोडा रहगया है जल्दी जाकर नौतनी कर आओ। बड़ाहर की पांति दिन में होजाय—सामन्ता जा सब से कहआ तयार होजांय। (सामन्ता बाहर जाकर आताहै)

साम॰ लालाजी सब तयार हैं चंदोसी वारे न्हाय चुके हैं तिलक लगा रहे हैं कपडा पहरिवे की देर है और आये—आप कोठारी बुलावें पत्तलें ये मेरे पास हैं सुपारी—पान भांग तमाखू दोनों इलायची—और बतासे इन पर रखवाओ—मैं तब तक पंडितजी को बुलाय लाऊं (मुंह फेरकर) लो पंडितजी तो आप ही आगये—चंदन राय तुम प्रोहित और दो चार आदमी और नौतनी को सामान उठाओ। सब लोग तय्यार खडे हैं—चंदोसी वारे महमान कपडा पहर चुके होंगे उन्हें रस्ता में संग लेते चलेंगे।

जगन्नाथ रामचन्द्र॰ हां ठीक है चलो—और यहां कह चलो

पांति की तय्यारी हो रहे—'सब बन ठन कर जाते हैं—और नांच में चूर बरात को जनवासेमें बैठा हुआ देखते हैं—घरात वालोंको देखकर सब उठकर जगह देते हैं—और फिर नाच होने लगता है)।

चिन्ता॰ महाराज नाच तो होता ही रहेगा कारज कराते जाउ नंदराय पंडितजी को और हाट आमन देउ

(पंडितजी हटकर पूजन कराते हैं)

विद्या॰ ॐ श्री गंगणपतयेनमः पंचओंकारेभ्योनमः. अर्व-समर्पयामिनमः मुखवासताम्बूल पूंगीफलं समर्पयामिनमः सुदाक्षिणांसमर्पयामिनमः (इसी प्रकार अनेक बार पूजन करा कर दाक्षिणा लेते हैं) (रामगुपाल से) पूजन तो हो गया—अब हमारे जिजमान आप से यह विनती करें हैं।

शोटोरःज्ञानधनःप्राथनगुणकृतध्वांततूलस्यशुशुः कांताराणां कृपाकुःश्रुतिविषयासतांभाजदाप्तोसमर्थः योगक्षेमश्चव श्रोविंदातमुपगतायुष्मदायश्वसंघःस्म्यनास्माकंकुलागा रनगरमनसांचकरोतिप्रतीतिम् अर्थात्

त्यागी और ज्ञानका समुद्र और सत्वगुण रजोगुण तमोगुण के किये अंधकार रूपी रुईके नष्ट करने को अग्नि के समान और वन वासियों को सूर्य रूप

और वेदके विषय (धर्म) रूपी कमल के प्रकाश करने में समर्थ और योगक्षेमों (अलभ्यवस्तु का लाभ और लब्ध की पालना) से प्रसिद्ध हुआ और विष्णु का स्मरण करने वाला जो आपका समूह है वह हमारे कुल घर—नगर—और मन को पवित्र करता है ।

काशी० सुपारी चावल लेकर (रतनलाल से) हमारे यजमान रामगोपालजी आपकी विनती करते हैं ।

श्लोक

सद्भक्त्यया।विनयेनसूनृतगिरास्वावासदानेनच—स्वाद्वंभोभिरनंतभोज्यरचनासंभारसंकल्पनैः आतिथ्यंयदकारिपूर्वदिवसेतेनैवतुष्टावयं—भक्तिंचाद्यतनींविलोक्यभवतांस्तोतुंकथंशक्नुमः १

अर्थात्

उत्तम भक्ति और नम्रता और कोमल वाणी और सुन्दर निवास देने और सुन्दर जल और अनंत भोजन की सामग्री की कल्पना से जो हमारा सत्कार पहिले दिन आपने किया उसी से हम संतोष को प्राप्त होगये थे फिर आज की भक्ति को देखकर हम कैसे स्तुति करने को समर्थ हैं ।

नंदराय० महाराज जय रहै—वडे आनंद मंगल है रहै हैं

यह सब सिरदारी बैठी है हमारे जिजमान या तरह आपसे विनती करें हैं।

देहि कहा तुमको हम रंक नहीं नृपजू तुमरे मुख लायक। कौन सनाथ दया करि दीन भये सब भांति सो नाथ सहायक। विनती के सिवाय कहा हम पै हम तो हित से चित्त से गुनगायक। जन जानि के राखियो नेह सदा हमरे कुल के प्रभु आनंद दायक

गंगाराय॰ हमारे जिजमान हू महाराजा ऐसें विनती करें हैं।

दीनों कहा न हमें तुमने जगकी सबरी हम संपति पाई। धनकी गज बाजेकी कोन कहे मुख एक सों जाति न दाति गिनाई हम दीनतु सों हित मानि महा पदवी हमरी नृप नाथ बढ़ाई। मन आनंद आज समात नहीं लखि पूरब जन्म के पुन्य सहाई।

सामन्ता॰ पंडित जी जिसके नेगदेने हैं सो देदेउ और जल्दी उठो पांति दिनमें होगी—राय लोगनु देउ—टकार पत्तलवालों को देउ—पांच टका हमें और देउ—(देले कर सब उठते है और सामन्ता बरात से पांति की कहता है) आप नाच थोडी देर बंद करदें और पांति को चलें।

कुछ बराती॰ चलो आते हैं—दिशा बाधा के लिये कुछ

आदिमी गये हैं कुछ जांयगे तय्यारी कराओ आये।

और बराती॰ पांतको जब चलेंगे साहब पहिलें दाना घास भुस—और रातब आजायगा--नहीं कलकी तरह हमारें कोन मूंड मारेगा।

साम॰ सब आजायगो—भला ऐसी बात है—आप चलें।

बराती॰ कोई बराती पैर न देगा जबतक दाना रातिब सब न आजायगा कहिदीनी साब चलौं२—चलेंकेसें (सामन्ता बरात से घरात को जाता है)

साम॰ लालाजी बरात वाले पांति को नहीं आते हैं—पहलें दानों घास मांगे हैं।

रत॰ एसी कहा हाथा चांटी हैं—तू फिर जा और कह दे कि पांति के लियें आप चलें दाना घास सब पहुंच जायगा और पांति के लिये रात करनी है तो तुमें अखत्यार है—और प्रोहितजी को संग लेता जा—जैसें बने वेसें लेआ—(जाकर फिर दोनों आते हैं)

सामन्ता॰ और प्रोहित दोनों॰लालाजी बराती तो काटने को दोड़ें हैं —तुमारे समधी की कुछ चले है नहीं दो चार ऐसे बिगारा या बरात में आये हैं कि आप से क्या कहैं—गाली जुदी दें हैं—और कूदें जुदे

हैं—अब यह ठहरी है कि कल की बराबर सब चीज जनवांसे में दाने रातिब के लिये जमा करदो तब आवेंगे ।

रत० जाने दो सुसरे नहीं आवें हैं तो—हम अब बरात राखते ही नहीं कहदो पालकी भेजदें और कारो मुंह करें—हमने पहले ही या नाऊ केसें कही हो कि तू सबर जगह लड़का देखने जाइयो परि पारको नाम मत लीजियो—इस भले मानस ने न मानी ऐसे भले मानस हैं साब ऐसे भले मानस हैं साब हम तो जाने हैं—कबके धन्नासेठ हैं—वही बात हमारे आगे आई—घरातवालों को पांत जिमाय दो बरात पांत के लिये नहीं आवे है तो कूआमें जाय ।

दो चार घराती० (रतनलालसे)तुम क्या करते हो बने बनाये व्याह को बिगारें देते हो—लाला साहब आप अपनी ज़बान से कुछ न कहें आप जानते हैं बेटी वाले का सब तरह पल्ला नीचा है—आप चुप बैठे रहैं हम सब बन्दोबस्त किये देते हैं सामन्ता दस पन्द्रह आदमी बुलाले और तोला बुलाले अभी हम दाने रातिब का जनवांसे में ढेर कराये देते हैं देखें बराती कैसें पांत के लिये नहीं आवें हैं ।

सामं॰ लाला साहब आपने बहुत अच्छी विचारी—बस यही बराती कहते हैं—हम विना कहें आप के कहि आये हैं कि भेजें हैं—और देखो आप यहां से भेजें—मैं अभी वरात को लिये आऊं हूं—(बाहर जाकर आता है और कहता है (सामान सब पहुंच चुका बरात आई—आप विछोना करावें

(इतने में धधड़र करती हुई वरात आती है—और पांत के लिये वैठती है—और पत्तलें परसी जाती हैं।

पालकी के कहार॰ साब हमारे आठ परोसा चाहियें।

परोसने वाले घराती॰ अच्छा ठहरो मिले जाते हैं।

हुसेना नक्कारची॰ लालाजी तीन परोसे हमारे दीजियो।

प॰घ॰ मियां—पहलें खाय लेउ तब पीछे की सामा कीजियो—एक परोसा लेउ तो यह लेउ नहीं जितने समधी दिलावें उतने लेलीजियो।

रंडियों के आदमी—समधी से कहो—हमारे साठ परोसे मिलें एकर तायफे के दस२ परोसे हुए।

प॰घ॰ अरे—भले मानस हो—दो मन आटा दाल—बीस सेर घी दससेर बूरा—सवेरे ही लेचुके हो अभी नीयत नहीं भरी।

दो चार बराती॰भाई इनके परोसे जरूर मिलने चाहिये

सब जगह लेते हैं—कुछ नयी बात थोड़ी है—इलाही जान और प्यारी जान के वे आदमी बैठे हैं उनको जरा अच्छी तरह देना—और सब सामान भेजना

हाथीवान॰ हमारे पचास परोसा हमें देदो—औरों को पीछे देते रहना।

प॰घ॰ थोडा धीरज करो सबको एक तरफ से दे जाते हैं

रथवान॰ रथ पीछे पांच परोसा हमारे चाहियें हमारे आगे खाने को मत परसौ पहलें परोसा दे दो।

प॰घ॰ पांच परोसा दे दो—लूट है जो आवै है सो ऐसी ही बातें करता आवै है—दो२ परोसा मिलेंगे चाहे ले चाहे मत ले।

रथ॰दो कैसें मिलेंगे—हमनें और बरातें नाहें करीं लाला को पूरी२ में जी निकस्यो जाय है—हमें परोसा फरोसा नहीं चाहिये—तुम अपनी पांति परोसा सबधर छोड़ो—(पत्तल फेंककर उठ भागता है)

प॰घ॰जान दो सुसरे को—किस२ की खुशामद करें एक२ सौ सौ मन को है—जैसे बिगारा इस बरात में आये हैं वैसे हमने तो कहीं देखे नहीं हैं।

गजाधर सिंह बिगारा ठाकुर॰सुसरा तू और तेरा बाप यह क्या बोलचाल है—सब बरात वारेनु बेटीकी गारी

नारि पकर लेय और एक पचास जूता मारे — कमी-
नटा सुसर को यह मिजाज कि हमारी वहनि वेटी
एक करन लग्यो — लो उठो हमने ऐसी पांति
छोडी — विच्चोंद नालायक न भलो देखें न बुरो
देखें (ठाकुर तड़क कें उठते हैं उनके संगके लोग
आस पासके लोग और फिर सब वरात उठती है)

रतन० (घवराता हुआ दोडकर आता है उसके संग और
घराती दौडे आते हैं — और ठाकुर के आगें हाथ जोड
कर पगडी पैर पर धरने को उतारता है) ठाकुर साहव
अव कसूर माफ करें आप हमसे वीस वातें कहलें
लोंडे हैं न किसी भले को देखें न बुरेको — हमारी
वात विगारेगें — उनका क्या विगडैगा — (ठोंडीमें हाथ
डालकर विठाते हैं आप वेठें हमारी अपति होजायगी

गजाधर सिंह० वैठनें को तो वैठे जांय हैं — परि लाला
साहव हम इतनी वात पर एकके दो करिडारें —
तागत है किसी की जो हमसे तू कहिजाय — हमनें
जहांगीरावाद के व्याह में एक वनियां को छोरा
लिपिरिर करतो सो यही तरवारि ऐसी मारी कंधा
पै से दो होगये — रजपूत को छेडिवो और सरको
छेडवो एक है — (वरवराता हुआ भोंहें चढ़ायें लाल

आखें किये वेठता है और दस पांच घराती हाथ जोरें आगें खड़े होते हैं — सव परोसा दिये जाते हैं और पांति परसी जाती हैं)

रतन॰ ठाकुर साहव के लिये वूरेको वड़ो खमडा लाओ और सिन्नी अच्छी तरह परोसो — उधर कोई दही परसि आया ।

केशव॰ रायतो लाओ — एक आदमी से कहा कचौरी वाहर लेजाय — यह पापड जव तक कोन ले दोडा ।

वराती॰ नुकतों को रायतो इतमें लाओ ।

दू॰व अजी पानी वारो कोन है — यहां भेजो ।

स्त्रियां॰ (वाहर झांकती जाती और गाली गाती जाती हैं) तेरे व्याह भये कै धरेजे रीविल्ली परि कूंइ — कूंइ — कूंइ तुम चादरि ओछी लायेरी विल्ली परि कूंइ — कूंइ कूंइ इत्यादि ।

वराती॰ (स्त्रियों की गाली की ओर कान लगा कर ओरों से) या उगटा पेंची को सुनते जाउ ।

दू॰व॰ उगटा पेंची नाहे — पांतिमें स्वाद याही से आवे है — तुम जानो कहा — विना गारी के पूरी कोन काम की देख वह वडी नथवारी परदा खोलकर सींग दिखाय रही है ।

ती० व० अजी एक पीरे दुपट्टा वारी ने अभी लक्ष्मीनारायण की पीठ में बेलन मारौ — तुम देखौ तौ सही कैसी सैर है रही है — ए यहलो वाने परदा हटाय दीनो।

स्त्रियां० अरी बेलन और ला—यह बेंजनी पाग बारो कैसी सैन चलाय रह्यो है—अबके निपूते के मूंड में लगामन दे—लुगाईओ गारी गायें जाउ (मेरे सारे बराती ऐसे चितवत हैं जैसे बिले में नौरा—तनक मन लेत है ललचइयां—बहुरि मन लेतु है ललचइयां (इसी प्रकार बुरी २ बकनी गालियां गातीहै—बराती ठठोलिहाई कर ते जाते हैं और खाते जाते हैं और स्त्रियों के भाई बंद सब सुनते हैं और प्रसन्न होते हैं बरात खाकर ताकती झांकती उठती है स्त्रियां चिल्लार करगाती हैं)यह समधी हू क्यों जाय मेरो पोंमचरा—मेरे—मनामन जाय—मेरो पोंमचरा (बरात बाहर जाती है)

रतनलाल के बाहरले चौक में शामियाना तना हुआ है बिछोने बिछे हुए हैं और नाच होरहा है

रामगो० प्रोहितजी पलिका की तय्यारी कराओ—बरात सवेरी बिदा होजाय तो अच्छी है—चंदौसी में हमने

रसद इकट्ठी कराई है वहां तक दिन में पहुंच जांय तौ अच्छा है ।

चिन्ता० यहां कुछ देर नाहें—आप यहां कारज करावें हवेली में परदा होने की देर है—जब तक आप मिलनीकी फ़र्द बनवावें ।

रामगो० हम अपना सब काम तयार कर चुके हैं—तुमारी तरफ़ से जो कोई या काम को करैं—उन्हें लाला साहब से कहो यहां भेज दें ।

चिन्ता० हमारे तो आधे व्याह के मालिक भातई ये बैठे हैं—जो ये करेंगे सो होगी (भातईसे) आप जब तक फ़र्द देखें मैं बड़े लाला को बुलाये लाता हूं ।

भातई० फ़र्द देखलीनी है—या में तौ सैकडों नाम ऐसे हैं जिनको पतौ तक नाहें—हम तौ जो यहां मोजूद होंगे ताकी मिलनी देंगे ।

चिन्ता० (रामगोपाल से) लालाजी हमारे लाला कहते तौ वाजिबी हैं ।

रामगो० वाजिबी तुमारे जाने हैं कि हमारेजाने—हम जिन के यहां से घर बैठे लेते हैं उनको बिना दिलाये कैसैं बनैगी ।

भातई० बनें चाहे न बनें—आप बड़े आदिमी हैं दूसरे की

सम्वाई देखनी चाहिये-आपकी होड़ भला हम गरीब आदमी कैसे कर सकें हैं।

रामगो० अच्छा तो जानदो-न सही-हमें तो न मिलनी की जरूरत न पलिका की जरूरत-हम पालकी भेजें हैं लड़की बिदा कर दो ॥

रतन० पान फूल है सो हाज़िर करेंगे-हमें आप निबाह लें आपके मुह लायक हम नहीं हैं।

मानि० और बातें लालाजी हमने सब मानी है मिलनी में आप कोई बात न कहैं-बिगड़नी बिगड़ो और सम्हरनी सम्हरो इसमें हम इनकी भी न चलने देंगे तुम पर सम्बाई नहीं है तो समधी की एक मिलनी दे दो और और झगडे में मत पडो।

रामगो० भला आप सबकी मिलनी न होगी-तो हमारी ताकत है जो हम ले सकें।

भातई० क्या खबर है दोनों समधी समधी एक होजाउ।

एक बराती-एक को एक ही हैं-जिनकी पेट की आतें बटी हैं उन्हें दो कोन कहै तुम पतिखउअनु के पीछे आपस में बिगाड़ दें-नहीं जी जो आप पै होय सो देउ एक पैसा दोगे तो हमारे लियें असर्फी है-और एक तगा सोने का तार है भला यह कुछ

कहने की वात हैं हम यह लेंगे वह लेंगे ।

मानि॰ तुम केसी मिलती झुलती कह देते हो देखें भला तुम मिलनी कराय लेउ—हम हिरगिज तो होने ही नदेंगे। ये तौ कोई कहते नहीं हैं हम कोनसे मुंह से औरों के यहां मिलनी मागेंगे उठौजी देख लीनी शेखी—वडे एक खक्खा साहि ।

दो एक वराती॰ लाला वैठो—तुम कहोगे सो करेंगे यह वात नहीं है कि तुमारी विना राजी कोई बात होय. तुम इनके भी सरदार हो—और हमारे भी सरदार हो वुलाओजी वडे लाला को (वड़े लाला के कान में) ये. अवनं मांनेंगे—दो एक विगारा हैं नने व्याह को विगाडा चाहते हैं ।

रतन॰ [अपने मुनीमसे] रुपिया जादा है नहीं—अभी वहुत खर्च करने हैं—व्याह की और आंधी की पिछारी भारी होती है—परन्तु खैर एक थैली में कुछ रुपे हैं सो निकाल लाओ—और नंदराम वजाज के यहां से २५० वडे और ३०० छोटे थान ले आओ और ४ कड़े और २ तोडा सिंदूक में रक्खे हैं उन्हें किसी के यहां रखकर हजार वारह सो रुपे और लाओ नहीं आज अपति भई (प्रकट) रायजी कितमें घूमते फिर ते हो मट्ठा लाओ और मिलनी के लिये खड़े करते

जाओ—सामन्ताको और बुलालो (सामन्ता बुलाने से आता है)

सामन्ता० लालाजी भीतर से यह कही है कि लड़िकनु कुमर कलेऊ के लिये लिवाय लाओ।

रत० अच्छा तू तो यहां रह—बरात के नाड़े के संग सब लड़के भिजवा दे—और पिरोहितजी को संग करदे यहां मिलनी भी होती रहै और पालका होही चुका है—लड़के भीतर हांआवें और कुछ खांपी आवें पर देख यह कह दीजिये कोई लड़की वाली इन्हें छेड़े न।

साम० महाराज भला ऐसी हेसके है—दो चार लड़िका डरके मारे नाहें जांय सो मेंने समझाय दीने हैं (लड़कों को लेकर भीतर जाता है)

स्थान आंगन ॥

दुलहा और बहुत से लड़के खाते जाते हैं और डरके मारे इधर उधर देखते जाते हैं।

चुन्नी० (लड़कों से) लेउ लला यह तुमारी माके दूधको राय तो है—

एक लड़का० तुमारी माके दूधको है तुम ही खायलेउ।—

प्रोहित० ले छिनरी के ऐसी इमरती देखीवी न होंगी (दुलहा से) लला तुमारी मा याद करती होंगीअकेली कहां रहगईं हैं हमने तो सुनी ही—व्याह से पहले भाग गयीं (दुलहा लज्जाकर कुछ उत्तर नहीं देता)

हरदेई० प्रोहित तुम वाहिर जाउ चुन्नी भय्या तूभी वाहरजा और इन सब को लेजा यहां छोटी भाभी वडी भाभी सब आवेंगी।

चुन्नी० प्रोहित तुम वाहिर घूमि आओ हम दुवारी में बैठे हैं—इनमें से निकल कर कोई जान न पावै (लड़के सुनकर भागते हैं लड़कियां और लुगाई उनको घेरती जाती हैं—और दही हल्दी उनके कपड़ों पै डालती हैं कुछ लड़के रोते हैं)

रमला० हरदेयी चलियो यह मेरे भय्या को सारो भाग्यो जाय है—याते तो हमारे ललाहीअच्छे हैं—देखो बोलें बोलनाहैं आवै—छिनरियां समधिन ने सोवत में जने हैं लला तिहारी मय्या अच्छैं हैं—अब ही लरिका बारे होंत हैं के नाहैं—यहां लै न आये हम सब देखलेते

दुलहा० हमारी माने सब बुलाई हो—हमारे चाचा से कह दीनी है कि दो एक मिल जाय तो लेते आइयो।

सुन्दरि० रमला तू तो बतावती सोवत में जने हैं—देखि

लड़िका ने कैसो न्याव देदीनों-ल्ला कछु और मँगावें क्या और खाउगे कोई इनसे पूछे कोड़ियोरी-पानी डालोगी तो तुमही जानोगी यह आंखि से पट्टी क्यों बाँधि रक्खी है।

दुलहा॰ आंखें पिरान आई हैं कोई हमें भिजाय मैरादीजियो।

नंदो॰ चलौ भीतर चलो तिहारी छोटी सरहज बुलाय रही हैं।

दुलहा॰ हम नाहिं जात-फिर आवेंगे हमारे जूता किसने उठाय लीने।

गोविन्दी॰ जूता और कोन उठावैगी-अपनी सारी हरिको से पूछौ-पांच महुर मगाय दोगे तब पनही पाओगे अप अपने नेगके लिये सब झगरें हैं-चलो भीतर चलौ-पनही चुराई को नेग मँगाय देउ और जुता लैलेउ (भीतर घसीटती है-दुलहा छुड़ा कर भागता है और दौड़ झपट में पट्टी आंख की खुल जाती है-और कूआ कानी आंख दीखने लगती है दुलहा रोकर आंख छिपाता है] (रेवती की मासे) मोंसी यहां तौ आ तुम तो सब कहतीं कि लड़िका की

आंखें दूखें हैं यह कैसो आंख दूखिवो—एक आंखतो जड में ही नहीं है।

जसवं० गोविंदी कहा कही तेने दुलहा कानों है—अरी गोविन्दी सांच कहि—वहना ऐसी हँसी हमें अच्छी नाहैलगै।

गोविंदी० तू हँसी लियें फिरै है—लली तुमनु कूआ में डाल दीनी—हजारनु रुपया लगायौ—काऊ पै लडिका न देख्यौ गयौ।

जसवं० अरी—हूं का ऐसी जानती कि मोसे यह दगा होगी मरियो पूत या नाऊ प्रोहित को—मेरी सोनेसी बेटी पत्थर से मार दीनी—अरे गजब के टूंक—मेरे घरको घर सब खूसो हैगयौ और छोरी की किसमत जुदी फूट गयी नास जाय या सामन्ता को-नास जाय या प्रोहित को—इनकी बेटी रांड हैजांय—मेरे ये मैं पेट फारि कैं मरजांउगी अपनी रेवती को कूआ में लेगिरूंगी—मैं विदा हिरगिज २ न करूंगी—मैंने जबही कही ही कि देख भारिकैं सगाई करियो।

गोमती० कोई लाख क्यों न कहो—नाऊ ब्राह्मण के विश्वास पै मारे गये—भला जो वर देखें न भावें—सो वर व्याहन आवे हमारें तो जीजी इतनी बात पै ऐसे हीतरे मरते जो ये नाऊ ब्राह्मण याद करते येबातें

देखेते तो वेही अच्छे रहते हैं जो आप देख आवैं हैं।

रामकुमरि॰ रानी बडी जाति में तो यह दस्तूर हैनहीं कि कोई आप लडिका देख आवै हां नीच जाति में लडिकी को बाप अथ्वा आप जाय कर देख आवै है—बडे घरोंमें तो नाई नेगी सब काम करें हैं परि ऐसो परलो कहीं नांहि पडै।

जसोदा॰ अब अपनौ करम सम्हारो—छूरीको संयोग है रोओ चाहे झींकौं होनी ही सो तौ हेगई—नाई ब्राह्मण कों चाहैं निकारो तौ कछु नाहैं—और न निकारो तौ कछु नाहैं—अब कोई और सगाई व्याहि थोडे ही करने हैं—अब तुम सगुन साथ रोओ वांसोती हनुमान्ति भगवान करैं—महमान जैसे तैसे अनर रहैं—बाहिर किसी लडिका ने जाय कही है सो लालाजी बडो चिल्ल पुकार कर रहे हैं—झिलनी परसे उठि वैठे—सामन्ता नांऊ पेडसे बँधवाय दीनों है—पिरोहित कें छोटेलाला ने वडे लट्ठ लगाये हैं—वरात में जुदो विखरा परिगयो कैसी हँसी खुशी में व्याह है रह्यो हो—सो भंगा पडिगयो—(अथ लालाजी चिल्लाते हुए भीतर आवें हैं बहू तुम भीतर जाउ)

रतन॰ या पाजी नउआ केको आज मारके छोडूंगा—कहीं

है नत्था भंगी बुलाओ या बह्मना के और नउआ के हाथ पांव बांध के नीव सें टांगदे—हद यही बात है न—हमारे सौ दो सौ रुपया और उठिजांयगे—और रेवती की मा कहां है—हम छोरी विदा न करेंगे—इन नेगी वेईमानों ने हमारी दो कौडीकी बात कर दीनी और हमारी सोनेसी लड़की कूआ में डाल दीनी जो इन नाई नेगिनु के भरोसे पै रहैं वे पागल और उनके बाप दादे पागल—अरे दो पैसा की चीज ठोंक बजाय कें लेत हैं—वेवकूफी हम बडी जाति के हिन्दुओं की—बेटा बेटी के ब्याह वेईमान नाई नेगियों के भरोसे पर।अरे हमसें तोभंगी चमार ही अच्छे हैं—अपनी आंखों से तो देखलेते हैं—अब कहो क्या करें—नहीं विदा करैं हैं तो रांधे भात है कोन सवाद—सब तरह कठिन है रेवती की मा अब कहो क्या करें (भीतर जाता है और नाई प्रोहित को गाली देता जाता है

तृतीय अंक समाप्तः।

---

४ चतुर्थ अंक प्रारंभ।

स्थान काशीपुर रतनलाल की बैठक।

हरीराम हलवाई आदि तकाजे वालों का प्रवेश।

हरीराम० (रतनलाल से) चाचा बरात तो विदा होगई अब अपना कोठार सम्हार लेउ और हिसाब करके हमें दाम देदेउ ।

रतन० कोठार में से तैंनें कुछ चुराय थोडोही लीनो है आज से चौथे दिन आना हिसाब करदेंगे-तब तक महिमान बिदा करलें ।

हरी० महिमान बिदा होत रहेंगे — मेरो हिसाब हेजाय मैं अपनो काम देखूं ।

रतन० काम देखो — काम के लिये मनाई किसने कीहै परसों हिसाब करके रुपये ले जाना ।

हरी० परसौं तक तो उधार वारे मेरी जान खायजांयगे दुकान पर बैठन तक न देंगे ।

रतन० तुमारी मजूरी चाहिये या कुछ और — मजूरी अपनी लेउ ।

हरी० मजूरी कैसें — मेरे हाथ से तो बहुतेरी चीजें उधार आई हैं — दही सब हम लाये-यह दहीवाला मोजूद है मसाला निवट गया था — आपको कामके मारें होश नाहो — तब मेंनें आप मंगाय लीनो हो — खांडमें कमी पडी वह मँगाई-अचार और मुरव्वा वाले सें मैंने कहि दीनीही कि दाम आजायँगे — सिवाय याके कुछ दूधके

दाम हैं—घी के दाम हैं और हां—पापड जो पहिले आये हे—वह भी तो मैंही लाया था ।

रतन॰ अच्छा भाई आज तो हम अपनी ही फिकर में लग रहे हैं और किसी दिन आना देखी जायगी ।

हरी॰ हिसाब पीछे कर लेना—सो दोसै कुछ तो मुझे देदो में भला तगादे वालों से क्या कहूंगा ।

गनेश हलवाई॰ बीस मन खांड और पंद्रह मन बूरा तो हमारा आया है—और आपके नौ रुपे पहुंचे हैं

रतन॰ हम हिसाब देखलें तब कहैंगे—तुम कल या परसों आजाना ।

गनेश॰ कुछ रुपे मिलजाते तो काम चलजाता खैर कल सही ।

इलाही कौंजड़ा॰ लालाजी तरकारी के दाम चाहियें छः मन आलू और ५ मन रतालू पहिलें आये हे—और कुछ कलआये हैं

रतन॰ तरकारी के रुपे तो हमने जभी भेजादिये थे—कहां गया नंदराम ब्राह्मण—ऐसी गडवड़ कर डाली है कि जिसका नाम नहीं—अच्छा इलाही मियां साम को आना ।

गोकुल दहीवाला॰ दही के दाम आपने अभी नहीं भेजे मैं कल भी होगया था

रतन॰ छे दस रुपे लेजाउ बाकी इतवार को भेज देंगे
परशादी बजाज॰ बिदा के दिन १६० थान हमारे यहां
से आये हे अभी दाम नहीं पहुंचे।
रतन॰ भाई साहब अब के सोमवार को आना मुनीम
बीमार होगये हैं सब हिसाब उनके पास है।
हरसुख॰ गाडीवान॰ लालाजी हमारी गाड़िनु तम्बू ढोये हैं
५५ रुपया किराये के चाहियें २५) हम पाय चुके
हैं।
रतन॰ कल महमान बिदा करके तुमारो हिसाब करेंगे।
हर॰ लालाजी हमारे पास तौ खाने को नहीं है बैल जदे
भूखे खड़े हैं।
रतन॰ अच्छा ये पांच रुपे खाने पीने के लिये लेजाउ।
अलेखां॰ लालाजी यह रुस्तमजी के यहां का बिल है पांच
दस्त मोमबत्ती के आये थे बारह दरजन बोतल आप
ने वे मंगाई थीं कुल १४० रुपे चाहियें।
रतन॰ भाई अगले हफ्ते में आना सेठजी से हमारा सलाम
कहना।
परमा॰ लालाजी हम मजूर आदमी हमारी मजूरी मिलजाय।
रतन॰ ठहर कहीं भागे जाते हैं सांझ को आना महमानों को
खिलाय पिलाय लें देखो तौ कोई रसोई में कितनी

देर है नगर के और वडे गांव के महिमान विदा की जल्दी कर रहे हैं ।

गुलाव (नौंकर) रसोइ कहांसे होजाती नायन धीमरि कोई आई नहीं—ये कहें हैं हमें कुछ मिल्यो नहीं ।

रतन॰ जा तौ रूपा—नउआ और धीमरा जहां होयँ तहां से खींचला—कमीन सुसरे की जितनी खुशामद करौ उतना हीं मूंडपर चढे है—सव कुनबा ने महीना भरसे रोट मारे हैं—अब तक पूरी और सिन्नी ढोवत रहे हैं और काम करनेमें मय्या मरे है—(रूपा नाई धीमर को लाता है)

रूपा॰ ये आये साव ये यों कहें हैं कि हमारे हक में वडी कमी कर डाली—न पांत मिली न परोसा मिले ।

रतन॰ क्योंरे कमीनो—तुम्हे इतनो घमंड—चार आदमी जाचुके हैं—अभी तक सूरत नहीं दिखाई ।

नाई कहार॰ सूरत क्या दिखावें कुछ कहिवे की वात होय तौ कहें तीन महीना से सव कुनवा आपकी टहल टकोरी में हैं और खाक मिली नाहें—काम तौ आप के घर करें—पेट कहां लेजांय—सांच पूछौ तौ अबके या व्याह में जैसे दुखारी रहे हैं हमी जानते हैं

रतन॰ जाउ काम करौ पीछें देखी जायगी—तुम भला अपने आदमी होकर ऐसी बातें करने लगते हौ (नाई धीम्मर दोनों जाते हैं)

स्थान रतनलाल का आंगन।

रतनलाल और जसवंती का प्रवेश।

रतन॰ व्याह तो होगया—पर अब तगादगीर खांयें जाते हैं इनके लिये क्या करें।

जसवं॰ करौंगे क्या—देना है जिसका देदो।

रतन॰ कहां से देदें—देने को होता तौ अब तक दे नदेते तगादा क्यों सहते।

जसवं॰ कहीं उडितो गयौ नाहें—व्याहयें बहुत लगाये हांगे हजार लगाये होंगे—दो हजार लगाये होंगे—पचास सौ हजार तो लगाय नहीं दीने हैं।

रतन॰ हजार दो हजार ही लगे दीखे हैं बारह हजार तौ बरात के आने से पहले ही उठिचुके थे—जाने कहां कहां से करज लेकर काम निकाला है।

जसवं॰ निकारो होगो—हमें कहा सुनाओहो—हमारे ऊपर कुछ अहसान थोडौ ही है—हमें तो तुम बीस

पच्चीस जोडा कपडा मँगादो—दस पांच दिन में महिमानि सब जानेवाली हैं इनके लिये कपडा सिल कें तयार होजांय।

रतन० कपडा का नाम भी न लेना हम अपनें ही सोच के मारे सूखे जांय हैं इन्हें जोडा बांटने की सूझी है घर में कपडा होगा पहले आया था—उसमें से काम चला लेना।

जसवं० क्यों नकटई की टेव पडगई है—करने खर्च एक न होय—न करने दस होजांय—ये महिमानि भरे व्याह में रीती गई तो आगें हमें बोलने देंगी ? इन्हीं बातों पर मुझे रिस आवै है तब फिर सब यह कहने लगें हैं कि इनको स्वभाव बुरो है

रतन० जो कुछ होगी सो देखी जायगी तुम कलेश मत करो—हम अपनेईमारे मरें हैं—महिमानि गयीं कूआ में यह तो बनें नाहें कि ऐसी जरूरत में हजार पान सौ निकाल कर आगे धरें और लला जी जलाये हैं

जस० मेरे पास नगदी कहां से आयी—कभी कोडी दोनी होगी हम तो यह भी नहीं जाने है कि या घर में कितनों आवे है—और कितनों खर्च होय है—यह हजार

पान सौ का गहना है—गहने पर दांत होय तो तैसी कह दो।

रतन० हमें गहना किसी का नहीं चाहिये तुम विना गहना दिये पीछा छोड दो सोई वहुत है—हमारे घर मेंही सूत सलाह होती तो भले ही दिन न होते (यह कह कर वाहर जाता है)

स्थान काशीपुर रतनलाल की बैठक ॥

रतन० (अपने आप) क्या करें—कहांजांय तगादगीर पीछें पडरहे हें घरमें कुछ है नहीं वाहर मिलने की कोई सूरत नहीं—बिना सोचें जैसा हमनें किया वैसा फल पाया—लोगों की वातों में आकर घरकी जमा जथा ही सो खोवैठे चुटिया अलग विंधि गयी—अव क्या करें क्या न करें-अभी तकाजगीर आते होंगे वडी मुशकिल अटकी यह देखो कोई बुला रहा है।

नेपथ्य में

इतने दिनोंसे रोज फिर जाते हैं-रुपया मिले न जवाव मिलै—अवभी जानें घरमें है या नहीं—लाला हैं क्या।

रतन० कौन पुकारै है यहां चले आओ वैठकमें (गनपत ब्राह्मण भीतर आकर)

गनपति॰ संपतिराय सेठकी चिट्ठी है आप रुपे भेजदें लगत जेठकी आपने कही थी अब कातिक आगया इन्हों ने यह कह दिया है कि यातो पंद्रह दिनके भीतर रुपिया पहुंचा दो नहीं नालिश कर देंगे।

रतन॰ गनपति रायजी सेठजीसे यह हमारी हाथ जोडकर कहदेना कि हमें दो महीने और निवाहलें हम फिकर में लगरहे हैं–सबसे पहलें उनको रुपिया देंगे–व्याह के मारे हम अभी तक नहीं चेते–हम सब दे ले चुके हैं–पंद्रह बीस जगह के रुपे हमें अभी देने रहे हैं सो सब दिये देते हैं सेठजी अपने मन में घबरांय न हमें सबसे जादा उनकी फिकर है।

गनपति॰ आप कहें सो हम कहदेंय–परन्तु अब सेठजी मानेंगे नहीं उनसे किसी ने यह जाय कही है कि जो माल असबाब और जायदादही सो और कर्ज वाले लिये लेते हैं तुम कबके लिये बैठे हो–या लियें मुझे तीन चार दफै भेजचुके हैं।

रतन॰ महाराज! लोग हमारी बात बिगारने को फिरें हैं हमारे दुशमनों के बहकाने पर तो ख्याल न करें अभीतक हमने किसीको कौडी नहीं दी है उधार वाले हलवाई और पसारी–बजाज–और ऐसे ही और

दो चार दो तीन महीना से घेरें फिरते थें उनके दाम कुछ रहे हैं कुछ निवटाय दिये दो तीन चीजें हमारें निकम्मी पडी हीं सो वेचबाच दीनीं—गाडी वेल घोडी और एक पुरानों रथ—हां दो मकान और कुछ थोडी सी जायदाद व्याह से पहलें रहन कर दीनी है—रहन वालों का झगडा निवटाने के लियें अव वै करदीनी (नेपथ्य में) कोई अंदर है (रतनलाल चोंक कर) यह कौन पुकारता है भीतर चले आओ चपरासी सम्मन लेकर भीतर पहुंचता है ।

रतन॰ शेखजी कहां से आये—यह क्या लाये हो ।

चपरासी॰ दीवानी अदालत का सम्मन है—किशनलाल किरपाराम चंदौसी वाले ने तुमारे ऊपर खांड़की नालिश की है ८ दिसम्बर मुकर्रर है—दसखत कर दो और सम्मन लेलो ।

रतन॰ देखिये गनपतरायजी इस अंधेर को देखिये सवतो रुपये लेचुके हैं और उलटी नालिश करदीनी है—आज कल यह ईमानदारी रहगयी है—अच्छा मियां साहव आप जांय ।

चपरासी॰ अच्छा हम जाते हैं खुराक दिलादीजियै—और हमारा नाम कल्लनखां है वहां तलाश करलेना हम

जवाब दिही का बंदोवस्त करादेंगे—और कुछ खर्च करोगे तो तारीख हटवाय देंगे—(चार आने खुराक के लेकर चपरासी जाता है)।

गनपति॰ अबमेंभी जाऊंगा—आप चिट्ठी का जावब लिख दें जहां तक बनेंगी साध सूध करदुंगा—आगे मालिक जानें और आपजानें परि आप को याद है या साल राखी बँधाई नहीं मिली।

रतन॰ राखी बंधाई नहीं मिली अब लेजाउ—परन्तु सेठ जी को समझा देना कहीं नालिश न करदें।

गनपति॰ बहुत अच्छा—(कहता हुआ बाहर जाता है और रतनलाल सोचता हुआ घरमें प्रवेश करता है)

स्थान अलोकीलाल वकील की बैठक ॥

रतनलाल कागज हाथ में लिये बेठक के भीतरजाताहै.

अलोकीलाल॰ (रतनलाल की ओर देखकर) कहां से आये हो क्या काम है।

रतन॰ काम क्या है हमारे ऊपर तीन चार नालिश हो गयी हैं

अलोकी॰ कागज दिखलाओ जब मालूम पड़ै।

रतन॰ कागज भी आप देखलें और जवानी हाल भी सुनलें ।

अलोकी॰ अच्छा कागज लाओ पहले कागज देखलें (कागज पढ़कर) क्या महन्ताना दोगे मुकद्दमे तुमारे सव अच्छे हैं जीत जाउगे ।

रतन॰ तमस्सुक और रुक्कों की नालिश है लिखने से तो हमको इनकार है नहीं और न हमने कुछ दिया आप कहैं जवाव दिही करें नहीं चुप होकर वैठरहैं।

अलोकी॰ चुप होकर क्यों वैठरहो—रुक्के में तो यह जवाव दिही करदो कि नरुक्का लिखा नरुपे पाये—और तमस्सुक में कुछ तो रुपे पाये नहीं और जितने पाये थे वह वसूल दोदिये—मैं अभी वयान तहरीरी वनाये देता हूं शुकराना और ठहरालो ।

रतन॰ शुकराने की तो अटकी नरहैगी—परन्तु कहीं उलटा झगडा न लगजाय—यह डर है—रुक्का हमारे हाथ का लिखा हुआ है ।

अलोकी॰झगडाक्या लगजायगा—जो चार गवाह रुक्कालिख नेके उधर से होंगे—सोई चार इधर से यह कह आवेंगे

कि रुक्का नहीं लिखा—और हाल तौ हम इस नालिश को म्याद पर ही उडावेंगे—इन्दुल तलव की नजीर आयगई है—(अकालू राम अपने महुर्रिर की ओर देखकर) नई किताव जो नजीर की परसों आई है इस अलमारी में से निकाल लाओ—(नजीर की किताव कुछ पढ़कर) भला इस से आगे मुकद्मा कव चल सक्ता है—तुम विकालत नामा लिखाओ और महन्ताना निकालो—अकालू राम विकालतनामा लिखलो और शुकराने का रुक्का लिखालो—जव तक मैं वयान तहरीरी लिखकर तयार करलूं—(अकालूराम विकालत नामा लिखता है और रतनलाल रुपये निकालता है

रतन० लालाजी यह देखलेना कहीं ऐसा न हो कि खर्चका खर्च हो और नतीजा कुछ न निकले।

अलोकी० तुम कचहरी चलो देखो क्या होता है—ऐसे मुकद्मा तो वात की वात में हम उड़ा देते हैं तुम तीन रुपे ऊपर खर्च के लिये और देजाउ देखो कैसी जल्दी मुकद्दमा पेश होता है और कैसे तुमारे मुआफिक सव काम होते हैं—(रतनलाल रुपे निकाल कर देता है और कचहरी चलता हूं कह कर वाहर निकलता है)

अकालू॰ लाला साहब हक्क मुहर्ररी तौ देते जाउ और दो टिकट आठ २ आने की और चाहियें--और कुछ पेशी वाले के लियें चाहियै ।

रतन॰ टिकट हम चार तौ पहले देचुके हैं—और कितनी टिकट लोगे—हमारे पास जो कुछ था हम देचुके अव तौ फिर आकर देंगे—(वाहर जाता है)

अकालू॰ ग्यारह वजे तक कचहरी पहुंचना—और टिकट के लियें रुपये लेते आना—हम अभी कचहरी चलते हैं (वकील मुहर्रर उठते हैं वैठक वंद होती है)

स्थान रामधन का घर ॥

— —

रतनलाल अपने वहनोई रामधुन के घर जाता है

रतन॰ (अपने आप) इस व्याहने हम किसी लायक न रक्खे पास पैसा नहीं—करजदार मनाये से मानते नहीं—घर वार वेचने से भी पूरा नहीं पडसक्ता—लोगों के वढावे में आकर मालमता सब खोवैठे—दस पांच दिन में वैठने को ठौर तक न रहैगा—नाते दारोंके पास जाकर मांगने में लाज आती है क्या करें—कहां जांय अपनी वहनि सुखिया के यहां जादेखें—कुछ दिन के लिये

हजार पान सौ रुपये मिल जांय तव ठीक लगै) एक शहर के निकट पहुंचकर (रास्तागीर से) भाई नया नगर यही है—गोकुल दास का घर किधर है।

रस्तागीर॰ नया नगर तो यही है परन्तु गोकलदास के घर की तौ हमें खवर है नहीं आगे पूछ लेंना।

रतन॰ (आगे पूछता हुआ गोकुलदास के मकान पर पहुंचता है और एक लडके के हाथ घर अपने आने की खवर भेजताहै) भीतर कह देना कि काशीपुर वाले रतनलाल आये हैं (लडका भीतर खवर करताहै और सुखिया रतनलाल की वहानि अचलो टहलनी के वाहर भेजती है)

सुखिया॰ अचलो—जल्दी जा—भय्या आये हैं—उन्हें भीतर लेआ कमरा में ठहरायदे—और संगके आदमी और सवारी वाहरले चौक में ठहरें—और किसी आदिमी को भेजकर चंदन के चाचा को वुलवाय ले और तरकारी दो एक तौ हैं—कुछ वजार से और लेआ और भय्या जव ठहरजांय तव भीतर वुलायला [अचलो वाहर जाकर फिर आती है]

अचलो॰ रानी सव डेरा दुरुस्ता कराय आयी—तुमारे भय्याके संग एक आदमीहैं—सवारी तौ कुछ है नहीं।

सुखिया० मेरे भय्या और बिना सवारी आवें ? दूसरे नौहरे में सवारी भजदी होगी—तू जल्दी जाकर भीतर बुलायला [अचलो बाहर जाती है और रतनलाल को बुलाकर भीतर लाती है]

रतन० बहना राम राम सब अच्छी तरह—अबकें थक केसें गयी]

सुखिया० भय्या रामर घर सब अच्छी तरह हैं—लल्ला अच्छे हैं मैं दो महीना से मांदीहूं—आठ दिन तक तो जीने का भी भरोसा नहीं था—यहां दवा दारू अच्छी होजाय है—नहीं पता भी न लगे—भय्या अब कें बहुत दिनन में आये।

रतन० आये क्या—व्याह के पीछें इतने झगडे हमसे लग गये कि अभी तक जीको चैन नहीं हैं।

सुखिया० झगडे तौ सब चलेही जावेंगे पर रेवती का व्याह भय्या ऐसा हुआ कि चारोखूंट में नाम होगया।

रतन० नाम तौ होगया—परन्तु यह बड़ी कठिन आपडी कि करजदार चैन नहीं लेने देते—घर मकान सब नीलाम होने को हैं—माल असबाब सवारी सिकारी सब नीलाम होचुकीं—बड़े सोचमें हैं—क्या करें—अब

यह सहारा तक कर आये हैं कि चार छै महीने के लियें यहां से कुछ रुपे उधार मिल जांय तौ रहने की जगह तो पचपड़े–चिट्ठी भेजने को थे परन्तु लज्जा के मारे न भेजी–सोचलेर यह सोची कि आप जाकर सुखिया बहना से ... कहं।

सुखिया० भय्या बहुतेरा रुपिया है–... बाहर के लैजांय हैं सो तुमारे लियें नमिलेंगे? ... के लिये मरदों से कहना–फिर मैंने जानी।

रतन० बहना तेरे पास जुदा रुपया होय तो मरदों से कहलावै याते–नहीं कहनी तो पड़ेगी ही–या लियें तौ आयेही हैं–परन्तु नातेदारी के ठौर मांगने को मुंह नहीं पड़े है–और सोभी यह नातेदारी।

सुखिया० भय्या रुपिया तौ मेरे पास बहुत था–परन्तु गहना घनवा लिया–और कुछ है सो गोटा और कपड़ा लेना है दोदिन पहले भी आते तौ मन मुकता रुपिया देदेती–अब तौ तुम ब्यालू करलो सबेरे जो कुछ होगी सो देखी जायगी [रतनलाल भोजन करके बाहर जाता है]

रामधन ब्यालू करता है और सुखिया
पास बैठकर पंखा करती है

रामधन० आज तो तुम्हारे भय्या रतनलाल आये हैं ।

सुखिया० हां आये तो हैं--यह पूछी है कैसे आये हैं ।

रामधन० हम तो अभी पूछने नहीं पाये--बाहर से अभी आये थे सोई भीतर चले आये--तुमसे कुछ कही न होगी ।

सुखिया० आये तो होने के लिये हैं--मेरी बीमारी की सुनी थी और कुछ रुपे की जरूरत बताते थे ।

रामधन० यहतो हम पहलेही जानगये थे हमसे एक आदिमी कहता रहा था--कि ब्याह के मारें सब खेल बीतगया करजदार खींचेंर फिरते हैं--बीसियों--डिगरी होचुकी हैं--घर मकान था सो बिकगया ।

सुखिया० घर मकान तो नहीं बिका--यह बात तो किसी बैरीने उड़ादी होगी--परि हां इतनी तो मुझसे भी कहते थे कि करजदारों का बड़ा तगादा है हजार पानसौ भी रुपे यहां से मिलजांय तो काम चल निकले ।

रामधन० रुपे बहुत--तुम जितने कहो उतने देदें ।

सुखिया--देने को तो मैं नाहीं नाहें करूं परि कहीं रुपे न आये तो मेरे मूंड में माति मारियो -- मुझे भरोसा नहीं है कि रुपे लौटेंगे ।

रामधन॰ न लौटेंगे मारे जांयगे—और बहुतेरे लेकर मार बैठे—ये तो नातेदार हैं।

सुखिया॰ तुमपै हैं लुटाओ—मुझ से क्या पूछो हो—मुझ से मांगे है—मैंने तो बहाना बता दिया—भाई भतीजे लैने को सब आय जांयगे देने को कोई भी न आवेगा—आज लेजांयगे कल फिर आखडे होंगे तुम कब तलक दोगे —पहिले तो अपने घर का देखना है

रामधन॰ एक सोचलो वख्त निकल जायगा बात बनी रहैगी सदा एकसे दिन किसी के नहीं रहते।

सुखिया॰ नमानों कुछ थोडा बहुत देदो नहीं मैंतो जानूं फिरकी कहदो—मैं कहदूंगी कि मैंने बहुत कही पर रुपिया है नहीं आजायगा तब भेजदेंगे।

रामधन॰तुम जानों तुमारे भय्या जानें हमतो रुपये देने को तयार हैं-पीछे यह कहो कि लोभ करिगये(यह कहकर बाहर जाता है)

सुखिया॰ जाते तो हो—कहीं प्यार में आय के कुछ जुबान मत दैबैठियो।

स्थान रामधनका आंगन रतनलाल और सुखिया उसकी बहनिका प्रवेश ।

रतनलाल॰ सुखिया बहना अब हम जाते हैं—कल का नीलाम है उसका कुछ बंदोवस्त करना है ।

सुखिया॰ भय्या आज और ठहरजाउ—कल तो आयेही हो—ऐसी जल्दी क्यों जाते हो तुमने बाहर कुछ कही सुनी थी क्या जबाब दिया ।

रतन॰ कुछ जबाब मिला हो तो बताऊं—वखत परेकी बातही जो है—बहुत देर पीछे वह कही कि फिर आना—घर तो कल विकजायगा फिरआकर क्याकरेंगे।

सुखिया॰ मैंने बहुत कही—परि कुछ मरजी न पायी भय्या तुमने दो दिन पहले खबर न भेजी—मेरे हाथ बहुत रुपया था यहां किसीको खबर भी न करती और तुमारे पास भेजदेती—यहां के आदमी ऐसे रूखे हैं मुझे बडी रिस आवै है ।

रतन॰ हम आयके पछताने—भूल होगयी सो होगयी—अब हम जांयगे—छला के लियें कब आदमी भेजें ।

सुखिया॰ ये पचास रुपये जबतक लियें जाउ पीछें और

भेजदूंगी रुपये तो मैं अभी दिलादूं परि कलेश होगी-याते फिर देखीजायगी-हमारी भाभी से रामर कह दीजियो लल्ला अबकें होजाय-अच्छा तुम तौ हमें ऐसी भूलमें डालदेते हो व्याह से पीछें फिर अबतक नहीं बुलाये।

रतन० इन रुपयों से क्या होगा-मुझे इस वक्त नहीं चाहियें पीछें भेजदेना-अब तो जानेदो-आज राता रात पहुंचना है-(रुपये रखकर चलता है) और सुखिया रामर करकें घर भीतर को लौटती है।

स्थान अलोकीलाल वकील की बैठक।

रतन० (मनमें)आतो गये ही हैं यहांसे बिजनौर थोडीसी दूर है-चलो वकील से मुकद्दमों का हाल पूछते चलें फिर जाने कब आना हो-(वकील के घर पर पहुंचता है और सलाम करके बैठता है) लाला साहब हमारे मुकद्दमों में क्या हुआ।

अलोंकी लाल०(मनमें)हारा मुवक्किल जानें कहां से आमरा नये मुवक्किलों के आगे हारे मुवक्किल का आना बडी खराबी की बात है किसी तरह टल जाय तब

काम चले (प्रकट) थोडी देर वाद आना अभी हम काम कर रहे हैं आजकी पेशी का काम करलें तव तुम से वात चीत करेंगे।

रतन॰ अच्छा करलो—तव तक मैं वैठाहूं।

अकालू॰ थोडी देर वाद आना—अभी लाला साहव काम में हैं तुमारे मुकद्दमे में वडी२ वहस रहीं—कुछ वाकी महन्ताना रहा है वह देदो—दो टिकट के दाम चाहियें और आठआने हक्क मुहुर्रिरी में वाकी हैं और पेशी वाले का हक चाहिये उसका तकाजा है।

रतन॰ मुकद्दमे का हाल तौ पूछलें—तव देंगेलेंगे—जल्दी क्यों मचाते हो।

अलोकी॰ हां भाई जोकुछ वाकी है सोतौ देदेना चाहियै मुकद्दमा तुम्हारा फैसिल होगया—नकलका खर्च देदो तव हाल मालूम होजायगा!

रतन॰ वतलाओ तौ सही क्या हुआ।

अलोकी॰ हुआ क्या—गवाह तुमारे ऐसे खराव सौसौ दफै समझा दिये कि तुम यह कहना—लेकिन हाकिम के सामने कुछ का कुछ गाने लगे—तुमने रसीद दीनी उस पर टिकटही नदारद—हाकिमने नामंजूर करदी हमें कानून की दफैका कुछ ख्याल न हुआ—नहीं टिकट लगाकर पेशकरते—मुकद्दमा लडाने को हो

जाते हो सबूत कुछ लाते नहीं—कह कहो कि तकदीर तुम्हारी अच्छी है—नहीं ऐसे मुकद्दमों में दुहरा तिहरा खर्चा पड़जाता है—हाकिम ने जब हमारी तकरीर सुनी—तब रहम खाकर मयखर्चे के तुमारे ऊपर डिगरी करदी लेकिन फौजदारी के झगड़े से तुम्हें बचा दिया-यह हमाराही काम है-नहीं गवाहों के बि-गड़ जानेपर हाकिम फौरन फौजदारीसुपर्द कर देता है अब तुम नकल लेलो—कहोगे अपील करादेंगे ।

रतन० अच्छा यह नकल का खर्च लेलो—आज से आठ दिन पीछे—आवेंगे नकल लेरखना-(बाहर जाता है) ।

स्थान काशीपुर रतनलाल की बैठक ।

रतनलाल बैठा सोचरहा है—

रतनलाल० (मनमें) क्या करें इस ब्याह ने तो हमारा खेल बखेल कर डाला—घर बाग नीलाम होगया—माल अस बाब था सोसब गया—खाने तक को मुहताज होगये नातेरिश्ता वाले थे सो सब परचाय छिपे—कैसा बना हुआ बानक बिगड़ा है कि जिसकी याद करके कले जा टूंकर हुआ जाता है—न जाने किस निठुर निर्बुद्धि ने यह ब्याह की रीति इस देश में निकाली है—अपने दुर्भाग्य को क्या करें तब हमें भी नसूझी—इन

बातों के सोचने से अब क्या फायदा — कोई आते हुए दीख पड़ते हैं — चलो इनसे बात चीतकर कें मन वहलावेंगे — (व्रजनन्दन नाम रतनलाल के एक मित्र प्रवेश करते हैं) व्रजनन्दन जी कहां२ रहे अबकें वहुत दिन पीछें मिले ।

व्रजनन्दन॰ मथुरा बृन्दावन के दर्शनों को गये थे — परसों लौटकर आये हैं ।

रतन॰ राम गोपाल हमारे समधी से तो मुलाकात नहीं हुई ।

व्रजनं॰ ठहरे तो हम उनके पडौस में ही थे परन्तु मेले तमाशों में लगे रहे उनके पास जानें नहीं पाये वैसें सव अच्छी तरह हैं ।

रतन॰ हमने यह सुनीथी कि उनपर दो चार नालिश हो गई हैं इस व्याह ने हम और हमारे समधी दोनों तंग कर डाले बीच वाले चैन से रहे खाय पांत दूर भये — खरावी हम दोनों की आई — दो दिनकी वाहर में सर्वस्व खोवैठे।

व्रजनं॰ अजी — रामगोपाल आपके समधी का वडा पतला हालहै उनके पास पहनने तक को कपड़ा नहीं रहा सव माल असवाव मकान जायदाद नीलाम होगई

एक डिगरी में कैद भी होगये थे — छः महीना पीछे अब छूटकर आये हैं सच पूछो तो हम इसी सबब से नहीं गये — कि नातेदारी की बात्त है अपने मन में सकुचांयगे।

रतन॰ क्या उन्हों ने हमसे भी जियादह फिजूल खर्ची की? हो तो हमारा भी वही हाल गया — जितना धन व्याह में लगाया उससे आधा भी अगर बेटी को देदेते तो सदा सुख से रहती अब इसके लिये भी कुछ ठिकाना नहीं रहा।

भजन॰ हमने वहां जाकर सुनी — आपके समधी ने तो बडा रुपया व्याह में लगाया — बिरादरी और गैर बिरादरी की दावत बडी धूमधाम से की — और जिले के सब हाकिम बुलाये — एकर अंगरेज के खानेमें तीसर चालीसर रुपये लगे — अब हिन्दुस्तानी रईसों में यह नयी चाल चलगई है कि अंगरेजों की दावत बिना किये अपनी प्रतिष्ठा की हानि समझते हैं — एक तो व्याह काज के मुँह वैसैं ही बहुत बढ़ गये हैं — यह अंगरेजी दावत रहे सहे रुपये को सोख जाती है — अब आपही के समधी का हजारों रुपया

इसमें लग गया—(उठकर और वाहर झांक कर) ये दो चपरासी आपको पूछते हैं।

रतन॰ कहां के चपरासी हैं—पूछिये तो सही क्यों आये हैं

ब्रजन॰ आप के नाम चिट्ठी वतला ते हैं।

रतन॰ यहां बुलाकर पूछ देखो कैसी चिट्ठी है (इतने में चपरासी वारंट गिरफ्तारी हाथ में लिये भीतर आते हैं) कहां से आये हो—यह चिट्ठी कैसी है।

चपरासी॰ यह चिट्ठी नहीं है गिरफतारी का वारंटहै तीन डिगरियोंमें गिरफतारी है — या पांचहजार तीनसौ बासठ रुपे दो आने देदो नहीं हम गिरफ्तार करकें ले जांयगे—चलिये वाहर (हाथ पकड कर वाहर लिये जाते हैं)।

रतन॰ ठहरो मियां ठहरो—अवकहीं भागेथोडे ही जाते हैं (मनमें) यह प्रतिष्ठा भंग होने को बाकी थी सो आज होगई—माल असवाव घरबार सव पहले ही जाचुका था आज रही सही इज्जत भी गई—भला व्याह किया—अव क्या करूं कैसें वचूं रेवती की मापर जादेखूं—अगर वह अपना गहना देदे तो गिर वी रखकर इज्जत वचालूं—(प्रकट) भाई मुझै भीतर

हो आने दो – घरमें देखूं रुपिया है या नहीं नमिले रुपया तो तुम मुझै संग ले चलना ।

चपरासी॰ हम गिरफ़्तार कर चुके अव हम नहीं छोड़ सक्ते अगर आप भीतर ही भीतर गायव होगये तो हमारी खरावी आजावेगी आप पोलीमें से खडे होकर जो मगाना हो मँगालें हम दरवाजे पर खडे हैं.।

रतन॰ अच्छा भाई तुम कहोगे सो करूंगा व्रजनंदन जी किसी लडके को भीतर भेजकर खवर करादो रेवती की मा पोली में से एक वात सुनजाय (व्रज नंदन एक लडके को भीतर भेजते हैं जसवंती पोली में आती है)

जसवंती॰ क्या काम है–रोटी करने से उठिआई हूं–भीतर क्यों न चले आओ जो वाहर से संदेसे भेज़ा करो हो जल्दी न्हाय धोय डालो–रोटी होचुकी–तुमारे लियें कवतक चौकायें घिरे वैठे रहैं–हमपे गरमी में नहीं वुटाजाय ।

रतन॰ कैसा न्हाना और रोटी–यहां हम अपनी ही आफत के मारे मरें हैं–चपरासी पकडें खडे हैं तुमें रोटी और व्यालू की सूझै है अव तुम खाओ पीओ हमने तो खानी थी सो खालीनी–जेलखाने से वचकर आवेंगे–तो देखी जायगी ।

जसवं० चपरासी क्यों पकडने आये हैं—कुछ मालूम तो पडै ।

रतन० मालूम क्या पडै इस व्याह ने हमारा तो पटपर कर दिया मुंह दिखाने लायक न रहे—तीन चार करजदारों ने डिगरी जारी करादी—रुपिया उन का पटा नहीं अब गिरफतारी निकली है—गिरफ्तार तो बैठक में ही कर लिया था—दस रुपे देकर वडी कठिनता से यहां तक आया हूं ।

जसवं० करजदारों का रुपिया दे क्यों न दिया मुझै यही वडा सोचहै—तुमने इतनो करज कहांसे कर लीनो-हमारे लियें तो व्याह में कपडा तक अच्छे न वने न जाने किस वातमें कर्ज करिलीनो ।

रतन० घर वैठै जो तुम कहो सो ठीक--हमारा भगवान जाने है कि जितना हम इस व्याह से तंग हुए हैं जव जेलखाने जाने तक की नौवत पहुंची तो अब वाकी क्या रहा ।

जसवं० जिस तरह वने अबके दे लेकर इन चपरासियों को टाल दो—या कहीं से रुपे लेकर दे दो ।

रतन० अब भला थे टाले टल सके हैं--और न रुपे हमें कोई दियें देय--मकान हम पर नहीं जायदाद हम पर

नहीं--अब तो कुछ घर से ही बंदोबस्त होय तब काम चले।

जसवं० घर में हमें तो नगदी दीखे नाहे तुम्हें दीखे तुम निकाल लाओ घरमें कौन से दिन धरोहरि रक्खी ही जो आज मिल जायगी।

रतन० हम अपने ही मारे मरै हैं दलाह ने देर कर क्यों प्राण निकालें लेती हो--तुमपर कुछ होय देउ न होय घर बैठौ--हमारी प्रारब्ध को जो भोग है सो हम भोगैंगे--तुमारा या और किसी का इसमें क्या दोष है।

जसवं० में भली तरह जानूं हूं तुमारा इस गहने पर दांत है.जब है तब हेरि फेरि कें गहने ही की बात आय जाय है।

रतन० अभी तक तो हमने गहने का नाम भी नहीं लिया है--और लैंतो कुछ अचरज की बात नहीं हैं--गहना सुसरा ऐसी आफत में ही काम न आवैगा तौ फिर कब काम आवैगा।

जसवं० गहने से तो मैं हाथ न लगानें दूंगी चाहें भलो मानो चाहैं बुरो मानों।

रतन० गहना हमसे भी प्यारा ठहरा तुम गहने को सम्हाल कर रक्खो हमारी प्रारब्ध में जो दुःख सुख लिखा

है सो हम भोगेंगे–तुमारी बलाय से !

जसवं॰ तुम याकान सुनो चाहें वाकान सुनो गहने की तो एक कील भी न मिलेगी-मुझे यहां किसी ने बनवाय तो दीया ही नहीं है जो मेरे ऊपर अहसान करो मैंतो मायके से जितना लायी थी–उसमें से भी आधा रहगया है।

रतन॰ आधा रहने को किसी ने तुमारा यहां छीन लिया है? और बनवायही दिया होगा–यह गहना सुसरा अब न काम आवैगा तब क्या हमारे मरे पर काम आवैगा–रेवती की मा हमने यह नहीं जानी थी कि तुम गहने पर इतनी छाती दोगी जब तुमने कहा तबही बनवाया–परन्तु अन्त में यह गहना हमारे कुछ भी काम न आया।

जसवं॰ काम तुमारे क्या आवै तुमारे तो यह मनमें है कि टूम छल्ला जो कुछ है सब खसोट कर एक लँग होंय सो बननी बनों और बिगरनी बिगरौ–जहर खायकर मर जाउंगी परि एक कील तक भी न दूंगी–मेरे जाने कोई मरो–चाहें जीओ।

रतन॰ यह तो हम पहले ही जाने हैं–तुमें किसी के मरने जीने सें क्या काम–यह हमारी मूर्खता ही कि यह भी बनवाय वहभी बन वाय।

जसवं॰ तुम कितनी ही वातें वनाओ—मैं तो गहने के नाम एक टूमभी नदूंगी—मैं अपना वखत कैसें काटूंगी—मेरे जान कल जेलखाने जाउ सो आज चले जाउ।

चपरासी॰ (वाहरसे) चलोजी तुमने वडी देर लगाई पंद्रह कोस जाना है कव पहुंचेंगे—रुपया तो लाचुके अव वाहर आओ नहीं हम भीतर घुसकर पकड़ लावेंगे और यह एक आदमी चिट्ठी लियें खडा है—तुमें बुलाता है।

रतन॰ कहां की चिट्ठी है—किसी के हाथ भीतर भेज दो में अभी आता हूं तुमारे लिये खाना तयार कराया है।

चपरासी॰ हमने छोड़ा तुमारा खाना—चिट्ठी तो तुम यहलो—लडका लाता है और महरवानी करकें जल्दी वाहर आओ।

रतन॰ (चिट्ठी लेकर पढता है—और पछाड खाकर गिरता है हा विधाता तेने यह क्या किया—और हम गरीबोंको मारकर तुझे क्या मिलगया—इस नित्त की दांता किलर ने हमें यह दिन आज दिखाया।

जसवं॰ (घवराकर) मुझे तो वताओ क्या हुआ कहीं

में हमारा रास्ता खोटा किया—अब तुम सीधी तरह बाहर आजाउ नहीं हम भीतर जाकर खींच लावेंगे।

रतन० अरे भाई आते हैं—कहीं भाग न जांयगे—सुख दुःख सब किसी को होता है—तुम देखते नहीं हो हमारें क्या सिला टूट पडी है जिस ब्याह के करजे की डिगरी में तुम हमें पकडे लिये जाते हो वह लडका चेचक की बीमारी में जाता रहा अरे भाई हमारी जिंदिगी खराब हो गयी—इससे तो हम मर जाते तो अच्छा होता।

चपरासी० तीन बरस के बच्चों का व्याह करने को तयार होजाते हैं—चेचक तक निकल ने नहीं देते और यह भी नहीं देखते कि यह बचैगा कि मरैगा—इस में बडी अपनी शेखी समझते हैं कि हमने तीन बरस के लड़के लडकी का व्याह कर दिया—इन हिन्दुओं की बेवकूफी को देखो फिर सिर पकड कर रोते हैं—चलो लाला अब जेलखाने में रोया करना।

रतन० (रेवती की मा से) अरे क्यों मूंड मारे है—अकेली रोरकर बावली होजायगी यहां कोई राखने वाला भी पैदा न होगा जब तक जीवेंगे तब तक रोवेंगे

यह रोना आज थोडा ही निबटा जाता है—अब हमें तो चपरासी घसीटें लिये जाते हैं—लडके वालों को जैसे बनें पालना जीवत रहेंगे फिर आ मिलेंगे नहीं गये तो हैं ही—गहना फहना गिरवी रखने से रुपिया मिल जाता तो, इज्जत बचजाती—दुखी सुखी जैसे बनती अपना जन्म पूरा कर लेते—परन्तु न सही कर्म की रेख कब मिटाये से मिटती है।

जसवं॰ अब जली को मत जलाओ भाडमें गया तुमारा गहना गांठा—मुझै तो कुछ सूझै नहीं है—मेरे जान कोई कहीं जाय।

रतन॰ (मनमें) हे ईश्वर! तेनें क्या विपत्ति लगादी—घर कुनवा छूटा इज्जत गई—सदां के लियें हृदय में साल ज़ुदा होगया विधाता ने न दीन के रक्खे न दुनियां के—(प्रकट) तो लोमैं अब जाता हूं (चपरासी लपक कर बाहर खींचता है—और घसीट कर आगें लियें जाता है—रतन लाल आखें डब डबायें अपने घर की ओर देखता हुआ चपरासियों के बीच में खिचड़ता हुआ जाता है—और जवनिका गिरती है।

इति॰

गहने के लियें तो झटपन नहीं पीट रहे हो—रोओ चाहें वासो—यों तो मिला नहीं जाता है।

रतन० अरे दुःखिनी कैसा गहना ! अरे हमारा जन्म ही विगड़ गया हम किसी कामही के न रहे गहना क्या अब चूल्हे में दूंगा।

जसवं० कुछ कहो भी—मुझे तो वताओ यह कहां की चिट्ठी है

रतन० कहां की वताऊं—हे परमेश्वर। इससे तो हमें लेलेता तो अच्छा होता—अरे हमारी छाती पर यह शिला तेंने रखदी विधाता। तुझे क्या सूझी—यह मथुरा की चिट्ठी है इसे सुनकर क्या करोगी—प्रलय होगई।

जसवं० हैं मथुरा की चिट्ठी है? सो क्या हुआ—तुम मुझे वताना तुमें मेरी सोगंद—क्या हुआ रेवती के स्वसुर तो अच्छे हैं।

रतन० रेवती के स्वसुर अच्छे क्या हैं जन्म उनका भी विगड़गया न हम किसी कामके रहे न वह रहे।

जसवं० क्या हुआ मुझे वताओ तो सही।

रतन० तुम आप सुनलोगी मुझसे कही नहीं जाती—मेरा हृदय भर२ आता है—और कलेजा टूक२ हुआ जाता है हा यह व्याह क्या हमने ऐसे को किया?

आजतक ब्याह के दुःख भोग रहे हैं चपरासी प[illegible]
खड़े हैं—घर मकान जुदा खोबैठे हैं—और ति[illegible]
भी विधाता ने यह घोर दुःख हमको दिया कि कहते
हुए छाती फटती है ।

जसवं॰ तुम याता मुझे बतादो नहीं में पत्थर से सिर
फोड़ लूंगी में जानती हूं रेवती के—

रतन॰ जानों क्या न जानों—बादल फटगये—यह मथुरा
की चिट्ठी है हमारें रेवती को जो लड़का ब्याहा
था उसकें माता निकली थी—परसों के दिन
जाता रहा अभी—छटी सालमें पडा था—आदमी
चिट्ठी लाया है

जसवं॰ हा मेरी रेवती—हा दुखिया रेवती के ये भाग
हा धरती फट जाय और हम समाय जांय (व्याकुल
होकर धरती पर पछाड खाती है और थोडी देरमें
उठकर ऊंचे स्वर से रोती है)

रतन॰ अब जन्म भर रोया करो रोने से क्या होता है
विधाता ने जो दुख लिखे हैं सो भोगने पड़ेंगे—अब
रोने पीटने से क्या होगा ।

चपरासी॰ लाला क्या तुमने यह हावूलों का सा स्वांग
मचा दिया—रुपे पैसे तो कुछ लाते नहीं—मुफ्त

बाबू तोताराम वकील हाईकोर्ट की बनाई हुई पुस्तकें

(१) स्त्रीधर्म्मबोधिनी—शास्त्र के अनुसार जो स्त्रियों के धर्म्म हैं वे विस्तार सहित इस पुस्तक में वर्णित हैं स्त्रियों के लिये बहुत उपकारी है मूल्य ॥)

(२) विवाहविडम्बन नाटक—इस नाटक में वे सब कुरीतें दिखलाईगई हैं जो विवाहों में प्रचलित होगई हैं यह पुस्तक स्त्रियों के पढ़ने के योग्य है मूल्य १)

(३) नीतिरत्नाकर— विदुरप्रजागर भाषाटीका मूल्य ॥=)

(४) नीतिसार—नीति की बहुतसी संस्कृत पुस्तकों के चुने हुए उत्तम श्लोक भाषाटीका सहित मूल्य ॥।)

(५) ब्रजविनोद—इस पुस्तक में समस्त ब्रजमण्डल का विस्तार से वर्णन है और बनयात्रा में जो बन उपवन सरोवरआदि दर्शनीय हैं उनसब का पूरा२ वृत्तान्त लिखागया है मूल्य॥)

(६) रामरामायण—अर्थात् श्रीवाल्मीकिरामायण का दोहा चौपाई और छन्दों में अनुवाद॥ बालकाण्ड मूल्य ॥)
अयोध्याकाण्ड १) आरण्यकाण्ड छपरहा है

इन पुस्तकों के सिवाय और बहुतसी पुस्तकें संस्कृत, हिन्दी फारसी, अंगरेजी की हमारी दूकान पर मिलती हैं—जिस किसी को मगानी हों हम से या मैनेजर "भारतबन्धु" प्रेस से मगालें॥

पता श्यामलाल ऐंड ब्रादर्स सौदागरान अलीगढ़॥